

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182486

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6
P 18 G

Accession No. H 3131

Author पांडेय, राजकिशोर.

Title ग़वासी. 1955.

This book should be returned on or before the date
last marked below.

गवासी

सैफुल मुल्क व बदीउल जमाल

सम्पादक :

राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीकी

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

प्रकाशक :

विमला वाघे एम्. ए.

मन्त्री दक्खिनी प्रकाशन समिति
बशीरबाग रोड, हैदराबाद (दक्षिण.)

Checked 1965

Checked 1969

प्रथम संस्करण १००० जनवरी १९५५

मूल्य ५-०-० रुपए

मुद्रक : हिन्दी प्रेस

हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, नामपल्ली रोड, हैदराबाद (दक्षिण)

विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदवियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्टूबर १९५३ को हुई। समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

- | | |
|---|-------|
| (१) डाक्टर बी. रामकृष्णराव | |
| (मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष | |
| (२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस. | |
| (शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष | |
| (३) डा० एस. एम. कादरी जोर एम ए. पी. एच. डी. | |
| (मन्त्री इदारे अदवियाते उर्दू) उपाध्यक्ष | |
| (४) श्रीमती विमल वाघे एम-ए. मन्त्री | |
| (५) श्री श्रीगम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा) | |
| (लेक्चरर गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) | सदस्य |
| (६) श्री गोपालराव अपसिगीकर | |
| (लेक्चरर लॉ कॉलेज, हैदराबाद) | ,, |
| (७) श्री वशीधर जी विद्यालङ्कार | |
| (अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ,, |
| (८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए. | |
| (लेक्चरर निजाम कॉलेज, हैदराबाद) | ,, |
| (९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघे बी-ए. एल-एल. बी. | |
| (एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) | ,, |
| (१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी | ,, |
| (११) प्रोफेसर अब्दुल कादर सरवरी एम-ए. एल-एल. बी. | |
| (अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ,, |
| (१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीकी एम-ए. एल-एल. बी. | |
| (प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ,, |
| (१३) प्रोफेसर हुसेन अली ख़ाँ | |
| (भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) | ,, |
| (१४) श्री हमीदुद्दीन शाहद एम-ए. | |
| (लेक्चरर चादरघाट कॉलेज) | ,, |
| (१५) फजलुर्रहमान एम ए. | |
| (भूतपूर्व शिक्षा सचालक, हैदराबाद) | ,, |

इस समिति ने निश्चय किया है :—

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपीं उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है। हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त कराने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में ३००० रु० दिए हैं और इदारे अदबियाते उर्दू ने ७५० रु०। श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठक का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं। प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुभाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

विमला वाघे, मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४१ २०११
१४-११-५४

दो शब्द

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास में हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नहीं कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं—सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमों और दूसरी बहुत सी बातों में दोनों अभिन्न हैं—इन दोनों भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह जरूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनों का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी को वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली में जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान् सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद में दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफिया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इंदारे अदवियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयों में दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग-बहादुर के सरक्षण में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद में प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि “दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति” नाम से हैदराबाद में एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों में उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वोत्तम पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है।

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इंदारे अदबियाते ईर्द का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों से हुआ है। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि में प्रकाशित नहीं हुए हैं उन्हें इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनों भाषाओं की शब्दावली में भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की हैं, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तके अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य सिद्ध होगी, वहाँ उन से विशेषज्ञों और साहित्य प्रेमियों का मनोरंजन भी होगा।

मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११

१४-११-१५४

}

डाक्टर बी० रामकृष्णराव

अध्यक्ष

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

भूमिका

कुतुबशाही वंश :

सन् १५१८ में सुल्तान कुली ने गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की नींव डाली। सुल्तान कुली फ़ारस में हमदान का निवासी था और बहमनी बादशाहों के समय में भारतवर्ष आया था। सुल्तान मुहम्मदशाह चतुर्थ ने इसे अपना अंग-रक्षक नियुक्त किया। यह अपनी प्रतिभा और योग्यता के कारण उन्नति करता गया और कुछ दिनों में तेलंगाना प्रान्त का गवर्नर नियुक्त हुआ। यह सुल्तान मुहम्मदशाह का बड़ा विश्वासपात्र सरदार था। बहुत से प्रान्तीय गवर्नरों के स्वतन्त्र हो जाने पर भी इसने बहमनी साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद नहीं किया किन्तु सन् १५१८ में बादशाह के व्यवहारों से तंग आकर स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और इस प्रकार गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की स्थापना हुई।

क़रीब १६६ वर्षों तक इस वंश के निम्नांकित सात बादशाहों ने गोलकुण्डा में शासन किया :—

- १ सुल्तान कुली (सन् १५१८ से १५४३ तक)
- २ जमशेद कुली कुतुबशाह (१५४३ से १५५० तक)
- ३ इब्राहीम कुली कुतुबशाह (१५५० से १५८० तक)
- ४ मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८० से १६१२ तक)
- ५ मुहम्मद कुतुबशाह (१६१२ से १६२५ तक)
- ६ अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२५ से १६७२ तक)
- ७ अबुल हसन तानाशाह (१६७२ से १६८७ तक)

बीजापुर पर विजय प्राप्त करने के बाद सन् १६८७ में औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया और आठ मास क़िले को घेरे पड़ा रहा। अन्त में तानाशाह बन्दी बना कर दौलताबाद भेज दिया गया और गोलकुण्डा साम्राज्य का अन्त हुआ।

बादशाहों का साहित्य-प्रेम :

गोलकुण्डा के बादशाहों के शासन काल में कला एवं साहित्य-विशेषतः दक्खिनी साहित्य की बड़ी उन्नति हुई। बहमनी बादशाहों की भाँति गोलकुण्डा के अधिकांश बादशाहों के शासन काल में दक्खिनी राज्य-भाषा के पद पर आसीन रही। कुतुबशाही वंश के शासकों में बहुत से बादशाह स्वयं बहुत अच्छे कवि थे एवं उन्होंने बहुत से कवियों एवं लेखकों को अपने राज्य में आश्रय दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस वंश के शासन काल के क़रीब पौने दो सौ वर्षों में साहित्य की बड़ी उन्नति हुई।

इस वंश का संस्थापक सुल्तान कुली यद्यपि फ़ारस का निवासी था और उसकी मातृभाषा फ़ारसी थी किन्तु भारतवर्ष में अधिक दिनों से रहने एवं बहमनी बादशाहों के समय में गवर्नर रहने के कारण उसे दक्खिनी का अच्छा ज्ञान था। फ़ारिश्ता ने लिखा है कि इसने गोलकुण्डा में 'ऐशखाना' नाम का एक विशेष भवन बनवाया था; जिसमें कवि एकत्रित होकर अपनी कविताएँ सुनाते थे। बादशाह स्वयं उन मुशायरों में उपस्थित होता था।

इस वंश का चौथा बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह दक्खिनी, तेलुगु और फ़ारसी का अच्छा विद्वान् एवं कवि था। उसकी रचनाओं का एक संग्रह कुलियात नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक १८०० पृष्ठों की एक भारी-भरकम पुस्तक है और कई दृष्टियों से इसका दक्खिनी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुलियात की अधिकांश रचनाएँ मौलिक हैं और उनमें नवीनता है। उसमें हिन्दी शब्दों का प्रयोग अधिक है और जिन फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है; उन्हें भी हिन्दी के सॉचे में ढाल कर। उसमें भारतीय रीति-रिवाजों; यहाँ के शूर-वीरों और ऋतुओं आदि का सुन्दर वर्णन है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह की रचनाओं से पता चलता है कि उसके समय में ही उसकी रचनाएँ पर्याप्त लोकप्रिय हो चुकी थीं। उसके शेरों को राजमहलों और मजलिसों में गाया जाता था। बहुत से शायर इसके तर्ज़ पर शेर लिखते और इसकी शायरी की प्रशंसा में गज़लें लिखते।

मुहम्मद कुली ने अपने चारों तरफ़ इस तरह का वातावरण पैदा कर दिया था कि न चाहने पर भी उसे शायरी करनी पड़ती। उसने अपने एक शेर में लिखा है कि :—

“कुतुबशाह रोज़ ऐसे ही शेर कहता है जैसे नदी में लहरें उठती हैं। किन्तु न तो नदी की गति में कोई अन्तर पड़ता है और न लहरों का वेग ही कम होता है।”

यही कारण है कि मुहम्मद कुली की कविता में मादगी; स्वाभाविकता और प्रवाह है।

इसने अपने समय की कविता को एक नई दिशा की ओर मोड़ा। उस समय तक अधिकांश कविताएँ धार्मिक विषयों पर लिखी जाती थीं। उसने अपनी कविता के लिए नये-नये विषयों को चुना। उसने हिन्दू मुसलमानों के रीति-रिवाजों; त्योहारों एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बड़ी सुन्दरता के साथ किया है।

इस वंश का पाँचवाँ बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुतुबशाह भी फ़ारसी और दक्खिनी का अच्छा कवि था। उसका एक दीवान फ़ारसी का और दूसरा दक्खिनी का उपलब्ध है। इन दीवानों में फ़ारसी और दक्खिनी काव्य के विविध रूप दिखलाई पड़ते हैं। ये; फ़ारसी की कविताएँ 'जिलुल्ला' और दक्खिनी की कविताएँ 'कुतुबशाह' उपनाम से करते थे।

गोलकुण्डा के कुतुबशाही शासकों के आश्रय में रहने वाले कवियों में—
वजही; गवासी; इब्न निशाती; गुलामअली; तानाशाह; तबई और सेवक मुख्य हैं।

गवासी का जीवन-वृत्त :

गवासी की रचनाओं को देखने में पता चलता है कि वह अपने समय का बहुत बड़ा कवि था किन्तु तत्कालीन इतिहासों और बाद के लिखे गए तज़किंग से उसके जीवन-वृत्त पर बहुत कम प्रकाश पड़ता है। स्थान स्थान पर उसकी रचनाओं में प्राप्त अन्तःसाक्ष्यों से ज्ञात होता है कि वह गोलकुण्डा का निवासी था और सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह का समकालीन था।

गवासी ने अपनी रचनाओं में कहीं 'गवासी' और कहीं 'गवास' उपनाम का प्रयोग किया है। इसका असल नाम भी यही था या कुछ दूसरा था और इसके माता-पिता कौन थे; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। गवासी की जन्मतिथि ज्ञात नहीं है किन्तु यह अनुमान किया जाता है कि यह इब्राहीम कुली कुतुबशाह के शासन काल में पैदा हुआ और इसने सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह के शासन काल में कविता करना आरंभ किया। इसने अपनी मसनवी 'सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल' को उम्र समय पूरा किया जब अब्दुल्ला कुतुबशाह गद्दी पर बैठ चुका था।

गवासी ने इस मसनवी का रचना काल पुस्तक के अन्त में दिया है :—

“बरस एक हज़ार पञ्चतीस में; किया खत्म यू नज्म दिनतीस में”

इसमें प्रतीत होता है कि गवासी ने अपनी इस मसनवी को १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में पूरा किया।

“यूरोप में दक्खिनी मखतूतात” के लेखक श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने लिखा है कि यूरोप में प्राप्त कुछ हस्त लिखित प्रतियों में पाठ-भेद मिलता है। उन प्रतियों में उपर्युक्त शेर नीचे लिखे रूप में प्राप्त हैं :—

१ बरस एक हज़ार और पञ्चवीस में; किया खत्म यू नज्म दिनतीस में

२ बरस एक हज़ार और सत्तावीस में; किया खत्म यू नज्म दिनतीस में

इन शेरों के अनुसार “सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल” का रचना काल १०२५ हिजरी (सन् १६१७) और १०२७ हिजरी (सन् १६१८) निकलता है। किन्तु पुस्तक के प्रारंभ में जो बादशाह की तारीफ़ की गई है उससे एवं पुस्तक के अन्त के कुछ शेरों से पता चलता है कि पुस्तक अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में लिखी गई। अब्दुल्ला कुतुबशाह १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में गद्दी पर बैठ चुका था। अस्तु; इसी वर्ष पुस्तक लिखी गई; यह मानना उचित होगा।

उपर्युक्त मसनवी के लिखने के समय तक गवासी तत्कालीन कवियों में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुका था किन्तु दरबार में उसे कोई सम्मान प्राप्त न था । वह किसी मामूली नौकरी से अपनी जीविका निर्वाह करता था और अपने दिन गरीबी में बिता रहा था । गवासी ने उपर्युक्त मसनवी के अन्त में इसे स्वीकार किया है और उसने बादशाह का ध्यान अपनी गरीबी की ओर आकृष्ट किया है :—

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहराँ पोते दिल साफ़ कर
देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेवान पाऊँ
कि यू शाह मेरा खरीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबये गुलज़ार होय
कि ग़मगीँ हूँ मैं सख़्त संसार ते
धरू दग़दगे लाक़ इस आज़ार ते
परेशानगी में ज़र्ग़ाँ ख़्याल मैं
ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मैं

किन्तु गरीबी में भी उसे अपनी काव्य शक्ति का गर्व था । वह हिन्दुस्तान के सभी शायरों में अपने को बड़ा समझता था :—

मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है
जिते हैं जो तूती हिन्दुस्तान के
भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के
शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे
लताफ़त मनैं मैं सुखन संज हूँ
घर न हार लक़ ग़ैब के गंज हूँ
जो मैं मन सँ तब आजमाई कलूँ
तो सर्याँ उपर पेशवाई कलूँ
हुनर की गवी का सो मैं बाग़ हूँ
बचन के उतम गंज का नाग़ हूँ
सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि रस्तम हूँ मैं आज के दौर में

गवासी ने अपनी इस मसनवी को सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह को समर्पित

किया है और वह लिखता है कि इसके लिए उसे अन्तः प्रेरणा मिली है :—

बहर हाल यू नज्म इलहाम सँ
किया मैं नवल शाह के नाम सँ

ऐसा प्रतीत होता है कि इस मसनवी के लिखने के बाद गवासी को दरबार में पर्याप्त सम्मान प्राप्त होने लगा और अन्त में बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे 'मलिकुल्लुशुअरा' की उपाधि से विभूषित किया। यह उपाधि उसे कब और क्यों प्राप्त हुई; इसके सम्बन्ध में तत्कालीन इतिहासकार मौन हैं। किन्तु उस समय दरबार में 'वजही' जैसे प्रतिभा सम्पन्न लेखक और कवि के रहते 'मलिकुल्लुशुअरा' की उपाधि गवासी का पाना; इस बात को सूचित करता है कि वह बादशाह का विशेष कृपा-पात्र बन चुका था।

तत्कालीन इतिहासों से पता चलता है कि १०४५ हिजरी (सन् १६३६) में बीजापुर के बादशाह मुहम्मद आदिलशाह ने मलिक खुशनूद नाम के अपने दरबारी शायर को गोलकुण्डा दरबार में दूत बना कर भेजा। मलिक खुशनूद जब बीजापुर वापिस जाने लगा तो अब्दुल्ला कुतुबशाह ने अपने दरबार के प्रसिद्ध शायर गवासी को मलिक खुशनूद के साथ बीजापुर अपने दूत की हैसियत से भेजा। बीजापुर में गवासी की बड़ी आव-भगत हुई। इससे प्रतीत होता है कि गोलकुण्डा में गवासी की हैसियत केवल शायर की ही न थी बल्कि राज-काज में बादशाह उसके विचारों को महत्व देता था।

अपनी पहली मसनवी के ठीक चौदह वर्षों बाद १०४६ हिजरी (सन् १६४०) में उसने अपनी दूसरी मसनवी "तूतीनामा" की रचना की। उस समय तक उसे पर्याप्त सम्मान प्राप्त हो चुका था और उसे धन-दौलत किसी बात की कमी न थी। किन्तु 'तूतीनामा' के कुछ अशों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से दुःखी था और वह अपना ध्यान खुदा की ओर लगाना चाहता था :—

गवासी अगर तू है सचला गवास
लगा इश्क अपने खुदा सात खास
चलेगा किता नफस के कये मने
किता होयगा नाँव के पये मने

×

×

×

हो बेदार एक बार इस ख्वाब ते
निकल भार इस ग़म के गरदाब ते

जो है रहनुमा पीर हैदर तेरा
 हम अल्लाह वहे हम पैगम्बर तेरा
 ज कुच ख्वास्त तेरा है सब उस पू छोड़
 दुनिया के इलाक़े ते ले दिल कू तोड़
 न कर एतमाद इस गुज़र गाह का
 यू फौदा है दरवेश होर शाह का
 सँभाल अपे ऐ यार इस दाम ते
 नको गाफ़िल अछु आपने काम ते

ऐसा प्रतीत होता है कि 'तृतीनामा' की रचना के बाद ग़वासी अपना अधिक समय 'इबादत' में लगाने लगा और दरबार में कम आने जाने लगा। संभवतः इसी से इतना बड़ा शायर होने पर भी तत्कालीन इतिहासों और फलतः बाद के तज़किरों में इसके जीवन पर बहुत कम प्रकाश डाला गया। ग़वासी की मृत्यु किस सन् में हुई; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है किन्तु इतना निश्चित है कि सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में ही इसकी मृत्यु हो गई।

काव्य और शैली :

ग़वासी की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं:—

१ सैफुल मुलूक व बर्दाउल ज़माल

२ तृतीनामा

दकन में उर्दू के लेखक ने ग़वासी की कुछ ग़ज़लों और मर्सियों की भी चर्चा की है और उनके उदाहरण अपनी पुस्तक में दिए हैं।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकें फ़ारसी-मसनवियों की प्रणाली पर लिखी गई हैं और उनमें प्रेम कथाओं का वर्णन है। फ़ारसी मसनवियों के अनुसार इन पुस्तकों में पहले खुदा की प्रार्थना; पैग़ंबर की तारीफ़; खलीफ़ा की प्रशंसा और तत्कालीन बादशाह के संबंध में लिखा गया है और उसके बाद कहानी का प्रारंभ किया गया है। पहली पुस्तक की कहानी पर आगे के पृष्ठों में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। तृतीनामा की कहानी निम्नांकित है:—

भारतवर्ष में एक बड़ा धनी सौदागर रहता था। उसके जहाज़ सातों समुद्रों में जाते थे और उसके पास ऐसी कीमती चीज़ें थीं; जो बड़े-बड़े बादशाहों के पास भी न थीं। किन्तु वह सौदागर किसी पुत्र के न होने से बड़ा दुःखी था बहुत दिनों के बाद उसे एक लड़का पैदा हुआ। लड़का बड़ा ही सुन्दर और प्रतिभाशाली था। सौदागर ने उसकी शादी एक सुन्दरी युवती के साथ कर दी। लड़का धीरे-धीरे अपने बाप का सारा कारोबार देखने लगा। उसने एक मैना और एक तोता खरीदा;

जो आदमियों की बोली बोलते थे और जिन्हें कुरान का भी ज्ञान था। तोता भविष्य-दर्शी था। उसने समय-समय पर ऐसी सलाहें दीं कि उनसे उसे बड़ा लाभ हुआ। एक बार वह विदेश में व्यापार के लिए गया। उसकी युवा पत्नी घर में अकेली थी। एक दिन जब वह अपनी छत पर बैठी थी; उसकी निगाह एक सुन्दर नवजवान से मिली जो नीचे रास्ते से जा रहा था। नवजवान ने एक बूढ़े से उस सौदागरिनी के पास प्रेम का सन्देश भेजा। सौदागरिनी भी उस पर आसक्त हो चुकी थी। उसने मैना से इस सम्बन्ध में पूछा किन्तु मैना के मना करने पर उसे मरवा डाला। दूसरे दिन उसने तोता से पूछा। तोता मैना की मृत्यु देव्य चुका था। उसने मना करने में खतरा देखा और कहा कि ये सब बातें रहस्य की हैं; किसी से कहनी नहीं चाहिए; नहीं तो तुम्हारा और हमारा हाल वही होगा; जो एक रानी का हुआ। इसके बाद तोते ने रानी की कहानी सुनाई और रात बीत गई। दूसरे दिन फिर सौदागरिनी तोते से गय लेने पहुँची। तोते ने कहा कि अपने गहनों को साथ न रखो अन्यथा वह नवजवान धोका देकर तुम्हारे गहनों को ले सकता है, जैसा कि एक कहानी में हुआ है। इसके बाद उस तोते ने वह कहानी सुनाई और रात बीत गई। इस प्रकार तोता ३५ दिनों तक कहानियाँ सुनाता रहा और सौदागरिनी को डालता रहा। इसके बाद सौदागर आ गया और उसे तोते से सारी बातें मालूम हो गई। उसने अपनी व्यभिचारिणी स्त्री को मार डाला और सारी धन संपत्ति गरीबों को दान देकर स्वयं फक्कीर हो गया।

तूतीनामा के कथानक का आधार कुछ विज्ञान फ़ारसी के एक गद्य की पुस्तक को मानते हैं। वस्तुतः इस कथा का मूल आधार 'शुक्र-समन्ति' की कथा है; जो फ़ारसी साहित्य एवं अन्य भाषाओं के साहित्यों में भी बहुत पहले ही पहुँच चुकी थी।

शवासी ने अपनी पहली मसनवी की रचना सन् १६२६ में की और तूतीनामा उसके ठीक १४ वर्षों के बाद सन् १६४० में लिखा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों मसनवियों की कहानियों के चुनाव में भी शवासी की तत्कालीन मानसिक स्थिति का बहुत बड़ा हाथ है। पहली मसनवी की रचना के समय शवासी में सामारिक सुखों को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा थी। अस्तु; उसने ऐसा कथानक लिया जिसमें प्रेम की सफलता और उसका सौन्दर्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। तूतीनामा के अनेक उद्धरणों से स्पष्ट है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सामारिकता में ऊँच चुका था। अस्तु; उस समय वह एक ऐसी कहानी चुनता है जिसमें सामारिक प्रेम का खोखलापन और उसकी निःस्वार्ता प्रदर्शित की गई है।

शवासी की जो दो मसनवियाँ उपलब्ध हैं; उन दोनों की कहानियाँ मौलिक नहीं हैं किन्तु उन दोनों में शवासी की प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखलाते पड़ता है। यही कारण है कि शवासी की केवल दो रचनाएँ उपलब्ध होने पर भी उसका

स्थान दक्खिनी के कवियों में बहुत ऊँचा है । उसने अपनी प्रतिभापूर्ण वर्णन शक्ति; सुन्दर शब्दों के चुनाव; नई उपमाओं और अपनी अद्भुत सूझ-बूझ से इन कथानकों को नया रूप प्रदान कर दिया है । अपनी पहली मसनवी में ग़वासी स्वयं लिखता है :—

मेरा दिल खज़ीना जो मामूर है
 बचन के जवाहिर सों भरपूर है
 लगा रोलने ताई मैं जौहरों
 चिपाया तजल्यों में नौ अबरों
 क्या शेर ताज़ा बड़े छन्द सों
 हर एक बन्द बसलाइया बन्द सों
 जो लफ़्ज मिलाया रंगेली निछल
 पुरोया जवाहिर की छेली निछल
 झ्यालों के फौजों को दौड़ाइया
 हज़ारों नवे तशबिहों लाइया
 जो कुछ तशबिहों खूब माकूल हैं
 मेरे झ्याल के बन के वो फूल हैं

ग़वासी की प्रतिभा का पता इससे चलता है कि उसने पहली मसनवी को केवल तीस दिनों में पूरा किया । ग़वासी की दोनों मसनवियों में स्थान स्थान पर प्रकृति का बड़ा संश्लिष्ट चित्रण मिलता है । तूतीनामा में एक स्थान पर ग़वासी ने प्रातःकाल का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है । 'सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल' में स्थान स्थान पर समुद्रों; नगरों और बाग़ीचों का बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है । सिंहल द्वीप के बाग़ीचे का वर्णन देखिए :—

कहूँ वॉके चमनों कूँ मैं क्यों चमन
 कि था हर चमन साफ़ एक एक गगन
 भर अमरत सँ चमनों के म्याने तमाम
 जड़त के अथे हौज़ खाने तमाम
 बने-बन बरक लहलहाते अथे
 कल्यों पर कल्यों बार आते अथे
 पवन भोले खा फूल की डाल हल
 सो पड़ते अथे फूल हर भाड़ तल
 मगर आ अंबर के चितारे तमाम
 चमन में बिछाये थे तारे तमाम

अथे बूद शन्नम के भूँ पात में
रतन खास खूबों के ज्यू हात में

गवासी ने अपनी पहली मसनवी के प्रारंभ में सखुन की तारीफ़ में जो 'बचन' या शब्द शक्ति का वर्णन किया है; वह दक्खिनी साहित्य में ही नहीं अन्य साहित्यों में भी बेजोड़ है।

गवासी की भाषा तीन सौ वर्ष पुरानी बोलचाल की दक्खिनी है। उसमें निम्नांकित विशेषताएँ दिखलाई पड़ती हैं।

(१) उसमें फ़ारसी शब्दों की अपेक्षा हिन्दी शब्दों के प्रयोग की ओर अधिक झुकाव है। उसमें हिन्दी के बहुत से ऐसे शब्दों का भी व्यवहार हुआ है; जो संस्कृत से आये हैं और जिनका प्रयोग तत्सम रूप में होता है। उदाहरणार्थ नीचे लिखे शब्दों को लिया जा सकता है :—

अन्त, तल, भुजंग, पन्थ, पवन, निगाधार, अंवर, नाद, मान, ज्ञान; तुरंग, अमृत, निरजन, दुःख, गंभीर, आधार, नीर, आनन्द, हस्त, कामिनी, बल, बालक, निर्मल, मार्ग, अधर, गगन, निशि, ज्योति, चन्द्र, धीर, रोमावली, अन्धकार, द्वन्द, मोहिनी, ध्यान, मद।

इन तत्सम रूपों के अतिरिक्त गवासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है; जो हिन्दी में संस्कृत से आये हैं किन्तु उनका प्रयोग तद्भव रूप में होता है। जैसे :—

पन्त, तिर्जग (त्रिजग), दिपाना (दीप्त करना), विद (विरुद्ध), जग, सगल (सकल), औतार, वेंचन, मुजान, सन्दूर (समुद्र), निदा (नाद, शब्द), भान (भानु), खर्ग (खट्वा), सामी (स्वामी), काम, जगती, डीना बत्ती, बैन, रतन, फूल, पूत, दीस (दिवस), धरतरी, निछुल, सातग (सत्र)।

(२) गवासी की रचनाओं में बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है; जो मराठी, तेलुगु या कन्नड़ से दक्खिनी में आकर मिल गये हैं। इनमें बहुत से शब्द अपने पूर्व रूप में प्रयुक्त हुए हैं और कुछ शब्दों का रूप विकृत हो गया है। जैसे :—

पाड़ना (डालना या निकालना), भंडोली (बर्तन), लई (बहुत), मुंडी (सिर), कंडालना (नफ़रत करना), खंडी (कोड़ी), सटना (खतम होना), दुराही (शासन), सामी (स्वामी), भाड़ (वृद्ध), नेट (दोस्त) इत्यादि।

(३) वाक्या, नामा, क़िला आदि बहुत से फ़ारसी शब्दों को शुद्ध रूप में न लिख कर उसी रूप में लिखा गया है, जैसा इनका उच्चारण होता है।

(४) गवासी ने दक्खिनी के अन्य कवियों की भाँति बहुत से नये शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे :—

फूल का बार आना (फूल खिलना); मजलिस भराना (दरबार में जाना); दड़ी मारना (जल्दी से चला जाना); मुख जातरा करना (मुख देखना); अन्द गन्द मिटाना (नामो निशान मिटाना); नांव नंग होना (नेक नामी बदनामी होना) आदि बहुत से नये मुहावरे गवासी की रचनाओं में प्रयुक्त हुए हैं।

गवासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो या तो नये हैं या जिनका प्रयोग प्रचलित अर्थों से विभिन्न अर्थों में किया गया है। जैसे :—

बहा (भाव या क्रीमत अर्थ में)

“उनन का बहा कोई दे ना सके”

अपसता (अपने से अर्थ में)

“सदा राज करता अथा अपसता”

सूर (खुशी अर्थ में)

“सदा सूर मुझ कूँ तेरे सूर थे”

बदल (लिए अर्थ में)

“अंभू बहाता मोहिनी के बदल”

इसी प्रकार ‘खुश मान’ का प्रयोग ‘इज्जत’; ‘अभाल’ का प्रयोग ‘बादल’; ‘ताव’ का प्रयोग ‘क्रोध’; ‘बरास’ का प्रयोग ‘आशा पूर्ण होना’ आदि अर्थों में किया गया है।

(५) छन्दों में मात्रा की पूर्ति के लिए बहुत से शब्दों का रूप विकृत किया गया है। जैसे :—

(१) हती तेरे दरबार के फाड़ सब
छड़ीदार तुज दार के भाड़ सब

(२) कि ऐ बादशाह; भोगुनी बख्तवर
तूँ फरज़न्द के कारन अब राम न कर

(३) कहा मैं ‘इसी का’ दिवाना हूँ भोत
अगर चे अपन ठार दाना हूँ भोत

(४) एकाएक बड़े गुल सिती हाँक मार
निकल जंगिया आए एक धर ते भार

उपर्युक्त उद्धरणों में ‘पहाड़’ के स्थान पर ‘फाड़’; ‘बहुगुनी’ के स्थान पर

‘भोगुनी’; ‘बहुत’ के स्थान पर ‘भोत’; और ‘बाहर’ के स्थान पर ‘भार’ शब्द का प्रयोग हुआ है।

(६) ग़ावासी की भाषा में कहीं कहीं लिंग का भी व्यतिक्रम दिखलाई पड़ता है। बहुत से शब्द जिनका आज कल स्त्रीलिंग प्रयोग होता है; पुल्लिंग रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे :—

- (१) “मुनाजात ग़ावास का कर क़बूल”
- (२) “हतेज़ी तेरा लोह अंगुली कलम”
- (३) “तेरा याद दायम है चारा उसे”
- (४) “मेरा रूह परवाने के सारका”

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘मुनाजात’; ‘हतेज़ी’; ‘याद’; और ‘रूह’ शब्दों का प्रयोग पुल्लिंग हुआ है किन्तु आज कल इन शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग होता है।

कहानी का संक्षेप :

किसी समय मिस्र में आसिम नवल नाम का बादशाह रहता था। बादशाह को किसी बात की कमी न थी किन्तु वह एक सन्तान के न होने से बहुत दुःखी था। इस दुःख के कारण वह राज-काज से उदासीन रहने लगा। ज्योतिषी लोगों ने उसकी जन्म-पत्री देख कर कहा कि, यदि वह यवन देश के राजा की लड़की से शादी कर ले तो उसे उस रानी से पुत्र की उत्पत्ति होगी। यह बात सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने एक दूत को बहुमूल्य उपहारों के साथ ‘यवन’ के राजा के पास भेजा। ‘यवन’ के बादशाह ने आसिम नवल की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बड़ी धूम-धाम से विवाह सम्पन्न हुआ।

जैसी ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी; बादशाह को उसी वर्ष एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम सैफुल मुलूक रखा गया। सयोगवश उसी दिन मिस्र के वज़ीर को जिसका नाम सालेह था; उसे भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वज़ीर ने अपने पुत्र का नाम ‘साअद’ रखा।

सैफुल मुलूक और ‘साअद’ दोनों में बड़ी मित्रता थी। दोनों का पालन-पोषण साथ साथ हुआ और दोनों की शिक्षा-दीक्षा भी साथ साथ ही हुई। कुछ ही दिनों में दोनों बहुत सी विद्याओं में पारंगत हो गए।

एक दिन बादशाह आसिम नवल ने सैफुल मुलूक और साअद दोनों को बुलाया। बादशाह ने खजाने से एक सुनहला बक्स मंगाया और उसमें से एक ज़रदार कपड़ा और एक अंगूठी निकाल कर सैफुल मुलूक को दी। साथ ही एक सुन्दर घोड़ा भी दिया और कहा कि “ये चीज़ें मुझे हज़रत सुलेमान से प्राप्त हुई थीं। तुम्ही मेरे उत्तराधिकारी हो। अस्तु; इन चीज़ों को मैं तुम्हें देता हूँ।”

सैफुल मुलूक इन उपहारों को प्राप्त कर बड़ा प्रसन्न हुआ। रात को संयोगवश उसकी दृष्टि उस वस्त्र पर पड़ी हुई एक तस्वीर पर पड़ी; जो भेंट में उसे पिता से प्राप्त हुआ था। वह तस्वीर में यनी स्त्री के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुका था।

बादशाह को जब यह खबर मालूम हुई तो उसने साअद को बुलाया और तस्वीर वाले वस्त्र की प्राप्ति का पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसने कहा कि “एक दिन मैं दरबार में बैठा हुआ था कि बड़े जोरों की आँधी आई। कुछ ही देर में कुछ परियों ये चीजें लेकर मेरे सामने आईं। उन्होंने बतलाया कि इन वस्तुओं को हज़रत मुलेमान ने भेंट में भेजा है।”

बादशाह ने यह भी बतलाया कि वस्त्र पर यनी हुई तस्वीर बदीउल जमाल की है; जो ‘गुलिस्ताने-एरम’ के बादशाह की बेटी है, उसे प्राप्त करना बड़ा कठिन है।

सैफुल मुलूक की दशा दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। बादशाह ने बहुत से अनुभवी वैद्यों को बुला कर उसकी दवा करने को कहा। किन्तु उसकी अद्भुत बीमारी का निदान करना वैद्यों के लिए कठिन था। बादशाह ने बहुत से लोगों को गुलिस्ताने-एरम की खोज में भेजा; वे लोग एक साल तक इधर उधर भटकने के बाद वापिस आए किन्तु गुलिस्तान-एरम का कहीं पता न चला।

अन्त में सैफुल मुलूक बादशाह की आज्ञा लेकर स्वयं साअद एवं अन्य साथियों के साथ गुलिस्ताने-एरम की खोज में चल पड़ा।

बहुत से समुद्रों को पार करता हुआ सैफुल मुलूक और उसके साथियों का दल चीन पहुँचा। वहाँ के बादशाह ने सबका बड़ा स्वागत किया और गुलिस्ताने-एरम का पता लगाने का प्रयत्न किया। वहाँ एक एक सौ सत्तर वर्ष के बूढ़े ने बतलाया कि वह बहुत से देशों का भ्रमण कर चुका है किन्तु उसने इस नाम का शहर न देखा है न सुना है। उसने यह भी बतलाया कि, कुस्तुनुनियों बहुत बड़ा व्यापारिक नगर है; जहाँ संसार के विभिन्न देशों से लोग आते हैं। संभव है वहाँ गुलिस्ताने-एरम का पता चल जाए।

सैफुल मुलूक बूढ़े की इस बात को सुन कर चीन के बादशाह से बिदा लेकर कुस्तुनुनियों की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक बड़ा तूफान आया। सारी नौकाएँ डूब गईं। साअद एवं सैफुल मुलूक के अन्य साथी कुछ डूब गए और कुछ तख्तों पर बहते हुए दूर जा पड़े। राजकुमार अकेला एक तख्ते पर बहता हुआ हबिशियों के एक द्वीप में पहुँचा; हबिशियों ने पकड़ कर राजकुमार को अपने बादशाह के सामने उपस्थित किया। बादशाह ने सैफुल मुलूक को अपनी शाहज़ादी के पास भेजा कि वह उसे भून कर खा जाए किन्तु शाहज़ादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य पर मुग्ध थी। उसने प्रेम प्रकट किया किन्तु राजकुमार के वृणा प्रकट करने पर उसे बन्दीगृह में डाल दिया।

राजकुमार किसी प्रकार हथियों के बन्दीगृह से भाग निकला एवं कई द्वीपों में होता तथा अनेक प्रकार के कष्ट उठाता कैसरिया नाम के नगर में पहुँचा। इस नगर में बन्दरों का निवास था। वहाँ केवल एक ही मनुष्य था जो उनका बादशाह था। कैसरिया के राजा ने राजकुमार का बड़ा स्वागत किया। राजकुमार कई दिनों तक कैसरिया के बादशाह का आतिथ्य ग्रहण करता रहा किन्तु वहाँ भी गुलिस्तान-ए-रम का पता न पाकर बादशाह ने विदा लेकर आगे बढ़ा।

राजकुमार फिर एक द्वीप में पहुँचा। वहाँ हाथी के बराबर मकोड़े देख कर वह बड़ा भयभीत हुआ और एक वृक्ष पर जा चढ़ा। इतने में उसकी दृष्टि समुद्र किनारे खड़े शुतुर मुर्ग पर पड़ी। सैफुल मुलूक वृक्ष से उतग और शुतुर मुर्ग के साथ दूर तक निकल जाने की इच्छा में वह उसके पैरों को पकड़ कर लटक गया। शुतुर मुर्ग सैफुल मुलूक को लेकर उड़ा और अपने बच्चों के पास पहुँचा। शुतुर मुर्ग के बच्चे सैफुल मुलूक को खाना ही चाहते थे कि एक बड़ा अजगर उन्हें निगल गया। वह जान बचा कर भागा और पानी के एक स्रोत के किनारे पहुँचा। वहाँ उसे पड़ा हुआ एक सुन्दर अनार का फल मिला; जिसे खाकर उसने अपनी लुब्धा शान्त की।

इसके बाद सैफुल मुलूक इसफ़न्द नाम के द्वीप में पहुँचा। उस द्वीप में उसे एक बड़ा राजमहल दिखलाई दिया। वह महल में पहुँचा। सभी कमरे बेशकीमती कालीनो से सजे हुए थे। चारों ओर के बागीचों में सुन्दर फूल खिले हुए थे। किन्तु उस महल में किसी मनुष्य का पता न था। राजकुमार कई कमरों में घूमता हुआ महल के मध्य भाग में पहुँचा। उसने देखा कि कमरे के मध्य भाग में एक सुन्दर चौकी रखी हुई है और उस पर कोई स्त्री मुँह ढाँप कर सोई हुई है। राजकुमार और नज़दीक पहुँचा। उसने कई बार उसके पास बैठ कर जगने की प्रतीक्षा की किन्तु बेकार। राजकुमार डरा और वह लौटना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि चौकी पर पड़ी हुई पट्टी पर पड़ी। उसने पट्टी को पढ़ कर देखा तो उसे मालूम हुआ कि उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिखा हुआ है, जिससे सोई हुई स्त्री की नींद बाँधी गई है। राजकुमार ने पट्टी ज़मीन पर पटक कर तोड़ दी। सोई हुई स्त्री जाग उठी। उसके सौन्दर्य से कमरा प्रकाशित हो उठा। राजकुमार उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ।

किन्तु स्त्री बड़े आश्चर्य में थी। उसने राजकुमार से पूछा तुम कौन हो ? राजकुमार ने अपनी पूरी कहानी कह सुनाई। सैफुल मुलूक के पूछने पर उस कुमारी ने जो अपने सम्बन्ध में बतलाया उसका सारांश यह है :—

“मैं सिंहल द्वीप की राजकुमारी हूँ। मेरी आर दो बहिनें हैं। मेरी बहिनो में मेरी छोटी बहिन बहुत ही सुन्दर है। एक दिन हम तीनों बहिनें पिता-माता की आज्ञा लेकर बगीचे में घूमने गई और वहाँ हौज़ में स्नान करने लगीं। इतने में बड़े ज़ोरों का बवण्डर उठा। आसमान धूल से भर उठा। इतने में न जाने किधर से एक जानवर आ गया।

वह अपने पंखों से को तेज़ी से चलाता हुआ मुझे लेकर आसमान में उड़ गया और मुझे लाकर यहाँ रखा। उसने मुझे झुक कर सलाम किया और कहा कि वह परियों के बादशाह का छोटा भाई है। उसका बड़ा भाई दरियाये कुलजुम (लाल समुद्र के आस-पास का प्रदेश) का शासक है। उसने यह भी कहा कि वह राजकुमारी के सौन्दर्य पर आकृष्ट है; इसीलिए वह उसे उठा लाया है। मैं किसी प्रकार उसके प्रेम को स्वीकार न कर सकी। अस्तु; उसने उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिख कर मेरी नाँद बाँध दी थी। वह वर्ष में एक दो बार आ जाता है और मुझ से प्रेम की बातें करता है। मुझे यहाँ आये हुए बारह वर्ष बीत गये और मेरे जीवन के इतने वर्ष व्यर्थ में गए।”

राजकुमारी ने यह भी बतलाया कि वह गुलिस्ताने-एरम की राजकुमारी बदी-उल-जमाल को जानती है। वह उसकी सखी है। राजकुमार को वह उससे मिलाने का प्रयत्न करेगी।

राजकुमार बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने बतलाया कि उसके पास हज़रत सुलेमान की अँगूठी है। वह उसकी सहायता से दैत्य को मार सकेगा। दोनों शीघ्रता से उस दरिया की ओर चले जहाँ वह दैत्य रहता था। सैफुल मुलूक ने ज्यों ही हज़रत सुलेमान की अँगूठी दिखलाई; दरिया से एक सुन्दर सन्दूक निकल आया। दोनों सन्दूक को उठा कर बाहर लाये। उस सन्दूक के भीतर जानवर के रूप में वह दैत्य था। सैफुल मुलूक ने सन्दूक को तोड़-फोड़ कर जानवर का सर मरोड़ दिया। चारों ओर ज़ोर-ज़ोर का बवंडर उठा। खून की वर्षा होने लगी। आकाश से एक बड़ा शिर गिरा; जिससे पृथ्वी हिल गई। दैत्य अपनी जीवन-लीला समाप्त कर चुका था।

दैत्य की मृत्यु से प्रसन्न राजकुमार और राजकुमारी एक नाव पर सवार होकर सिहल द्वीप की ओर चल पड़े। एक द्वीप में पहुँचने पर दोनों की भेंट शिकार खेलने को आये हुए कुछ आदिमियों से हुई। वे आदिमी राजकुमारी के चचा की प्रजा थे। राजकुमारी का चचा ताजुल मुलूक, वासित नाम के नगर का राजा था।

सैफुल मुलूक, राजकुमारी और उन लोगों के साथ वासित नगर पहुँचा। ताजुल मुलूक अपनी खोई हुई भतीजी को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

राजकुमारी के आने का समाचार सिहल द्वीप भेजा गया। राजकुमारी के माता-पिता राजकुमारी को पाकर अव्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने सैफुल मुलूक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

सिहल द्वीप में सैफुल मुलूक ने कितने दिन आनन्द से बिताए। एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने जा रहा था। उसने रास्ते में एक दुबले पतले व्यक्ति को देखा। उसकी सूरत शकल साअद से मिलती थी। सैफुल मुलूक ने अपने साथ के आदिमियों से उस व्यक्ति को राजभवन में ले जाने का आदेश दिया। वह बड़ी जल्दी शिकार से लौट आया। उसने उस नौजवान को बुलाया और उसके

सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने लगा। नौजवान की बातों से सैफुल मुलूक को मालूम हुआ कि वह उसके मंत्री का लड़का—उसका परम-मित्र साअद है; जिससे वह समुद्र में नाव डूब जाने के कारण बिल्खुड़ गया था। दोनों मित्र एक दूसरे से गले मिले।

उन्हीं दिनों बदीउल जमाल सिंहल द्वीप आई। राजकुमारी से मिल कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। बदीउल जमाल ने राजकुमारी से पूछा दैत्य के हाथ से कैसे उसका उद्धार हुआ। राजकुमारी ने कहा - बातें बड़ी लम्बी और रहस्य की हैं; चलो बागीचे में चल कर बातें करेंगे।

राजकुमारी अपनी माँ और बदीउल जमाल के साथ उस बागीचे में आई; जहाँ सैफुल मुलूक नित्य घूमने जाया करता था। दोनों सखियों आपस में बातें कर रही थीं और सैफुल मुलूक थोड़ी दूर पर बैठा हुआ कुछ गा रहा था। बदीउल जमाल सैफुल मुलूक के स्वर को सुन कर मुग्ध थी। राजकुमारी ने बतलाया कि वही उसे दैत्य के हाथ से उद्धार करने वाला है। राजकुमारी, बदीउल जमाल के साथ सैफुल मुलूक के पास आई। सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल दोनों एक दूसरे के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुके थे।

बदीउल जमाल के लिए माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक था। उसने एक पत्र अपनी दादी के नाम लिखा; जो सीमीपटन में रहती थी। उसने वह पत्र सैफुल मुलूक को दिया और एक जिन्न के साथ उसे सीमीपटन भेजा। सैफुल मुलूक जिन्न की पीठ पर सवार होकर क्षण मात्र में सीमीपटन पहुँचा। सीमीपटन की सीमा पर आग की ऊँची लपटे उठ रही थीं। सैफुल मुलूक को सीमीपटन का सौन्दर्य अद्भुत लगा। सीमीपटन की भूमि ईश्वरीय ज्योति से जगमगा रही थी। ज़मीन पर कंकड़ और पत्थर के रूप में हीरे-मोती बिखरे हुए थे। नगर में एक से एक आलीशान महल बने हुए थे और उन पर जड़ाऊ कलश रखे हुए थे। महलों के चारों ओर सोने की ऊँची दीवारें थीं जिनके भीतर सुन्दर बाग़ थे। उन बगीचों में अमृत के समान मीठे जल से भरी हुई सुन्दर नहरें बह रही थीं।

एक महल में अखण्ड नीलम के तख्त पर बदीउल जमाल की दादी बैठी हुई थी। उसके चेहरे से शांति और पवित्रता की ज्योति प्रकाशित हो रही थी। सैफुल मुलूक ने उसे झुक कर सलाम किया और बदीउल जमाल का पत्र उसे दिया। दादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य और उसकी नम्रता से बड़ी प्रसन्न हुई और उसने विश्वास दिलाया कि वह बदीउल जमाल के साथ विवाह कराने में सैफुल मुलूक की मदद करेगी।

उसने तमाम देवों को एकत्र होने का आदेश दिया और देवों की एक बड़ी सेना एवं सैफुल मुलूक को साथ लेकर गुलिस्ताने-एरम में अपने पुत्र शहबाल से मिलने के लिए चली। गुलिस्ताने-एरम के पास आकर उसने शाहज़ादे को एक

बागीचे में बिठला दिया और स्वयं साथ के देवों के साथ नगर में गई ।

दरियाये कुलजुम का बादशाह अपने भाई के सैफुल मुलूक के द्वारा मारे जाने से बड़ा दुखी था । उसने अपनी सेना के सिपाहियों को आदेश दे रखा था कि उसके भाई को मारने वाला व्यक्ति जहाँ भी पाया जाय ज़िन्दा पकड़ कर उसके सामने उपस्थित किया जाय ।

सैफुल मुलूक उस बागीचे में घूम रहा था और खिले हुए रंगविरंगे फूलों को देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था । इतने में दरियाये कुलजुम के बादशाह के दूत उस बागीचे में पहुँचे । सैफुल मुलूक से बातों ही बातों में उन्हें ज्ञात हो गया कि उनके बादशाह के भाई को मारनेवाला व्यक्ति वही है । वे ज़बरदस्ती सैफुल मुलूक को पकड़ कर अपने बादशाह के पास ले गये और वहाँ वह बन्दी बना लिया गया ।

बदीउल जमाल गुलिस्ताने-एरम आ गई थी । वह सैफुल मुलूक के एका-एक ला पता हो जाने से बड़ी दुःखी थी । उसने अपनी दादी शहरबानू को उसकी लापरवाही पर बड़ा बुरा भला कहा और यह भी बतलाया कि सैफुल मुलूक के बिना उसका जीवित रहना बड़ा कठिन है । शहरबानू ने अपने पुत्र शहबाल से कहा—कि यह उसके लिए बड़े अपमान की बात है कि कोई उसके राज्य से किसी व्यक्ति को बिना उसके आदेश के पकड़ मँगवावे ।

शहबाल ने एक बड़ी सेना लेकर दरियाये कुलजुम पर आक्रमण की तैयारी की । दोनों बादशाहों की फौजों में बड़ी भयंकर लड़ाई हुई और अन्त में दरियाये कुलजुम का बादशाह पकड़ा गया । शहबाल ने उससे इस शर्त पर संधि की कि वह सैफुल मुलूक को बन्दी-गृह से मुक्त कर दे ।

इस प्रकार बदीउल जमाल और सैफुल मुलूक की शादी धूम-धाम से संपन्न हुई । सिहल द्वीप के बादशाह के प्रार्थना करने पर वहाँ की राजकुमारी का विवाह साम्रद के साथ हुआ । कुछ दिनों तक गुलिस्ताने-एरम में रहने के बाद सैफुल मुलूक और साम्रद दोनों राजकुमारियों और दहेज में प्राप्त अनगिनत अमूल्य पदार्थों एवं दास-दासियों के साथ अपने देश में पहुँचे ।

प्रेम गाथा की परंपरा :

उपर्युक्त कहानी को पढ़ने में स्पष्ट है कि प्रेम-गाथा की जो धारा हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों—कुतुबन, मझन और जायसी के द्वारा प्रवाहित हुई; उसका बहुत बड़ा प्रभाव दक्खिनी-साहित्य पर पड़ा । उत्तरी भारत के हिन्दी-साहित्य में यह धारा थोड़े ही समय के बाद लुप्त होती दिखाई पड़ती है किन्तु दक्खिनी में बहुत बाद तक अविच्छिन्न रूप से प्रभावित होती रही । हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों ने जिस प्रकार प्रसिद्ध प्रेम कथाओं को लेकर काव्य-रचना की उसी प्रकार दक्खिनी के बहुत से कवियों ने लोक-प्रसिद्ध कथाओं को अपनी कविता

का विषय बनाया। जायसी आदि की भाँति इन कवियों ने जो कथानक लिए; उनका सारांश इतना ही है कि कोई राजकुमार किसी राजकुमारी के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर या उसे चित्र में देख कर उस पर आसक्त होता है और उसे पाने का प्रयत्न करता है और बड़ी कठिनाइयों के बाद उस प्राप्ति करता है। जायसी आदि सन्तों ने अपनी रचनाएँ मत प्रचार की दृष्टि से की थीं। उनकी रचनाओं में परोक्ष सत्ता के प्रति कहीं कहीं संकेत इतना स्पष्ट है कि कथा की शृंखला टूटती हुई सी प्रतीत होती है। दक्खिनी के कवियों की रचनाओं में इस प्रकार का कोई संकेत नहीं है। प्रस्तु; उनमें स्वाभाविकता अधिक है।

कहानी की मौलिकता :

शवासी ने स्वयं इस बात की चर्चा नहीं की है कि उसे यह कहानी कहाँ से प्राप्त हुई। पुस्तक के प्रारंभ में कुछ अपने बारे में लिखते हुए शवासी ने लिखा है कि एक दिन वह प्रातःकाल के समय बाग में घूमने गया था। हरे भरे वृक्षों पर सुन्दर फूल खिले हुए थे। ठंडी हवा बह रही थी। उस प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर अचानक उसके मनमें आया कि उसे कोई ऐसा काम करना चाहिए; जिससे उसका नाम अमर हो जाए। अचानक उसे अन्तःकरण में यह प्रेरणा हुई :—

“कि सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल
यू दोनो हैं आलम मने बेमिसाल
उनन दुइ का दास्तों खोल तू
सो दफ्तर उनन इश्क का खोल तू
कि कई दास्तों जग में हो गए अहें
वले कोई ऐसा नहीं कए अहें”

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि शवासी ने इस बात को स्वीकार किया है कि सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की कहानी एक प्रसिद्ध कहानी है और कहानी का कथानक उसकी मूल कल्पना नहीं है।

वस्तुतः सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की प्रेम कहानी अलिफ लैला की एक प्रसिद्ध कहानी है। पंचतंत्र; हितोपदेश एवं कथासरित्सागर की कहानियों की भाँति अलिफ लैला की कहानियाँ विभिन्न देशों में लोक कथाओं के रूप में प्रचलित हैं। इन कथाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है या उन कथाओं के आधार पर कहानियाँ लिखी गई हैं। विलियम हार्ट ने अलिफ लैला के विभिन्न भाषाओं में अनुवादों की चर्चा करते हुए लिखा है कि शवासी ने अपनी इस मसनवी की कथा “सैफुल मुलूक” नाम की एक फ़ारसी गद्य की पुस्तक से लिया है। यह पुस्तक

इंडिया आफ्रिस और ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालयों में उपलब्ध है। इस पुस्तक के लेखक का पता नहीं है। पुस्तक के प्रारंभ में जो भूमिका दी गई है; उसका सारांश निम्नांकित है :—

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी को कहानियों के सुनने का बड़ा शौक था। जो कोई एक दिलचस्प कहानी पेश करता; वह इनाम पता। सुल्तान का वज़ीर इस प्रकार धन लुटाए जाने से बड़ा परेशान था; उसने स्वयं एक दिलचस्प कहानी उपस्थित करने का निश्चय किया।

वज़ीर एक वर्ष का अवकाश लेकर घूमने के लिए निकला और दमिश्क के बादशाह के दरबार में पहुँचा। वहाँ उसे पता चला कि बादशाह के पास एक कहानियों की पुस्तक है; जिसमें बहुत सी दिलचस्प कहानियाँ संग्रहीत हैं। उसने बड़ी कठिनाई से उस पुस्तक को प्राप्त किया और उन कहानियों को सुल्तान महमूद के सामने उपस्थित किया। उस पुस्तक में तीन कहानियाँ थीं :—(१) बोस्तान एरम; (२) सैफुल मुलूक और (३) शाहपाल बिनशाह रुख की कहानी।

उपर्युक्त कहानी का कोई ऐतिहासिक महत्व हो या न हो उससे इतना पता अवश्य चलता है कि जिस लेखक ने फ़ारसी गद्य में सैफुल मुलूक की कहानी लिखी; उसे भी यह कहानी किसी अन्य पुस्तक से प्राप्त हुई।

कुछ लेखकों ने संभवतः विलियम हार्ट के कथन के आधार पर इस बात को स्वीकार कर लिया है कि ग़वासी ने सचमुच अपनी इस मसनवी का कथानक फ़ारसी गद्य में लिखी उपर्युक्त पुस्तक से लिया। उन्होंने इस बात के लिए ग़वासी की काफी लानत-मलामत भी की है कि उसने अपनी रचना में न उस पुस्तक की चर्चा की है और न उसके लेखक के प्रति कोई कृतज्ञता व्यक्त की है; जिस पुस्तक से उसने अपनी मसनवी का कथानक लिया है।

वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि ग़वासी को इस कथानक का थोड़ा बहुत रूप लोक कथाओं के रूप में प्राप्त हुआ होगा और उसने पुनः अपनी प्रतिभा से उसे साहित्यिक रूप दिया होगा। सैफुल मुलूक के कथानक की जो फ़ारसी गद्य की प्रति उपलब्ध है; उसमें एवं ग़वासी की इस मसनवी के पात्रों के नाम एवं कथानक के रूप में भी स्थान स्थान पर बड़ा अन्तर है। अस्तु; केवल विलियम हार्ट के कथन के आधार पर ग़वासी की इस मसनवी को किसी दूसरी पुस्तक का अनुवाद-मात्र मान लेना ग़वासी और उसकी प्रतिभा के प्रति बड़ा अन्याय होगा।

उपलब्ध-प्रतियाँ :

१—सालारजंग म्यूजियम; हैदराबाद के पुस्तकालय में सैफुल मुलूक व बदीउल ज़माल की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं —

(क) पहली प्रति ८×६ इंच आकार की है। इसमें शेरों की संख्या १८२२ है।

देखने में प्रति पूर्ण मालूम होती है, किन्तु बीच-बीच में अन्य प्रतियों में प्राप्त कुछ शेर नहीं हैं। पुस्तक में सम्पादक और संपादन काल के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा है किन्तु अक्षरों की क्वावट और लिखने के ढंग से पता चलता है कि प्रति पुरानी है।

(ख) दूसरी प्रति काउन साइज़ की है। इसमें शेरों की संख्या १८७२ है। पुस्तक में संपादन-काल १०६७ हिजरी लिखा है। पुस्तक में सम्पादक का नाम नहीं है।

(ग) तीसरी प्रति डेमी साइज़ की है। इस प्रति में तीन पुस्तकें एक साथ सम्पादित की गई हैं। पहले मुकीमी की रचना चन्दन बदन महरयार; उसके बाद आजिज की रचना लैला-मजनून और अन्त में शवासी की सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल संपादित है। पुस्तक के अन्त के कुछ पृष्ठ नहीं हैं अस्तु; सैफुल मुलूक का अंश पूर्ण नहीं है। इस प्रति का संपादन करने वाला रहमतुल्ला नाम का कोई व्यक्ति था; जो दिल्ली का रहने वाला था किन्तु पुस्तक का संपादन उसने औरंगाबाद में रह कर किया। सम्पादन काल ११५७ हिजरी है।

२—निजाम कालेज हैदराबाद के गिरार्ड उर्दू प्रोफेसर श्री आगा हैदर हसन साहब के पुस्तकालय में भी सैफुल मुलूक की एक प्रति मौजूद है। इस प्रति में भी नुसरती के 'गुलशन-इश्क' और 'सैफुल मुलूक' दोनों का सम्पादन एक ही पुस्तक में किया गया है। इस प्रति का सम्पादक दक्खिनी का प्रसिद्ध कवि वज्दी है, जिसकी 'पंखीवाचा' नाम की रचना उपलब्ध है। इस प्रति में वज्दी के लिखे कुछ शेरों से पता चलता है कि उसने इस प्रति का संपादन इस्माइलखा नाम के किसी व्यक्ति के कहने पर ११३८ हिजरी में किया।

३—इदारे अदवियाते उर्दू; हैदराबाद के पुस्तकालय में इस पुस्तक की एक प्रति है। इस प्रति में ११४ पृष्ठ हैं; प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियाँ हैं। पुस्तक ७ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच आकार की है। पुस्तक का सम्पादक जैनुत् आबदीन हुसेनी ने १२२६ हिजरी में किया।

४—उपर्युक्त प्रतियों के अतिरिक्त "यूरोप में दक्खिनी मखतूतात" के लेखक श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने योरोप के पुस्तकालयों में प्राप्त कुछ और प्रतियों की चर्चा की है :—

(क) "सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" की एक प्रति इंडिया आफ्रिस के पुस्तकालय में सुरक्षित है। इस प्रति का संपादक अज़ीजुल्ला नाम का व्यक्ति है और इसका संपादन काल ११३३ हिजरी है।

(ख) पुस्तक की दूसरी प्रति ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय के ओरियंटल विभाग में है। इस प्रति का संपादन काल ११५६ हिजरी है। संपादक के नाम का

पता नहीं है ।

- (ग) केम्ब्रिज विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में इस पुस्तक की दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं । इन प्रतियों के संपादन काल एवं संपादक का पता नहीं ।

५—उपर्युक्त हस्तलिखित प्रतियों के अतिरिक्त यह पुस्तक दो स्थानों से फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हो चुकी है :—

- (क) सन् १८७१ में यह पुस्तक हैदरी प्रेस; बम्बई की ओर से प्रकाशित हो चुकी है ।
- (ख) हैदराबाद में नवाब सालार जंग की संरक्षता में कुछ विद्वानों की एक उपसमिति बनी । उस उपसमिति ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है । पुस्तक सन् १९४६ में प्रकाशित हुई और इसका संपादन श्री मीर सआदत अली रिज़वी ने किया है ।

प्रस्तुत पुस्तक का संपादन दोनों छपी हुई पुस्तकों और इदारे अदबियाते उर्दू के पुस्तकालय में प्राप्त प्रति के आधार पर किया गया है । हम इन पुस्तकों के संपादकों के आभारी हैं ।

पुस्तक में कुछ स्थानों पर प्रूफ की अशुद्धियाँ रह गई हैं । भाषा पुरानी होने के कारण संभव है कुछ और त्रुटियाँ रह गई हों; हम उनके लिए क्षमा प्रार्थी हैं ।

हैदराबाद (दक्षिण) }
२१ दिसम्बर; ५४ }

राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीक़ी

विषय—सूची

क्रम सं०	नाम	पृष्ठ संख्या
१	हम्द	१
२	दुआ	३
३	नात	५
४	हज़रत अली की तारीफ़ में	७
५	मीराँ मुहीउद्दीन की तारीफ़ में	१०
६	सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में	१२
७	सुयुन की तारीफ़	१६
८	कुछ अपने बारे में	१६
९	दास्तान का आगाज	२६
१०	सैफुल मुलूक का पैदा होना	४१
११	सैफुल मुलूक को दरबार में बुलाना	४४
१२	तस्वीर पर रीझना	४६
१३	इश्क़ में दीवाना होना	४८
१४	सैफुल मुलूक का इलाज	५०
१५	साअद का सैफुल मुलूक के सामने जाना	५२
१६	परियों का ज़री का कपड़ा लाना	५५
१७	गुलिस्तान-एरम की खोज	५८
१८	सैफुल मुलूक का जवाब	<u>६२</u>
१९	गुलिस्तान-एरम की खोज में जाना	७०
२०	हब्शियों की कैद में	७३
२१	कैद से निकल भागना	८०
२२	एक द्वीप में आना	८२
२३	बन्दगे की कैद में पड़ना	८५
२४	कफ़तारों का कैदी होना	८७
२५	राक्षसों के द्वीप में पहुँचना	९१
२६	सकसारों के हाथों में गिरफ़्तार होना	९३
२७	दिवाल पायों के हाथ में पकड़ा जाना	९७
२८	कैसरिया शहर में पहुँचना	१०१

२६	कैसरिया से खाना होना	१०६
३०	इस्फन्द नाम के द्वीप में पहुँचना	११६
३१	शाहज़ादी को पाना	११६
३२	शाहज़ादी के साथ दोस्ती	१२१
३३	बदीउल जमाल के बारे में खबर मिलना	१२४
३४	दैत्य का मारा जाना	१२६
३५	ताजुल मुलूक से भेंट	१३१
३६	शाहज़ादी के घर जाना	१३८
३७	साअद का मिलना	१४१
३८	बदीउल जमाल का संगदील आना	१४६
३९	बदीउल जमाल से मिलना	१५६
४०	बदीउल जमाल का डेरे में आना	१६८
४१	सैफुल मुलूक का सीमीपटन जाना	१७२
४२	देवा के द्वारा पकड़ा जाना	१८१
४३	सैफुल मुलूक का कैद से छूटना	१८५
४४	बदीउल जमाल से शादी	२०३
४५	जलवा	२०८

हम्द

इलाही जगत का इलाही सो तूँ
करनहार जम^२ बादशाही सो तूँ

तेरे हुक्म तल नौ गढ़^३ आसमान के
रैय्यत मलक^४ तेरे फ़रमान के

भरथा तिस गढ़ों बीच तारे हशम^५
करें नौबतों^६ सूँ उलंग^७ दम ब्रदम

फ़रंग्यों^८ सूँ विजल्यों के रुचसाज़^९ तूँ
जुहल^{१०} कैं रख्या कर फ़रंगदाज़^{११} तूँ

जहाँ लग जो बादल के हैं गड़गड़ात
तेरी फ़तह^{१२} दौलत दमामे के ठाट

हती^{१३} तेरे दरबार के फाड़^{१४} सब
छड़ीदार तुज^{१५} दार^{१६} के भाड़ सब

जो बारह इमामों हैं उन पर सलाम
सो बारह सिलहदार^{१७} तेरे मुदाम^{१८}

नव्थों हौर बाज़े वल्यॉ हैं जिते
तेरे दार के सरगुरू^{१९} हैं विते^{२०}

तेरी बादशाही को कुछ अन्त नई
तेरे मुल्क में ग़ैर को पन्त^{२१} नई

१ ईश्वर की स्तुति २ हमेशा ३ इस्लाम के अनुसार आसमान के ६ खण्ड ४ फरिश्ते
५ शान शीकत वाले ६ बारी बारी से ७ लोंघना, छल्लों मारना ८ तलवार ९ रुचि के
साथ सजाना १० ग्रह विशेष (शनिश्चर) ११ सिपाही १२ फ़तह की दौलत, विजय का
धन, विजय के बाद बजने वाले घाजे १३ हाथी १४ पहाड़ १५ तुम्ह; तुम्हारे १६ द्वाग
१७ सन्तरी १८ हमेशा १९ बड़ा दर्जा रखने वाले २० उतने ही २१ पन्थ, रास्ता ।

खज्जीने^१ भरथा गैब के गैब ते^२
हुआ तू अपे^३ पाक फिर ऐब ते

बसाया है तिर्ज^४ का एक हाट तू
दिखाया हर एकस^५ कू एक बाट तू

खुलाया जनत की किवाड़ों तुहीं
बँधाया शफ़क^६ के पहाड़ों तुहीं

चँदा में ते तू चन्दना काढ़ता
सूरज ते गरम धूप तू पाड़ता^७

दिखाता तमाशे अजब दूर थे
दिपार्ता^८ है लाख नूर एक नूर थे

हरथा कर रख्या तू जमीं सात कू
दिया रंग फल फूल हौर पात कू

नवे फूल डाल्यो पे बार आई सो
वो तशरीफ़^९ है तुज कने पाई सो

जो कुछ तू करे सो सरे^{१०} जम तुभे
सदा सेवे मिल सात आलम तुभे

ग़वासी जो तुज दार का खाक है
तेरी बाट का महज़ खाशाक^{११} है

दिखा कीमियाँ कर तू मुझ खाक कू
दे रंग बास मुज दिल के फल फाँक कू

१ खजाना २ गैब के खजाने गैब ते भरथा—बहुत से ऐसे खजाने, जो लोगों को मालूम न थे, उन्हें अनजाने दंग से तू ने भर दिया है। ३ आप, स्वयं, खुद ४ त्रिजग, तीनों लोक ५ हर एक को ६ प्रातःकाल और सायंकाल आकाश की लालिमा ७ (मराठी) निकालना ८ दीप्त करता, प्रकाशित करता ९ खिलत, बादशाह की ओर से इनाम के रूप में प्राप्त हुआ लिबास १० मुनासिब ११ तिनका।

दुआ

रहीमा सच्चा तू ग़नी^१ होय रे
ग़नी तुज बग़ैर अज़^२ नहीं कोय रे

तू मक़बूल^३ है मुक़बिलाँ^४ का सच्ची
नूर ही नूर रौशन दिलाँ का सच्ची

जो कोई ज़िन्दा दिल है तू उनका हयात^५
जो कोई होवे तुज साथ तू उनके सात

जो हूँ या इलाही तेरा दास मैं
किया हूँ बहुत एक तेरी आस मैं

तू मुज दास पर खोल दर्द फैज़^६ का
मेरे मन मनेँ भर असर फैज़ का

तरावत^७ दे मुज आस^{१०} के बाग़ कूँ
दवा बख़्श मुझ दर्द के दाग़ कूँ

वफ़ा में बढ़ा कर जवाँमर्द मुज
तेरे वाट का करके रख गर्द मुज

अता कर मुझे कुच तेरे नावँ सँ
दे परवाज़ मुजकूँ बलन्द धावँ^{११} सँ

तेरे नूर की रह दिखाना मुझे
दिला आक़ेबत का बिछाना मुझे^{१२}

जिलादे मेरे जीव की आग़ कूँ
दे रंग बास मुज दिल की फल फाँक कूँ

१ जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता न हो २ तेरे सिवा ३ प्राप्ति ४ भक्त ५ जीवन
६ दरबाज़ा ७ कृपा ८ मैं ९ तरावट १० आशा का बाग़ ११ ऊँची धाम, ऊँची जगह,
मन की ऊँची स्थिति १२ दिला.. .. मुझे—क्रयामत के समय आराम का बिछौना दे ।

सदा कस्त्र^१ मेरा सो एख्लास^२ कर
तेरे खास बन्दों में मुज खास कर

जका^३ जोत तुज ध्यान केरा रतन
मेरे मन के सन्दूक में रख जतन

हुमों^४ कर मुजे बाट के औज का
शहंशाह कर ज्ञान की फौज का

मसीहा का दे मुजक़ आसार जम^५
मेरी जीव कूँ कर शकर^६ बार जम

भर अमृत के चश्मे मेरे किल्क^७ में
रतन शैव के ल्या मेरे सिल्क^८ में

जो ग़वास हो तुज सराताँ अछूँ
नवे मज़मुना धुन्द^९ ल्याता अछूँ

ब हक्के^{११} नबी है जो तेरा रसूल
मुनाजात^{१२} ग़व्वास का कर कबूल

१ प्राप्त किया हुआ २ मुहब्बत से प्राप्त करने दे ३ जगा ४ एक विशेष पक्षी, जिसके सम्बन्ध में विश्वास है कि उसकी छाया जिस पर पड़ जाती है, वह बादशाह हो जाता है ।
५ मसीहा... आसार जम—मुझे मसीहा की शक्ति दे ६ मिठास बरसाने वाली ७ कलम
८ लड़ी; विचारों की लड़ी ९ तेरी सराहना करता रहूँ १० ढूँढ़ना ११ नबी के नाम पर
१२ प्रार्थना ।

नात^१

सच्चा तूँ मुहम्मद सच्चा मुस्तफ़ा
सच्चा है तूँ अहमद सच्चा मुरतुज़ा^२

तूँ ताहा तूँ यासीन तूँ अबतही^३
तूँ उम्मी^४ तूँ मक्की^५ तूँ मुरसिल^६ सही

तूँ अब्बल तूँ आग्विर^७ तू ही है अमीर
तूँ ज़ाहिर तूँ बातिन^८ नबी बे नज़ीर

तुही हाशमी हौर कुरैशी^९ रसूल
जो कुछ तूँ कहे सो करे सब कुबूल

तूँ क़ायम तूँ हुज्जत^{१०} तूँ हाफ़िज़ सच्चा
तूँ शाफ़े^{११} तूँ साबिक़ तूँ वायज़^{१२} सच्चा

तक्की^{१३} हौर सखी तूँ वली हौर खलील^{१४}
दिया तुज नबी नॉव रज़ुल् जलील

खुदा के नब्यों^{१५} का सो मुल्तान तूँ
देवनहार सारंग्यों कूँ ईमान तूँ

तूँ साहब सच्चा है जगत तीन का
सदा तुज थे मामूर^{१६} घर दीन का

तूँ ज़ाहिर तूँ पिन्हा^{१७} अछे सब सिते^{१८}
वले^{१९} हर कड़ी मिल अछे सब सिते

१ पैगम्बर की तारीफ़ २ मुहम्मद, मुस्तफ़ा, अहमद, मुरतुज़ा, ताहा, यासीन—पैगम्बर के नाम ३ बतहा, मक्का का पुराना नाम है। मक्का में रहने वाले को अबतही कहेंगे। ४ जिस को पढ़ने लिखने की आवश्यकता न हो ५ मक्का का रहने वाला ६ रसूल, खुदा का संदेश पहुँचाने वाला ७ मुहम्मद साहब के लिए यह विश्वास है कि वे सृष्टि में सर्व-प्रथम पैदा हुए तथा ये सभी पैगम्बरों में अन्तिम पैगम्बर हैं ८ अप्रत्यक्ष ९ मुहम्मद साहब का ख़ानदाना नाम १० प्रमाण ११ क़ायम के समय अच्छे लोगों के सहायक १२ शिक्षा देने वाला १३ परहेजगार १४ दोस्त १५ नबी का बहुवचन १६ आवाद १७ अप्रत्यक्ष १८ से १९ लेकिन।

जमी से अरश^१ पर गए शह सवार
 करे तू गुजर पल मे कई लाक बार
 मलायक^२ यू परवाना तुज नूर के
 बल्थों सारे जरें हैं तुज सूर के
 तलब का जो सर पर रख्या ताज तू
 दिया तिल मे जा नूर मेराज^३ तू
 खुदा होर तुज में जुदाई नही
 किसे ख सू यू आशनाई नहीं
 हतेली तेरा लौह^४ उंगली कलम
 तेरी मुश्त में अरश कुर्सी है जम
 खुदा का जो आलम है, हेजदाहजार^५
 रखा है तरे छोंव तल बरकरार
 तू जिस ठोंव अपना रखे पोंव तू
 तो दर हाल जिव आवे उस डार कूँ
 जयों देवे तू बेजवानों के तई
 फरह-बश्श^६ जीवों के कानों के तई
 तुही मौजज्यों^७ कूँ सो दिखलान हार
 तुही सब कूँ जन्नत मे लेजानहार
 गवासी जो सबका है तुज नोंव पर
 फिदा जिव है उसका तेरे पोंव पर
 नबी के अवात्रक^८ असहाव हैं
 सो दूसरे उमर इब्ने-खत्ताय हैं
 सो उस्मों नबी के बड़े यार हैं
 हमेशों वो उनके वफादार हैं

१ आठवों आममान, खुदा का स्थान २ फरिश्ते ३ यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब खुदा के पास गये और सानों आममान का सैर करके बहुत थोड़ी देर में वापिस आगये । मुहम्मद साहब का यह पूरा काम मेराज कहलाता है । ४ स्लेट ५ अठारह हजार ६ खुशी देने वाला ७ करामत ८ अवाबक, उमर इब्ने खत्ताय, उस्मान पहला दूमेरे और तामरे खलीफा ।

हज़रत अली की तारीफ़ में

तू है सात जग का वली या अली^१
वल्याँ तेरे जग के कुली या अली

जो कोई ग़ौस है कुतुब अकताब हैं^२
जो कोई जलालत^३ के असहाब^४ हैं

वो हैं खाक हो जम तेरे पाँव तल
करें ज़िन्दगानी तेरे छावें तल

धरत गुम मुठी में तेरे यूँ दिसे
कि दो मरज़^५ बादाम में ज्यों दिसे

कि तू वो कलीम^६ आज मगरूर है
जो खाँदा^७ नबी का तेरा तूर^८ है^९

जो सीमुर्ग^{१०} है काफ़ ठारा उसे
तेरा याद दायम है चारा उसे^{११}

पहाड़ों तेरे दास कहवावें सब
“चल आवे” कहे तू तो चल आवें सब

दिखावे जलालत के जो धात तू^{१२}
भरे ल्या घड़ी में समन्द सात तू

तिल उतना ग़ज़ब कर जो तू दूर होय
भँडोली नव अंबर की फ़ट चूर होय

१ चौथे ख़लीफ़ा २ सन्तों के विभिन्न प्रकार ३ बुजुर्गी ४ साहब का बहु वचन ५ बादाम के भीतर का बीज ६ मूसा पेग़म्बर दूसरा नाम ७ कन्धा ८ एक विशेष पहाड़, जिस पर खुदा ने अपना ‘नूर’ गिराया, जिसे देख कर मूसा बेहोश हो गए । ९ तुममें मूसा के मुक़ाबिले में भी इस बात का गौरव हासिल है कि मूसा तो खुदा के नूर को न देख सके किन्तु तुम नबी के कन्धे पर रहकर खुदा के नूर को देख सके । १० जो सीमुर्ग काल्पनिक पक्षी है, वह भी तेरी याद के बिना जीवित नहीं रह सकता । ११ जलालत के धात दिखाना—शक्ति प्रदर्शन करना ।

खड़ा होय अगर हठ सों एक साथ तूँ
न फिरने देवे दीस^१ हौर रात कूँ

भुजंग धरत सों आ निकल खाक थे
रह्या भार ले सर पे तुज धाक थे

करामत थे तेरे कंकर फाड़ होंयें
सुकी डालियाँ सब हरे भाड़ होंयें

विलायत के आसमान थे भार ज्यों
तेरा खर्ग निकल्या सूरज-सार ज्यों^२

चन्दर तारे दहशत सों छुप गए तमाम
सेह^३ मक्र^४ करने थे सब रहे तमाम

गगन जो अहे नाग फन सात का
पड़े ज़र्द^५ उस पर जो तुज हात का

सो सातो फन उसके पड़े टूट कर
जमीं टुकड़े हो जाये सब फूट कर

कि फिर भाड़ गुल वर जमीं तुज को आये
शुजाअर्त^६ तेरा सुन मलक गड़बड़ाये

जो सब ठार तेरी दुराही^७ चले
सभी खन में तेरी जो शाही चले

जो कोई तुज विलायत मने शक जो लाय
वो वेशक जो दोज़ख के दरम्यान जाय

फ़िटा या अली मैं तेरी बाट पर
सँ^८ खारजों^९ की मुडथों काट कर

१ दिवस २ विलायत.....सार ज्यों—बली की विशेषताओं के आसमान में तूँ सूर्य के समान प्रकट हुआ है । ३ (अरबी) जादू ४ धोखा ५ मार ६ बहादुरी ७ दुक़मत ८ (मराठी) फेंकदूँ ९ अली के विरोधी ।

करूँ विर्द^१ अपना तेरा नावँ मैं
दुन्याँ दौलताँ ग़ैब थे पाउँ मैं

बदन पर करूँ जीव हर बाल कूँ
सराऊँ सदा तुज नवल लाल कूँ

रहूँ तुज थे जग में सरफ़राज़^२ हो
सदा तुज हवा में उड़ूँ बाज़ हो

तेरी पन्थ की धूल अंजन करूँ
दरद दुःख कूँ एकधर^३ थे भंजन करूँ

रहूँ तेरे वन्याँ मने खास हो
तेरी मदहूँ दरिया में 'ग़न्वास'^४ हो

नज़र कर करम की तूँ मुँज पर मुदाम
तुज ऊपर हज़ारों दुरूह हौर सलाम

जो बारों इमामों बड़े राज हैं
चमामें^५ उनों को मेरे ताज हैं

तहय्यात^६ उनके उपर लाक-लाक
मुखालिफ़ उन्हों के अछो जम हलाक

१ विरद, यश २ सम्मानित हो ३ एक दम ४ तारीफ़ की नदी ५ गोताख़ोर, कवि का नाम ६ जूते ७ दुश्मा के शब्द ।

मीराँ मुहीउद्दीन की तारीफ़ में

कसम खाऊँ मैं सुरयेयासीन^१ सूँ
कि हक़ बाद है जीव मेरा तीन सूँ^२

हिमायत जो मुज बस अहे तीन का
मुहम्मद, अली और मुहीउद्दीन का

कि यू तीन सो एक हैं; दुई नई
दो देखे सो अहवल^३ बिना कोई नई

वल्याँ में वली सो मुहीउद्दीन हैं
मुक्करब^४ वली सो मुहीउद्दीन हैं

मुहिन्वाँ^५ जिते हैं सगल^६ तालिअों^७
यू महबूब के हैं वो सब मतलुअों^८

तुहीं ग़ौस^९ आज़म सो मशहूर है
चिरागे नबी का तुँही नूर है

खुदा के सो है शेर का शेर यू^{१०}
धरे सब मने तेज़ शमशीर यू

कि इस बात शाहिद^{११} है बन्दा नवाज़
मुहम्मद हुसेनी है ग़ेसूदराज़^{१२}

मुही उद्दीन का क़दर उनों फ़ाम अपे
कहे है नवद और नुह नाम अपे^{१३}

१ कुरान का एक अध्याय २ कि हक़ बाद..... तीन सूँ—खुदा के बाद मैं इन तीन आदमियों को चाहता हूँ। ३ (अरबी) जिसको कोई चीज़ दो नज़र आती है ४ जो खुदा के पास पहुँच चुके हैं। ५ दोस्त ६ (मराठी) सब ७ ढूँढ़ने वाले ८ चाहने वाले ९ मुहीउद्दीन का दूसरा नाम १० खुदा... ..शेर तूँ—हज़रत अली शेर खुदा कहे जाते हैं, तुम उनके शेर हो। ११ गवाह १२ बन्दा नवाज़, मुहम्मद हुसेनी, ग़ेसू दर्राज दक्षिण के एक बड़े फ़कीर, जिनकी समाधि गुलबर्गा में हैं, उनका नाम तो मुहम्मद हुसेनी था और 'ग़ेसूदराज' और 'बन्दा नवाज़' उनकी उपाधियाँ हैं। १३ मुहीउद्दीन... ..नाम अपे—मुहीउद्दीन की क़दर वही ख़ोग जान सकते हैं, जो खुदा के निन्यानवे नामों से पीरचित हैं।

जो कोई जो मुही उद्दीन सँ फिर पड़े
टुटे गर्दन उसकी तलें सर पड़े

उसे छोड़ जो कोई मँग दीन कूँ
नहीं दीन व ईमान उस हीन कूँ

न उसको खुदा ना मुहम्मद अली
दिवाना कुता हो फिर हर गली

जो कोई एक दिल है मुही उद्दीन सँ
सरअफ़राज़^१ है वो दुनियाँ दीन सँ

अछे जिस थे खुश यू वल्यो का वली
खुश उसथे खुदा हौर मुहम्मद अली

कहे गैन हौर वाव अलिफ़ स्वाद ये^२
मुही उद्दीनियाँ कूँ अछे याद ये

जहाँ लग मुही उद्दीनियाँ^३ हैं तमाम
हैं मक़बूल अल्लाह के वस्सलाम

सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में

सो सुल्ताँ मुहम्मद कुतुबशाह गम्भीर
जग आधार है और जग दस्तगीर

चँदा चौदवाँ खुशखी बुर्ज का^१
अमोलक रतन हुस्न के दुर्ज^२ का

सगल पादशाहों में उसका है नाँव
उसी कुतुब का कुतुब तारा है छाँव

सुलेमाँ^३ के जो तख्त का नाँव है
अता शह कूँ वो तख्त का ठाँव है^४

पर्याँ देव आवे वतन छोड़ सब
खड़े हो रहें डरते हत जोड़ सब

नित इस शह के सेवक हों सेवे तमाम
देखन शाह कूँ यूँ कहलेवें तमाम

“मगर फिरके दुनिया में औतार हो
सुलेमान आया तख्त सवार हो

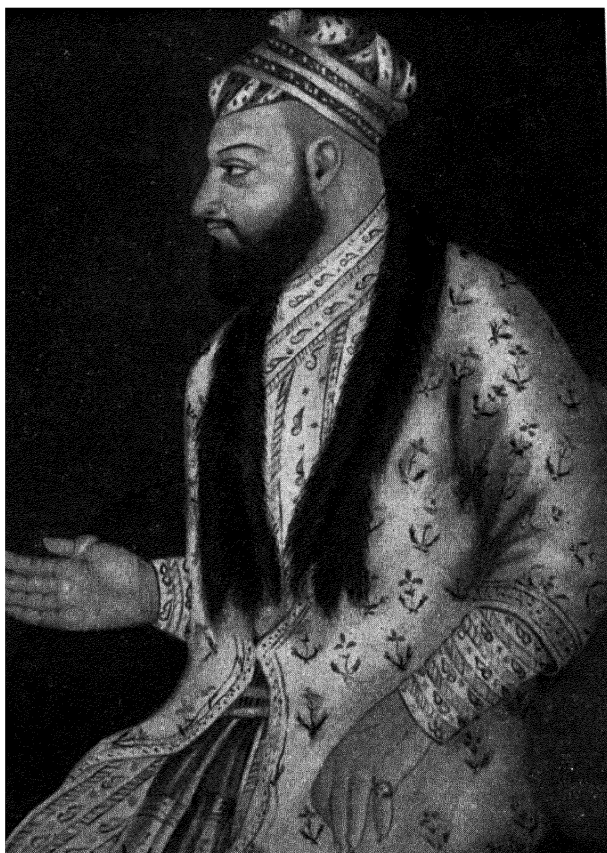
अजब क्या जो शाहों मिल आवे तमाम
सो बन्दगी का खत^५ देके जावें तमाम

जलालत भर्या हाल देख शाह का
कलजा फटे मेह और माह^६ का”

१ चँदा चौदवाँ... .. बुर्ज का—बादशाहत के आसमान में मुहम्मद कुतुब शाह चौदहवें चाँद के समान हैं। २ रत्न रखने की डिबिया ३ इस्लाम के एक पैगम्बर; जिनका तख्त बड़ा मशहूर है। कहा जाता है कि हजरत सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन और परी उसे ले जाते थे क्यों कि वे उन की रियाया थे। ४ अता..... ठाँव है—मुहम्मद कुली कुतुब शाह को हजरत सुलेमान का वही तख्त मिला है। ५ बन्दगी का खत देना, गुलामी का दस्तावेज लिखाना ६ सूरन और चाँद।



अब्दुल्ला कुतुबशाह



इब्राहीम कुतुबशाह



किये अदल^१ यू शह हर एक ठाँव सँ
कि नवशेरवाँ का छिया नाँव सँ

दिलेरों सो हैबत थे हलते डरें
गव्यों^२ में थे शेरों निकलते डरें

इसी शह दिलावर के डर वास्ते
सितारे खड़े हों न सक न्हासते^३

अगर शह जो फ़रमावे एक तार कूँ
चलाता लेकर आवे संसार कूँ

बचन सुन के याजूज^४ शह धाक ते
छुपा जाके पाताल में खाक ते

कुवत शह का पाकर मखी सारकी^५
थपेड़ा सो रुस्तम के मुख मारती

हिमायत सो शह आदिल का पावकर
बदल जा वतन कर रखा बाव पर

दिसे शह कूँ यूँ हात तेग आचदार
कि हैदर के ज्यूँ हात में जुल्फ़कार^६

जम उस शह कूँ यू कामरानी^७ सजे
अदालत में नौशेरवानी सजे

अगर इल्म की बात पूछे जिसे
अंदाजा नहीं मारते दम किसे^८

कि हैं शह को रोशन गुप्त राज सब
छुवे ग़ैब के जो हैं आवाज़ सब

१ इन्साफ २ शेर की माँद ३ भाग नहीं सकते ४ अगर.....संसार कूँ—अगर बादशाह एक तार को भी हुक्म दे दे तो वह संसार को खींच कर लायेगा । ५ एक फ़रिश्ते का नाम है, जो गुनाह करने के कारण पाताल में उल्टा लटका दिया गया है । ६ सरीखी ७ हज़रत अली की तलवार का नाम ८ कामयाबी ९ अगर... किसे—बादशाह इतना बड़ा आलिम है कि उसके सामने कोई आलिम होने का दावा नहीं कर सकता ।

अगर कोई लेवें गूँद^१ कुच दिल मनें
कहे खोल शह फाम^२ कर तिल मनें

मँगे दिल जो टुक शाहे गंभीर का
पवन पर बँधावे महल नीर का

लटकता जो शह जावे जिस ठाँव चल
हवा आ पड़े फर्श हो पाँव तल

अंबर सात जो गिर्द घेरे अहें
सो शह के रँगारंग^३ डेरे अहें

रज़ा शह की होवे ज़रा चूर का
लेवे तिल मनें तफ़्त चन्द सूर का

खज़ीने जो हैं शह के भर पूर हो
जवाहिर के हैं ऐव सन्दूर^४ हो

जिता उस खरचते तो सरता^५ नहीं
जिता ल्याके भरते तो भरता नहीं

न ऐसा कहीं शाह सुजान है
न ऐसा दिलावर कहीं ज्वान है

न शह सार सूरज किस असमान में
न शह सा रतन है किसी खान में

फिटा शह पे चन्द सूर असमान के
जिते हैं रतन जग केरे खान के

शावासी जो शायर है शह का मुदाम
करे यूँ दुआ शह कूँ सुबह-शाम

जहाँ लग यूँ दुनियाँ बसन-हार है
जहाँ लग यूँ अंबर निराधार है

१ सोचना २ मालूम करके ३ रंग-बिरंग के ४ समुद्र ५ खतम नहीं होता ।

जहाँ लग अहो शह की शाही करार
रखे अमन सँ शह कँ परवरदिगार

अहो दोस्ताँ शह के शह दाँव तल
दन्दे^१ हौर सब दुशमनों पाँव तल

कि शह घर सदा ऐश का काज अछो
बसे लग दुन्याँ शाह का राज अछो

सुखन की तारीफ़

कलम काफ़ व नून थे जो निकला बहार
सो पहले बचन कूँ किया आशकार^१

बचन का पड़ा नाद सरो मने
किया ठार आ जीव के तन मने

जो कुछ राज़ पदें में हैं ग़ैब के
जो कुछ हैं छिपे भेद लारैब^३ के

विते सब बचन में समाते अहें
बचन में च थे भार आते अहें

बचन थे सदा जीव कूँ रूच है
बचन तेच भरपूर सब कूच है

बचन अर्शकुसी^४ पोथे^५ धाए हैं
बचन आदमी के बदल आए हैं

बचन का फ़ज़ीलत^६ जम ऊँचा अहे
बचन के न कोई हद का पहुँचा अहे

बचन का अहे गर्म बाज़ार जम
बचन कूँ पुरोहे हर एक ठार जम

बचन तेच होवे खुदा का सिफ़त
बचन ते होवे नात^७ और मनकेवत^८

बचन ते शहाँ कूँ सराते अहें
बचन तेच बहु मान पाते अहें

१ बचन, कविता २ कलम... .. आशकार—कलम जब अस्तित्व में आई तो उससे कविता निकली। ३ (अरबी) इसका शाब्दिक अर्थ है, जिस में कोई सन्देह न हो। यहाँ खुदा के लिए इसका प्रयोग किया गया है। ४ आठवाँ आसमान, जहाँ खुदा रहता है। ५ पर से ६ बुजुर्गी महत्व ७ पैगम्बर की तारीफ़ ८ फ़कीर और महात्माओं की तारीफ़।

बचन ते सवालाँ जवाबों होवें
बचन ते हिसाबों किताबों होवे

बचन ते मुरादाँ जगत पावते
बचन थे मुलुक हार गड़ाँ^१ आवते

बचन थे भले और बुरे काम सब
हर एकस कूँ होते अहें फ़ाम^२ सब

बचन तेच होवे सग़ मुलहो जंग
बचन तेच हासिल होवे नाव व नंग^३

बचन थे हुई फ़ाम नेकी बदी
बचन थे हुवे मुन्तही^४ मुब्तदी^५

बचन थे दिलाँ हाथ लेते अहें
बचन थे किते जीव देते अहें

बचन थे चले दीन व दुनियाँ तमाम
बचन के हैं मुँहताज सब खास व आम

बचन थे घरों होवते हैं खड़े
बचन तेच होते हैं लोगों बड़े

बचन मोती हैं जीव के कान के
बचन पर थे वारें रतन खान के

बचन की यूँ झलकार नौ भान में
सितारा नहीं है किस असमान में

बचन ग़ैब के हैं अजब जौहरों
बचन के सो हैं जौहरी शायरों

बचन के समन्द का हूँ ग़व्वास मैं
धरन हार हूँ मोतियाँ खास मैं

१ किले २ मालूम होना ३ नेकनामी, बदनामी ४ माहिर, पारगत ५ जिसने किसी काम को सीखना शुरू किया हो ।

जगत जौहरी सब मेरे पास आए
मेरे खास मोतियाँ कूँ जीव कर ले जाए

चढ़े हात मोती यूँ जिस राज के
तो सर पर रखे जोड़ उपर ताज़ के

उनन का बहा^१ कोई दे ना सके
बग़ैर राज भी कोई ले ना सके

कुछ अपने बारे में

जो एक दिस^१ निकल मैं सहरगाह^२ कर
चल्या फूल बाड़े कदन^३ ख्याल धर

सो यूँ कुछ वहाँ फूल बार आये थे
सबजपोश डाल्यो पे भलक आये थे

मगर पाच^४ सँ शमा के भाड़ कर
दिवे ल्याये थे नूर के सर बसर^५

मेरा रूह परवाने के सारका^६
जो आशिक है नूँ की भलकार का

देख इस शमा के भाड़ कूँ नूर के
लग्या फिरने खुश खोल पंख सूर के

मुँजे हालत इस ठार पैदा हुवा
सआदत^७ केरा दिन हुवेदा^८ हुआ

मेरे बख्त का सूर भलक आइया
मुख इकबाल चौधर थे दिखलाइया

किवाँडों खुले सब मेरे फ़ाम के
खिले फूल मकसूद^९ के काम के

मेरा जीव बुलबुल हो बोलन लग्या
छुपे गैब के नग़मे खोलन लग्या

हुवा अक़ल का दस्त माया मुझे^{१०}
तो इस धात खातिर में आया मुझे^{११}

१ दिवस, दिन २ सुबह के समय ३ की तरफ ४ 'जमरूद' नाम का विशेष वेशकीमती पत्थर जिसका रंग हरा होता है ५ मगर पाच सर बसर—हरे वृक्षों की तुलना जमरूद की शमा से और फूलों की तुलना चिराग की लौ से की गई है ६ सरीखा ७ (अरबी) भाग्य = प्रकट होना ८ उद्देश्य ९ हुवा अक़ल....मुझे—अक़ल का हाथ मेरा दोस्त बन गया ११ तो इस धात आया मुझे—इस तरह यह बात मेरे दिल में आई।

कि पंजावो ना दिल ते ताज़ा निगार
जो दुनिया में अपना अछे यादगार^१

मैं यूँ बोल पूरा किया नई लगूँ
निदा^२ ग़ैब का आइया मुझको यूँ

कि ऐ ताज़े नक्शों^३ कूँ पहचान हार
बचन ग़ैब के ढूँढ़ ढूँढ़ ल्यान हार

बना एक तरह तूँ कि यूँ वक्त है
तूँ सूँ यार जो अब तेरा बख्त है^४

खुला है तेरे मुख पे दर फैज़ का
हुआ है अता तुज असर फैज़ का

निकल आ फ़साहत^५ के मैदान तूँ
बचन के तुरंग कूँ दे जौलान^६ तूँ

कि इस ठार तुज विन नहीं कोई अब
ले जा तूँ बलागत केरा गोय अब^७

कि सैफुल-मुलूक हैर बदीउल्जमाल
यूँ दोनों हैं आलम मने वे मिसाल

उनन दुई का दास्तों बोल तूँ
सो दफ़तर उनन इश्क का खोल तूँ

कि कई दास्तों जग में हो गए अहें
बले कोई ऐसा नहीं गए अहें

तेरे ताई आया है यूँ दास्तों
ज़फ़र^८ तुज कूँ लिया है यूँ दास्तों

१ कि पंजावो ... यादगार—दिल के अच्छे भावों को प्रकट करें जिन्हें दुनिया में अपनी यादगार बाक़ी रह जाय २ नाद, शब्द ३ नए नए नक्शे, नई नई बातें ४ तूँ सूँ... बख्त है—तकदीर तेरा साथ दे रही है ५ शायरी ६ जौलान देना, पड़ लगाना ७ बलागत ... केरा गोय ले जाना—ऊँची शायरी के गेंद को ले जाना ८ जीत ।

पड्या यू निदा जू मेरे कान में
 खड़ा आ फसाहत के मैदान में
 मेरा दिल खज़ीना जो मामूर^१ है
 बचन के जवाहिर सां भर पूर है
 लगा रोलने ताई मैं जौहरों^२
 दिपाया तजल्यो^३ में नौ अंबरो
 कया^४ शेर ताज़ा बड़े छन्द सां
 हर एक बन्द बसलाइया^५ बन्द सो
 जो लफज मिलाया रंगेली निछल
 पुरोया जवाहिर की छेली^६ निछल
 ख्यालों के फौजों को दौड़ाइया
 हज़ारों नवे तशबिहों लाइया
 बनाया नवे मज़मुनों और भी
 दिया तब^७ को ज़ोर पर ज़ोर भी
 रच्या बोल पर बोल यू रस भरे
 जो इस थे मिठाई के बछरों भुड़े
 मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
 जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है
 जिते हैं जो तूती^८ हिन्दुस्तान के
 भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के
 शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
 मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे

१ (अरबी) भरा हुआ २ लगा रोलने... ..में जौहरों—मैंने अच्छे अच्छे जवाहिर
 चुने ३ चमक ४ कहा ५ बिठाया ६ ढेर ७ तबीयत ८ एक पक्षी का नाम है, यहाँ
 कवियों के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

क्या मैं जो कुछ आई सो फ़ाम में
किया नाँव एक रूम हौर शाम में^१

उचाया तरज़ एक ताज़ा मिठा
जगत् बीच पाड़या^२ आवाज़ों मिठा

दिखाया हुनर मूशिगाफ़ी^३ किया
सलासत^४ के तई सिर ते साफ़ी दिया^५

नज़ाकत को मैं आपने ख़याल थे
दिखाया हूँ बारीक कर बाल थे

दिया ताज़गी शेर के धात कूँ
सेहर^६ कर दिखाया हर एक बात कूँ

लताफ़त मनें मैं सुखन संज^७ हूँ
धरनहार लक ग़ैब के गंज^८ हूँ

जो मैं हम यूँ तब आजमाई करूँ^९
तो सारया उपर पेशवाई करूँ

कहूँ तोज़ मज़मून एक तिल मने
कि बेहद उबलते हैं मुज दिल मने

हुनर की ग़वी^{१०} का सो मैं बाग^{११} हूँ
क्वचन के उतम गंज का नाग हूँ

सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि-रस्तम हूँ मैं आज के दौर में

१ रूम और शाम, देशों के नाम, ये देश अपने शायरों के लिए प्रसिद्ध हैं २ (मराठी) बालना या पैदा करना ३ मूशिगाफ़ी करना—बाल की खाल निकालना ४ सादगी ५ सिर ते साफ़ी दिया—नये सिर से साफ़ किया ६ (अरबी) जादू ७ शायर ८ ग़ैब के गंज—छिपे हुए खज़ाने ९ तब आजमाई करना—शायरी करना १० शेर की माँद ११ (मराठी) शेर ।

मेरी जीव अजब खर्ग^१ है आवदार
सदा तेज़ पानी धरे बेशुमार

मैं अप जीव की खर्ग तासीर थे
बचन का लिया मुल्क एक धीर थे^२

फ़हम का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं
जवाहिर के मौजों सँ भर्या हूँ मैं

उतारिद^३ सो है किल्क^४ मुज हाथ का
दवात है सो मेरा चँदर रात का

गगन सातों दफ़्तर मेरे शेर के
सितारे सो जौहर मेरे शेर के

जो कुछ तशबिहों खूब माकूल हैं
मेरे ख्याल के बन के वो फूल हैं

मेरे तबा का भाड़ जम ल्यावे बार^५
खिले फूल तिसकूँ हजारों हजार

यू अमृत सू बैतों^६ बड़े शौक सू
मै लिखने लग्या दिल के अत जौक सू

कलम जीव पा चुलबुलाने लग्या
दो जीबों सू मुभकूँ सराने लग्या

जहाँ होवे मज़कूर^७ यू दास्तों
दिलों कूँ देवे सूर^८ यू दास्तों

सुनें आशिकों यू तो हैरान होयें
पढ़े पीर मर्दा तो फिर जवान होयें

१ खड्ग, तलवार २ एक दम ३ एक तारे का नाम, फ़ारसी कवियों ने उसे खुदा का मुंशी कहा है और उनका कहना है कि खुदा जो कुछ कहता है, उतारिक उसे लिखता जाता है ४ कलम ५ बार लाना, फल लाना ६ शेर ७ कही जायेगी ८ चमक, खुशी ।

निरंजन जगत् का तू सामी अहे
दयावन्त दातार नामी अहे

बली जाऊँ उसकी दया के उपर
मेहरबान ख की मया के उपर

जो मुज दिल के सन्दूर^१ पर दौड़िया
इनायत केरा साँत^२ बरसाइया

सो मेरे ख्यालों के सीप्याँ मने
हर एक बुंद तिस साँत के आ जमे

सो यूँ कूच^३ मोत्याँ उबलने लगे
ख्यालों के सीप्याँ में ढलने लगे

जो दिल समुद्र के मौज पर मौज ~~आई~~
हर एक मौज चौधर ते ज्यू फौज आई

सो फौजों मुझे शौक में ल्याये हैं
जवाहिर की झलकार दिखलाए हैं

जो गवास हूँ मैं कमर बाँधिया
सो समुद्र में दिल की डुबकी लिया

सो यूँ मोतियाँ ढाल ल्याने लग्या
जवाहिर के ल्या रास भाने लग्या

जो सात अंगों में समा ना सके
किसी के हिसाबों में आ ना सके

सो मोत्याँ के अंगे लिया रास में
मदद मंग अपने खुदा पास मैं

पुरोने लगा बैस अप हाथ सूँ^१
रंगारंग हाराँ बहुत भात सूँ

हर एक हार सिगार संसार का^२
सुरज हो डुबे जोत हर हार का^२

कहूँ दास्तों सग बसर खोल मैं
करूँ जग कूँ बेताब उठूँ बोल मैं

१ पुरो ने लगा.. ...हाथ सूँ—बैठ कर अपने हाथ से मैं उन मोतियों को पिरोने लगा ।

२ सुरज हो.. ..हार का—हर हार के प्रकाश से सुरज की रोशनी भी मान हो जाती थी ।

दास्तान का आगाज़^१

कि हज़रत मुलेमान के वक्त पर
अथा मिस्र में राज एक बख्तवर^२

नगर मिस्र का तिस अथा तख्त गाह
अथे तिस ज़बततल^३ सकल बादशाह

नवलआसिम^४ उस राज का नेक नौव
शहों में अथा उस शरफ^५ ठाँव ठाँव

वो दाना वो आकिल जवॉमर्द था
मुसलमों खुदा तर्स^६ बा-दर्द था

बन्दा उसके घर का सो इक़बाल था
बसा सौ उसे कोठर्यों माल था

अथे घोड़े पागाह^७ में नौलाख उसे
तीरन्दाज़ तुफंगी थे सौ लाख उसे

अथा उसके लश्कर कने बेशुमार
शुजात^८ और अद्ल^९ में नामदार

चला जग उपर हुक्म हर साल यूँ
किया बादशाही सूँ खुशहाल यूँ

अदिक छॉव का रुख था शहरेयार
कले सरो आज़ाद ज्यूँ ताजदार

सदा राज करता अथा अपसता^{१०}
वले^{११} उसको बेटी न बेटा अथा

सो एक दिस अपस में अँदेशा किया
फिकर जाद हो मन में यूँ लाइया

१ कहानी का प्रारम्भ २ (फारसी) भाग्यवान ३ जाबते के नीचे, क़ानून के नीचे
४ बादशाह का नाम ५ महत्ता ६ खुदा से डरनेवाला ७ अस्तबल ८ बहादुरी ९ न्याय
१० अपने से, स्वतन्त्रता पूर्वक ११ लेकिन ।

“कि अपसैं मुलुक-माल परवर दिगार
इता कुच दिया है जो नई उस शुमार

वले कोई जतन इस रखनहार नई
कि मुज बाद मेरा कोई इस ठार नई

न जानूँ यू माल हौर मुलुक यू विलात^१
पड़ेगा किसी जाके दुश्मन के हाथ

अगर कोई फ़रज़न्द होता मुँजे
तो ये जग में आनन्द होता मुँजे

बड़ा नाव होता मेरा ठार-ठार
दुनियाँ में रहता एक मेरा यादगार

हुकूमत मेरा हात चढ़ता उसे
यू माल हौर मुलुक सब सँपड़ता^२ उसे

दरेगा^३ ! बड़ा गम है मुज दिल मने
न जानूँ भँजन^४ होवे किस तिल मने”

पशेमान^५ इस धात होता अछे
अपस में च भक भक रोता अछे

सुबह उठ करे खैर खैरात मोत^६
कि हो ताकि फ़रज़न्द अपसे तुरुत

खुदा के वली खूब अछे कोई जहाँ
नंगे पाँव सँ जाय चलता वहाँ

मँगो जाके पहले यही मुद्दुवा^७
करे खिदमत हौर उनकी लेवे दुवा

सदा रात दिन उसकू यही काम था
न निस नींद ना दिन कू आराम था

१ विलायत, शहर २ (मराठी) प्राप्त होता ३ अफसोस ४ भजन, दूटना, दुःख का दूर होना ५ पछताता ६ बहुत ७ अभिलाषा ।

हुवा फ़िकर के फ़िकर थे अघेड़
लिया दुःख विचारे को चौंधर ते घेर

सट्या बादशाही थं उम्मीद सब
वह चिन्ता हुआ मन में ग़म भेद सब

फिराया किनाअत^१ सट्या^२ तन के भेस
छिले बैठिया घर में चालीस दीस^३

वज़ीरों जो दौलत के थे ठार-ठार
मिले शह के दरबार सब एक बार

जो कोई जो वज़ीरों मने खास थे
जो शह सूँ धरनहार इखलास^४ थे

सो इद्रीस हौर सालेहइब्नेहमीद^५
यू दोनो कमर आँध होमुस्तईद

महाबल कने पेश हुवे सूँ विचार
भजन करने दुःख शाह का कर करार

अदब सात मिल शह के आँग हुए
दरस शाह का ज्यू निभा^६ देखिए

सो ग़मगी दिस्या शाह का हाल सब
कबूदी^७ हो रह्या है रंग लाल सब

मीतर गए हैं दीदे^८ दुःखों पीस कर
गई है फ़िकर ते कमर त्रैस कर

कि जागे पे खतरा न था ठार कूच
निकल जीव जाने न था भार कूच^९

१ सत्र २ छोड़ दिया ३ छिले बैठिया... दीस—चालीस दिनों के लिए इबादत करने बैठा
४ मुहब्बत, प्रेम ५ इद्रीस, सालेहइब्नेहमीद—वज़ीरों के नाम ६ गौर से ७ नीला ८ आँखें
९ कि जागे... भार कूच—जिसके जगे रहने पर किसी प्रकार का खतरा पहले न था,
उसी बादशाह का शरीर ऐसा मालूम होता था कि न जाने जान कब निकल जाय ।

कहे आके “ऐ खुश रवे^१ नामदार
रखे तुज कूँ खुशहाल परवरदिगार

तू क्या फ़िक्र करता है दिन हौर रात
यू क्या काम है तूँ जो पकड़या है हात

नज़िक है जो लश्कर में कितना उठे
खलल होवे हौर मुल्क तेरा लुटे^२

कि यू काम तुज शह कूँ वाजिब नहीं
तेरी अकल कूँ यू मुनासिब नही

अगर कोई शाहों सुनेगे यू बात
तो खुशमान^३ से ना कसे धात-धात

तू आरिफ़^४ है तुजकूँ हमें क्या कहें
तेरा हाल यू देख क्यों चुप रहें”

शहंशाह इस बात को सून कर
दिया जवाब माकूल यू चून कर

“कि ऐ खैरखाहों अधिक फ़ार्म^५ के
तरद्दुद करन हार हर काम के

मैं इस वक्त वो शाहे गंभीर हूँ
कि जोड़ा नही मुँज जहाँगीर कूँ

कि शाहों न सोयें मेरे धाक थें
लरज़ते मेरे अदुल के हॉक थें

जो हट कर अगर मैं धरूँ दिल मने
तो दुश्मन कूँ रहने न देऊँ तिल मने

१ बादशाह २ नज़िक है..... तेरा लुटे—तुम्हारे इस प्रकार रहने से लश्कर में फ़साद पैदा होने की संभावना है और यदि ऐसा हो गया तो चारों ओर अशांति फैल जाएगी और देश लुट जाएगा ३ अजब मान, अच्छी इज़ाजत ४ समझदार ५ समझ ।

जो हट कर अगर मैं करूँ दिल में दन्द
तो रहने किसी कूँ न देऊँ अन्द-गन्द^१

किसी शाह का डर नहीं कुच मुझे
वले एक यूँ ग़म किया हुच^२ मुझे

शाहों में अगरचे हूँ मैं जग पती
वले घर कूँ नई कोई दीवावती^३

यही है मेरे दिल कूँ घड़का बड़ा
सो क्यों मुल्क मुज बाद होगा खड़ा

इसी वास्ते सख्त दिल गीर^४ हूँ
नहीं हाल कुच मुज ते तगय्यीर^५ हूँ

बज़ीरों सुनें शाह खूँ यूँ विचार
शहंशाह कूँ धीरक दे सब एक बार

नुजुम्यौ^६ कूँ एक धर ते हाज़िर किए
छिपा शाह का राज़ ज़ाहिर किए

देखे खोल जूँ शह के ताले-क़वी^७
ख़ुशी सब के तई मुख दिखाई नवी

सितारा उठा जाग शह बख़्त^८ का
हुवा वक्त ख़ूबी केरे वक्त का

शहंशाह के ताले क़वी पायकर
बशारत^९ दिये शह कूँ यूँ आयकर

“कि ऐ बादशाह, भोगुनी^{१०} बख़्तवर
तूँ फ़रज़न्द के कारन अब ग़म न कर

१ नामो निशान २ हैच करना, बैकार करना ३ चिराग ४ रंजीदा ५ बदला हुआ हूँ
६ नुजुमी, ज्योतिषी ७ बड़ी किस्मत ८ भाग्य ९ ख़ुशख़बरी १० बहुगुनी, अधिक
गुण वाला ।

यमन^१ के जो राजा की बेटी है एक
चन्द्र-सूर खाते हैं रश्क उसकू देख

उसे मँग, तुज शाह कू वो सजे
कि देगा खुदा उस थे फ़रज़न्द तुम्हे^२

मुन्याँ इस वशारत कू ज्यूँ शह सवार
खुरशो साथ घर में थे निकल्या बहार

परेशान खातिर हुवा जमाँ नव^३
लगा दीपने मन केरा शमा नव

किया सिजदा उस वक़्त शुक़राने का
सो पाया जो था मुद्दुवा पाने का

महाराज गंभीर आसिमनबल
चढ्या देक अपस हाथ इक़बाल बल

बुला भेज्या सब अमीरों के तई
गुनी पेशवा हौर वज़ीरों के तई

बुला भेजिया सब अमीरों के तई
गुनी पेशवा हौर वज़ीरों के तई

दिया हुक्म आनन्द पा बेहिसाब
लिखे नामों शाहे यमन को शिताब^३

जो लिखने कू नामों जू आया दबीर^४
इशारत सू मन शह का पाया दबीर

समझ शाह के दिल के सूरत^५ कू
लिख्या नामों बेगीकर^६ इस धात सू

कि “ऐ भोगनी शाह समरथ सजन
तुम्हारा सदा गरम अल्लो अंजुमन

१ एक शहर का नाम २ परेशान..... जमाँ नव—उसका परेशान-दिल नए सिर से सन्तुष्ट हो गया ३ शीघ्रता से ४ मुंशी ५ (अरबी) वाक्य ६ बेग से, जल्दी से ।

जहाँ आफ़री^१ है जो सब पर क़दीर^२
जग आधार है और जग दस्तगीर

जो तुमनाँ कूँ कर बादशाहे यमन
किया है अता तख़्त गाहे यमन

बड़े हैं तुस्हीं नेक नामी में आज
दिसें बेबदल^३ एहतेशामी^४ में आज

बहुत दिन थे मुंज दिल में ऐ शहसवार
मुहब्बत तुम्हारा किया है करार

अगरचे हमें ज़ाहिरा दो हैं दूर
वलेकिन हैं बातिन^५ में दोनों हुज़ूर

मेरे दिल में यूँ आवता है इताल^६
जो ज़ाहिर वो बातिन अच्छे एक हाल

तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर
तुम्हारा क़ह्या है मेरे सीस उपर

व लेकिन सुन्या हूँ मैं तुमनाँ कूँ एक
उतम पाक-दामन है फ़रज़न्द नेक

अगर उस मेरे अक्द में ल्यायेंगे^७
मेरी बस्तकर्^८ मुभको दिखलायेंगे

तुम्हारा वफ़ादार कहलाऊँगा
अज़ीज़ों के शर्ती बजा लाऊँगा^९

मुहब्बत सँ गुज़रान कर बात कूँ
किया ख़त्म नामे^{१०} को इस धात सँ

१ दुनिया को पैदा करनेवाला २ समर्थ, खुदा ३ जिसकी बराबरी का कोई न हो
४ शान व शौकत ५ अन्दर से, भीतर से ६ अब ७ अक्द में लाना, शादी करना
८ शादी करना ९ पत्र ।

जो कुछ खिलअत्तों^१ खुसरवानी अये
जो कुछ तोहफे नादिर शहानी अये

अथा मर्तबा^२ खुस रवानी^३ जिता
कई लक वज़ा सूँ मुहय्या विता

दिए दवदवे साथ हाजिव^३ संगत
तुरुत बात ल्याए मरातिव^४ संगत

अंगे मेहतरा^५ सूँ खज़ाना किए
यमन के कदन खुश रवाना किए

एक एक मुल्क, एक-एक शहर, एक-एक विलात
एक-एक गढ़, एक-एक कोट, लक धात-धात

उलंगते-उलंगते^६ चले ता यमन
खबर गई यमन के शहंशाह कन

कि शह मिश्र के मुल्क का वेनज़ीर
हिजावत^७ कैं भेजा है अपना वज़ीर

जो शाहे यमन शहर सिंगार सब
कितेक सात रत्न आपना भार सर्व

मजालिस भरा खुसरवी शान सूँ
बुला भेजिया सब कैं बहुमान सूँ

वो नामों सरासर पड़ाया तमाम
सो मक्कसूद^८ खातिर में ल्याया तमाम

हुआ खुश लिखे सो हर एक बैन पर
ले नामा रख्या आपने नैन पर

१ बादशाह की तरफ से दिए हुए कपड़े २ बादशाही ३ दूत ४ मर्तबा, शान ५ बड़े लोग ६ तेजी के साथ चलते हुए ७ सन्देश ८ जो शाहे... .. भार सब—यमन के बादशाह ने अपने शहर को सजाया । उसने पूरी शक्ति से महल और बाहर के हिस्से को सजाया ९ ख्वाहिश ।

कुबुल्या जो कुछ ल्याये सो यादगार
रखाया जतन याद सँ ठार-ठार

नवाज्या सकल खास हौर आम कूँ
दिया खिलअताँ सबकुँ इकराम^१ सँ

जो शाहे यमन शादमानी^२ किया
बड़ी मेहमानी शहानी किया

दिया अपनी बेटी कूँ उस शाह कूँ
बँन्द्या अकद सूरज कूँ उस माह कूँ

तमाम उस उरूसी गिरी काज की^३
किया मुस्तएदी बड़े साज की

ज़रीनों^४ के बेहद निछल दुरजकों^५
बड़े मोल के तोहफे लक दर लकों

पर्या सी कनीज़ों^६ उतम ज्ञात क्यों
चंचल छन्द भर्या सूरज धात क्यों^७

हर एक साफ़ तन ढाल मोती दिसे
नवे रंग जाली में ज्योती दिसे

सभी किसवतों^८ उनकूँ रंग रंग सब
हर एक खुश नुमा हौर खुशाहंग^९ सब

गुलामाँ कितेक खूब साहबजमाल^{१०}
सुना वाँदे खण्ड्यों^{११} कितेक कर रुमाल

कितेक तबले के मिस्ल तातार के
कितेक फर्श वेमिस्ल ज़र तार के

१ इनाम २ गुशरी ३ उरूसी गिरी का काज, दुलहिन को सवारने का काम ४ सोना
५ बच्ची ६ सेविकाएँ ७ सूरज धात क्यों; बहुत ही सुन्दर ८ लिबास ९ खूबमूरत
१० खूबमूरत ११ (मराठी) खण्डी, कोडी ।

दरयायी तुरंग हौर हती बेशुमार
अमोलक किते जिन्स के यादगार

जो था मरतबा जहेज केरा जिता
किया मुस्तैद एक तरफ़ थे वित्ता

बड़े मरतवे सँ सरा बेहिसाब
लिख्या मिस्त्र के शह कँ यूँ जवाब

“कि ऐ बादशाह जगपति नामदार
तेरी बादशाही अछो बरकरार

सदा फ़तह व नुसरत^१ सँ तू राजकर
बसे लग दुनिया, नित नवे काज कर

तूँ दरिया है गंभीर गुण ज्ञान का
कि होता तूँ फ़रज़न्द सुफ़वान^२ का

दया कर जो मुजकूँ किया याद तूँ
सो रू-रू कँ मेरे किया शाद तूँ

नवाज़्या मुझे हौर किया सरफ़राज़^३
बड़े उम्र की बेल तेरे दराज़

जो कुच अम्र तेरा सँ मैं सिर लिया
कुबूल आपने जीव दिल सँ किया

कि मेरी हया का तूँ जीव दान है
फ़िदा तुजपे वो पाक-दामान है

जो मुज हौर फ़रज़न्द होता अगर
तो एक धरते करता फ़िदा तुज उपर

मुबारक तुझे खास्तगारी^४ अछो
यू नारी सदा तुजकूँ प्यारी अछो”

१ खुदा की मदद २ एक बड़े बादशाह का नाम, जिसके खानदान में आसिम नवल पैदा हुआ था ३ सरफ़राज़ करना, इज्जत करना ४ मँगनी, शादी के लिए लड़की माँगना ।

लिख्या यू नवाज़िश कर इस धात सात
बड़े गुलगुले^१ हौर मरातिव संगात

अनन्द की खुशी मंग अल्लाह कन
दिया पालकी भेज उस शाह कन

जो मंज़िल बमंज़िल सो आने लगे
अंबर हौर धरत जगमगाने लगे

शिताबी सँ चल रात-दिन आइए
जो ज़ेबा रतन शाह तई लाइए

जो नज़दीक जू मिस्त्र के आइए
अंगे एक हाजिव कूँ दौड़ाइए

जो आसिम नवल शह खबर पाइया
उमस^२ साथ खुशियाँ मने आइया

मंगे तिउँ; अंगे उसकी आया मुराद
जो कुच दिल मने था सो पाया मुराद

किया काज का साज खुश टार-टार
हुआ जग में यू काज सब आशकार^३

वो महलौ चतर सँ चितारे तमाम
सदर खुश खानी सँवारे तमाम

क्रमाशों^४ से असमान के ताव मोल
बिछाने लगे जातहौ खोल खोल

बटे-वाट^५ धग नवरतन के बिछाए
मुरस्सा^६ के खुश बारगाहौ^७ उचाए

कदम ज़ाफरों को गलाने लगे
गुलौ हाँज़खाने भराने लगे

१ शान शौकत २ हाँसला ३ प्रकट होना ४ एक बेशक़ीमती कपड़ा ५ हर रास्ते पर
६ हीरे जवाहिरात जड़े हुए ७ दरबार ।

पिसा मुश्क फुल नीर में घाल कर
दिखाए नवा एक वर्षगाल कर^१

मिले मजलिसों हौर वज़ीरों तमाम
सिलहदार^२, सरदार, अमीरों तमाम

रंगारंग हुआ शाह का भार सब
भलकने लग्या जड़त सिंगार सब

हुए मुस्तहिद^३ सब खुश आने के साथ
अनन्द पर अनन्द लक खुशियाँ धात-धात

रंगेला हशम^४ गत सो हर ठार रुच
छिपा गस्ता भार पर भार रुच

अपे शाह आसिम अधिक ज़ौक सँ
उमस^५ पाय कर मन में इस शौक सँ

निकल कर खड़ा ज्यूं शहे दानियाल
गुश्याँ थे खिल्या है वदन ज्यूं गुलाल

मँगा शाह तेज़ी पवन सा शिताब
न सावज रखे कोई उसका रिकाब

सो हाता मनें पेन कर हस्तकर
उतम जात तेज़ी के उपराल चढ़

एकस तरफ़ कैसर जो पकड़्या है ज़ीन
कि दूजी तरफ़ शाहे फ़ग़कूर चीन^६

चल्या सामने होने उस हूर कूँ
निल्लुल नूर के पाक सन्दूर कूँ

१ पिसा मुश्क... वर्ष गालकर—फूलों से बसे जल में पिसी हुई कस्तूरी इस तरह से से छिड़की जा रही थी, जैसे मानो वर्षा हो रही हो २ सिपाही ३ तैयार होना ४ शान-शोकेत ५ उत्साहित होना ६ एकस ...चीन—शाही के जुलूम में बादशाह घोड़े पर सवार था। उसकी शान इतनी थी कि मालूम होता था कि कैसर (रूम का बादशाह) और फ़ग़कूर (चीन का बादशाह) घोड़े की दोनों तरफ पकड़े चल रहे हैं।

दमामे लगे पीट सँ गाजने
बजन्तर^१ हरेक जिन्स के बाजने

उठे बोल जन्तर दोतारे^२ तमाम
लगे गावने गान हारे तमाम

अगर ऊद अंबर जलाने लगे
बुखूरो^३ के असमान छाने लगे

देखे लोग इस हूर के शाह कूँ
मिले सामने आके बहुमान सँ

हुए दो तरफ़ ते सलामाँलक्यो^४
मिले हौर खिले ज्यूँ कल्यो डालक्यो

दे ताज़ीम^५ सक्कें किया बातशाह
ले दुआल^६ सक्कें अपन सात शाह

ज्यूँ आया निकल शाह मैदान में
उजाला पड्य सातो असमान में

महलदार हर एक वो साहब जमाल
उड़ागे लगे शह वे तगटे^७ रुमाल

रुमालों के अक्साँ भलकने लगे
हवा पर सँ बिजल्योँ चमकने लगे

भरे थे हर एक ठार यूँ खासो आम
जो छुप गए थे एक धर ते तारे तमाम

मती हस्त आँगे मुहाते अथे
पहाड़ों मगर चल कर आते अथे

१ बाजा २ एक दो तारों वाला बाजा विशेष ३ धुआँ ४ सलाम-अलैकुम ५ इज्जत करना

६ अपने साथ लेकर ७ शाल दुशाले ।

हर एक हस्त बेमिस्त मक्कबूल^१ खूब
मुरस्ता की पीछ्यों उपर भूल खूब^२

तुरंग; बाव के पाँव^३ कई लक हज़ार
चितर में चितारे सके ना चितार

त्रिचकते अपने छाँव देक टाँव में
मुरस्ता के टोडर^४ हर एव पाँव में

नफ़ीरियों वो बुरग़म^५ उठे यूँ तराट^६
सिने आममाँ के गए फाट फाट

सक्रे^७ बादिर् भर ले फुल नीर गूँ
छिड़कने लगे चौकधन धीर गूँ

जो आहिस्ता डग डग चलाने लगे
मलिक लक वजा सां सराने लगे

नज़र तल दिस्त्या सारे आलम कूँ यूँ
सुलेमान शह, आरूस विलक़ीस^८ ज्यूँ

अपन शहर में शाह ज्यूँ आइया
महल्ला में सबको बुला लाइया

जो उस हूर की आई ज्यूँ पालकी
खुशी हुई ज्यादा नवल लाल की

शहंशाह ज्यूँ लाक दर्जे संगत
चला लेके खिलवत^९ में ताज़ीम सात

१ बहुत ही प्रसिद्ध २ मुरस्ता की... खूब—हाथियों की पीठ पर जो भूल डाली गई थी, वह हारे मोतियों से जड़ी थी ३ तुरंग बाव के पाँव—बहुत ही तेज़ चलने वाले घोड़े ४ घोड़ों के पैरों के कड़े ५ विशेष प्रकार के बाजे ६ बजने लगे ७ भिश्ती ८ मशक ९ सुलेमान... विलक़ीस—सुलेमान बादशाह जैसे अपनी दुलहिन विलक़ीस के साथ जुलूस में चल रहे हों १० रंगमहल ।

हुआ शौक पर शौक उस शाह के
 सो देख्या घूँघट खोल उस माह के

तजल्ली दिखत वई हुआ बेकरार
 सो दौड़ाइयाँ दिल को बेअख्तियार

लताफत सूँ कर मुलह हौर जंग के
 मदन कामता हो गया संग से

उसी रात उस सात सोहबत किया
 मदन कामिनी मद पे इशरत किया

खुशी सूँ लिया शाहजादी के हात
 बन्द्या उसके गौहर के अलमास सात

मयस्सर हुआ जौक दिन हौर रात
 अनन्द पर अनन्द लक खुश्याँ धात धात

एका एक जो कुदरत केरा बल हुआ
 कितेक दिन के उम्मीद का फल हुआ

सैफुल मुलूक का पैदा होना

इलाही जो साहब है संसार का
जो देता है मॅग्या मॅगनहार का

जो बेटा दिया शाह कूँ बेबदल
चँदर सूर ते खूब निर्मल निछल

सो हाशिम नवल शाह पाया उमस
बहर हाल फ़रज़न्द हुआ कर अपस

खज़ीने दफ़्तीने जो खोलन लग्या
रतन हीर के रास खोलन लग्या^१

गिनाया तुरत जग मनें काज यूँ
गिना ना सके जग में कोई राज यूँ

तुवा सँ उछाहात बहुत सिद्क सात^२
मॅग्या अपने फ़रज़न्द कँ बेहद ह्यात

खुश्याँ सात अमृत घड़ी फ़ाल^३ देक
सो सैफुल मुलूक कर रख्या नाँव नेक

जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर
ख़ुदा उसके हक पर हुआ दस्तगीर

उसी रात उसे एक बेटा दिया
दिवा उसके घर का सो रोशन किया

मुबारक घड़ी में देखत फ़ाल वो
सो साअद^४ कर उसका रख्या नाम सो

जो इस हाल थे शह कूँ अपड़ी^५ खबर
फुग्या सिर थे भी ख़ुरमी पाय कर^६

१ खज़ीने... लगा—पुत्र उत्पन्न होने की खुशी में उसने बहुत धन लुटाया २ सच्चे दिल से ३ जन्म-पत्री ४ सालेह वज़ीर के बेटे का नाम ५ (मराठी) मिली ६ फुग्या... पाय कर खुशी से फूल गया ।

बुला भेजिया बेग सालेह के तई
कया यों कि इस धात माँगता हूँ मैं

जो यू दोनों बालक मिल एक ठार अछे
बधैं एक दिल होके हौर यार अछे

मँगा भेज साअद कूँ वई शहरेयार^१
दो दायों रख्या दोनों को एक ठार

खुश्याँ रूँ नुजूम्याँ कूँ भेजा बुलाय
दिख्या शाहजादे के ताले खुला^२

सो ताले में उसके यूँ आया निकल
कि चौदह बरस में एका-एका अव्वल

बड़ा ग़म उसे मुख दिखलाएगा
गुज़र लई ज़फ़ा^३ उस उपर जाएगा

तमाशा देवेगा बहुत धात धात
हलाक होवेगा खल्क उसके संगत

वले शादमानी^४ है आखिर उसे
बड़ी कामरानी^५ है आखिर उसे

सुन इस बात कूँ शह बुरा मानकर
तवक्कल^६ किया अपने रहमान पर

बहर हाल दोनों को पालन लग्या
सो तिल तिल कूँ स्पन्द^७ जालन लग्या

बरस सात के ज्यै ये दोनों हुए
मुअल्लिम^८ कूँ एक खूब पैदा किए

१ बादशाह २ जन्म पत्री खेल कर देखना ३ बहुत बड़ी मुसीबत ४ खुशी ५ कामयाबी
६ भरोसा करना ७ राई, बुरा नज़र से बचाने के लिए राई जलाते हैं ८ उस्ताद ।

लेजा कर जो बसलाए मकतब मने
लगे पढ़ने दिन रात दोनों जने

किए इल्म तहसील^१ इस धात सँ
जो दम मार^२ कोई ना सके बात रू

हुए खुशनवीसी के यू धात में
जो साता कलम^३ आए थे हात में

तीरन्दाज़ ऐसे हो निकले वो दुई
बगवर उनन के न था जग में कोई

कवीदस्त^४ यू कस में कामिल हुए
जो रुस्तम ते एक धात फाज़िल हुए

हुए मुस्तइद ज़ोर साधन मने
रसीदे हुए हर हुनर फ़न मने

वले शाहजादा सो मकबूल था
मगर जीव के डाल का फूल था

अगर होय पैदा मुरज लाक लाक
तो आ न सके उसके सम कोई टाक^५

कर्धा भार सवारी जो जाता अछे
देग्वन शहर का खल्क आता अछे

जो कोई उसक देखे सो आशिक होवे
गवाँ होश बेहोश मुतलक होवे

तलबगार हो एक दिन आनन्द सँ
तलब जो किया शाह फ़रज़न्द कूँ

१ प्राप्त करना २ दावा करना ३ लिखने के सात प्रकार ४ ताक़तवर ५ मुकाबिले में
ठहरना ।

सैफुल मुलूक को दरबार में बुलाना

सो एक दीस सैफुल मुलूक जग उजाल
शहंशाह के जीव के चमन का नेहाल^१

मुहब्बत सों हो एक तन एक दिल
गुनी बख्तवर जान साअद सँ मिल

चल्या शह को तसलीम करने बदिल
अदब सात सर भूँइ धरने बदिल

देख्या शाह दोनो के तई जो निभा^२
सोने हौर रूपे के दो कुर्सियाँ मंगा

किया अम्र^३; बैसो ककर^४ दूइ कँ
लग्या देखने भर नज़र दूइ कँ

हुआ मन में खुशहाल इस धात सँ
कया जाय ना वो किसी बात सँ

उबलने लग्या प्यार का दिल में शौक
मँगाय खज़ीने में ते एक सन्दूक

सो चौधर जड़त यूँ जड़े थे उसे
जो ताकत न था उस निभाने किसे

वो सन्दूक खोल एक अंगुशती^५
भमकता नगीना सो ज्यूँ मुशतरी^६

निछल ज़रज़री खूब ज़रबफ्त^७ एक
यू दो बस्त कँ काड़ अपे शाह देक

सो सैफुलमुलूक के दिया हात में
हो खुशहाल बहुत ही च इसी सार्त^८ में

१ वृत्त २ गौर से देखना ३ हुक्म देना ४ कह कर ५ अंगूठी ६ एक तारा, जो बहुत ही चमकदार है ७ ज़रीदार कपड़ा ८ साअत (अरबी); समय।

मँगाया उतम ज्ञात तेज़ी अनूप
पवन साज़ जल्दी में अपरूप रूप

किया पेश-कश^१ हौर नवाज्या बहुत
बुलाकर कहा “ओ मेरे मन के पूत

यू तेज़ी उतम हौर यू अंगुशतरी
यू ज़रबफ्त निरमल निछल ज़रज़री

मरे तई दिए थे मुलेमान भेज
पर्याँ हौर देवाँ के मुल्तान भेज

अजब कुच खज़ीने में मेरे है यू
दिया हूँ तुजे मैं कि तेरे हैं यू

कि मुज तुज वरौर कोई फ़रज़न्द नई
अज़ीज़, अरज़ुमन्द^२ हौर दिलबन्द^३ नई

यू बुस्तो^४ तुम्हे आरजानी अछो
तेरी उम्र कूँ जावेदानी^५ अछो”

खुश इस धात फ़रज़न्द कूँ समझाइया
दे तशरीफ़^६ दोनो कूँ बहुगइया^७

१ तोहफा देना २ लायक ३ दिल का डुकड़ा ४ बाग ५ हमेशा के लिए ६ लिबास देकर
७ बहुराना, लौटाना ।

तसवीर पर रीझना

अजब रात निर्मल थी उस दिन की रात
भ्रमकते थे नूरों में लक धात धात

निकल आये कर चाँद तार्यों सिते
भ्रमकता अथा जगमगार्यों सिते

निछल चन्दना सत्र में पड़ता अथा
सो ज्यूँ दूध केरा वो दरिया अथा

बने-बन पवन मकमकाती अथे
चमन दर चमन लकलकाती अथे

खुश ऐसी निछल चन्दनी देख रात
ले साअद कूँ सैफुल मुलूक अप सँगात

सुराही वो प्याले की मजलिस भर आप
लगे ज़ौक सों पीने भर-भर शराब

निछल गान हारे सो गाने लगे
रिझने के बाजे बजाने लगे

मजालिस जमे राग हौर रंग रूँ
हुए मस्त प्याले केरे संग सँ

अधी रात गमते हुई ऐसे धात
रहे मॉदे हो नींद केरे सँगात

हुए लोग एक धर थे सत्र टारे-टार
एकट^१ शाहज़ादा सो था हुशियार

एकएक सो दिल कूँ लग्या ज्यूँ तलाश
सो बेमिस्त ज़रबफ्त का वो क्रमाश^२

देख्या खोलकर सर बसर ज्यूँ उनें
सो तसवीर पाया अजब उस मनें

वो तसवीर देक वई दिवाना हुआ
वहीं इश्क का उसकूँ भाना हुआ

अपस मैं लग्या रोवने ज़ार-ज़ार
सो पड़ने लग्या बेखबर ठार-ठार

वो सूरतनज़र मैं रही चूब कर^१
सो जागा किया दिल मनें खूब कर

दिया संग सार्यों केरा छोड़ कर
लिया खींच दम सब थे मुख मोड़ कर

अधारे भरी कोठरी में एकट
सो जा पर रह्या बेखबर हो निपट

इश्क में दीवाना होना

जो साअद हुआ नींद से हूशियार
लगा देखने तई आँखों पसार

नज़र नई पड़्या शाहज़ादा कहीं
लगा ढूँढ़ने हैरान हो हर कहीं

सो पाया आँधारे मने एक टार
पड़्या था अकेला दुःखें बेकरार

आँभू^१ आँखियों में थे ढलते अये
नद्यों होके दो धरती चलते अये

न ज़रा खबर कुच उसे ज़ात की
न ताक़त ज़बाँ को है कुछ बात की

जिता साअद उसकू उचाने^२ कू जाय
जिता पाँव पड़ कर मनाने कू जाय

विता अपसं दिखलाये बेहोश कर
न दे ज्वाब चुप रहे फ़रामोश कर^३

उदया साअद उस देक कर तलमला
लिया हैबतों सू कमर बैस ला^४

जो दर हाल शह कू खबर जा दिया
एकाएक शह का सिना तड़प्या

जो देखन कू बेटे के आया नज़ीक
सो बेताब सख्ती च पाया अदीक

कया यू नुजुम्यों केरा कौल है
वही रंज है हौर वही हौल है

१ आँसू २ उठाना ३ भूल जाना ४ डर के मार कमर बैठ गई; पस्त हिम्मत हो गया ।

जो कुछ शाह केरा जो ईमान था
सो सैफुलमुलूक जाव सो जान था

मुलुक माल पर शह कूँ दिल ना अछे
देखे बाज बेटे कूँ तिल ना अछे

जो मजलिस भराने^१ के तई भार जाय
तो फ़रज़न्द कूँ दिल मने याद लाय

कर्धी ठुक जो दिलगीर^२ पावे उसे
निकल धड़ में ते जीव जावे उसे

सुबह उठ बला दूर दे वेशुमार
हती हौर घोड़े हज़ारों हज़ार

सुवों हौर रूपा वॉद खंड्या^३ बटाय
जवाहिर के रासों लेकर आ लुटाय

देख्या यूँ जो बेताब एक बारगी
कमर बैस गई हौर लगी तगवगी^४

को उस वक़्त पर किस कूँ ना कर खबर
मवादा^५ नज़र कुच लगी होय कर

दुवायों कूँ धो-धो पिलाने लग्या
लिख्या ताविज़ों ल्या बंधाने लग्या

१ दरबार में बैठने २ रज़ीदा ३ बीस मन की एक खण्डी होती है। यहाँ 'देर'
इस अर्थ में प्रयोग किया गया है ४ बेचैनी होना ५ कहीं ऐसा न हो।

सैफुल मुलूक का इलाज करना

जिते थे हकीमाँ अपन शहर के
हलब, चीन और मावरलूनहर^१ के

शिताबी सूँ फ़रमान सादिर किया
वित्याँ कूँ बुला भेज हाज़िर किया

किते वज़ा सों सबके दिल हात ले
कया मेहरबानी सेती ला गले

जो फ़रज़न्द मेरा है सैफुलमुलूक
फ़िदा उस पे थे माल और यू मुलूक

मुजे उस बग़ैर कोई फ़रज़न्द नई
अजीज़ अरजुमन्द और दिलबन्द नई

हुआ है एका एक जो बेताब यू
कि देता नहीं है किसे ज़वाब यू

करेगा दवा जो कोई दर्द फ़ाम^२
देऊंगा उसे बादशाही तमाम

सुन इस बात कूँ शाहे गंभीर ते
उठे सब हकीमाँ सो एक धीर ते

कहे शह कूँ “सब दर्द हमन फ़ाम है
करेंगे दवा यू कित्ता काम है”

हकीमाँ देखन नाड़ी ज्यों आये हैं
दर्द ज़ाहिरा कुच नहीं पाये हैं

हुए एक तरफ़ ते पशेमान^३ सब
रहे दर्द ना फ़ाम हैरान सब

१ देशों के नाम २ दर्द समझना, बीमारी मालूम करना ३ परेशान होना

जो उस दर्द का जिन्स^१ कुछ होवता
तो दारू व दर्मन^२ का रुच होवता

सर्चीं हर दर्द कूँ है हर कई दवा
वले इश्क के दर्द कूँ नई दवा

अछे जिसके तई इश्क का दर्द जो
बिचारे हकीमों करें क्या कहो

मुसल्लम शहंशाह हुआ ला इलाज
न था काम उसे कुच बैठे रोये बाज

हुआ घावरा शादमानी सट्या^३
निपट नींद दाना वो पानी सट्या^४

१ कारण २ दवा ३ खुशी खतम हो गई ४ भूल-व्यास खतम हो गई ।

साअद का सैफुल मुलूक के सामने जाना

सो एक दीस आये वज़ीरों सकल
कहे शाह कूँ यूँ कि “ऐ शह नवल

कुच इस बात तदबीर करना भला
कुच इस फ़िक्र में पॉव धरना भला

न होना इते वज़ा^१ सूँ घावरा
कि रहना तुज इस धात सूँ है बुरा

सरांदील^२ तेरा सब पशेमान है
दुःखी हो मुसल्लम परेशान है

अपन दर्द थे हो अपे दर्दनाक
नज़िक है जो सैफुल मुलूक हो हलाक^३

भला है जो साअद टुक उसके नज़ीक
अछे उसके दुःख दर्द में हो शरीक

वही उसके दिल का सो अन्त पायेगा
वही उसकूँ मार्ग मनं लायेगा”

शहेशाह कूँ खुश लग्या यूँ विचार
दिया भेज साअद कूँ बेटे के ठार

गया शाहजादे के ज्यूँ वो नज़ीक
लग्या रोवने ज़ार उसने अदीक

कहा यूँ “कि ऐ लाल साहब जमाल^४
न सूरज चन्दर में है तेरा मिसाल

तेरा नूर हर ठार मामूर अछो
तेरा दिल खुश्याँ साथ जमपूर अछो^५

१ तरह २ आस-पास के लोग ३ अपन दर्द थे..... हलाक—कहीं ऐसा न हो कि अपने रंजोशम से खुद ही बहुत ज्यादा तकलीक उठा कर सैफुल मुलूक मर जाए ४ बहुत ही खूबसूरत ५ तेरा दिल.....अच्छो—तेरा दिल हमेशा खुशी से भरा हुआ रहे ।

है मुज नैन कूँ नूर तुज नूर थे
सदा सूर^१ मुजकूँ तेरे सूर थे

अधर खोल मुज सात कुछ बोल तू
तेरे दिल में क्या है सो कह खोल तू

कि तेरा सदा मैं वफ़ादार हूँ
हर एक ठार तेरा मैं ग़म खार हूँ

एका एक यूँ आया है क्या फ़िक्र तुज
लग्या है किस्सू ध्यान दौर ज़िक्र तुज

नज़र किस सूरज पर पड़ी जग केरे
जो यूँ नित उबलते हैं जल के भरे

तेरा चोद किन है; तू किस का चकोर
जो तिल-तिल कूँ होता है तू तोर-तौर^३

कहे बाज तू कुच मुझे फ़ाम नई
मुने लग मेरे दिल कूँ आराम नई

मुजे खोलकर तू कहे तो भला
वगर नई तो मैं काट लेऊँगा गला

कमर में ते वई अपने खंजर कूँ काड़
गया आपना पेट लेने कूँ फाड़

देक ये हाल दर हाल सैफुल मुलूक
पकड़ हात साअद केरा देक मूक

बिरह आग सँ जलबला आह मार
अंगारे नयन में ते डाल्या हज़ार

पछान्यो^२ कि साअद वफ़ादार है
अपन दूख दौर दर्द का भार है

वो ज़रबश्त का पारचा^१ लाइया
 जो थी सूरत उसमें सो दिखलाइया
 कहा "मैं इसी का दिवाना हूँ भोत
 अगरचे अपन ठार दाना हूँ भोत
 यही रूप लुब्धाइया^२ मुजे
 यही हुस्न बेसुध किया है मुजे
 कहीं रूप दुनिया में इस सारका
 न देख्या है कोई खल्क संसार का
 कि लगती है लई^३ दिल को हैरानगी
 न जानू छुटे क्यों यू दीवानगी"
 सुन्या राज़ साअद अपन यार ते
 रज़ा लेकर आया जो उस ठार ते
 शहंशाह कूँ तसलीम आकर किया
 सो वो सूरते हाल सब बोलिया

परियों का ज़री का कपड़ा लाना

अजायब लगा^१ शह कूँ इस भेद पर
कह्या खोल तो सब कूँ यूँ सर-बसर^२

“वो ज़रबख्त जो मैं दिया था उसे
जो खुश हो इनायत किया था उसे

मैं एक दीस बैठा अथा तख्त पर
सो देख्या एकाएक उसी वक्त पर

जो बारा^३ उठा एक बड़े जोर का
धुलारा^४ उठा सख्त शर शोर का

छिपा था गगन इस धुलारे तले
परेशान था खल्क बारे तलें

सो वैसे में वाँ ते निकल भार कूँ
कितेक शह पर्याँ ऐन भलकार सँ

मेरे तख्त के आँगे आयाँ तमाम
कियाँ मुजकूँ देक एक तरफ़ थे सलाम

कह्याँ मुजकूँ “ऐ साहबे तख्त व ताज
हमन कूँ मुलेमान भेजा है आज

वो ज़रबख्त का पारचा लाइयाँ
मेरे आँगे रख खोल दिखलाइयाँ

जो था इस मने सूरते बे-नज़ीर
भुल्या देख सूरत वो मेरा ज़मीर^५

लिया मैं उसी वक्त परियाँ में अंटे^६
किया सूरत किसी कब है पाया मैं पंटे^७

१ अजीब लगा, आश्चर्य हुआ २ शुरू से आखिर तक ३ आँधी ४ बवंडर ५ दिल
६ छीन लेना ७ पंथ, रास्ता, रास्ता पाना, मालूम कर लेना ।

कह्याँ खोल यूँ मुज उपर कर करम
यूँ ल्यायाँ हैं अज़ गुलिस्ताने-एरम^१

कि है शह परी-एक वदी उल् जमाल
सो यूँ पाक सूत है उसका मिसाल

वो शहवाल बिन शाह रुख राज की
सो बेटी है अति शर्म हौर लाज की^२

परे हौर परियाँ जहाँ लग तमाम
करें आके शहवाल कूँ सब सलाम

वो ज़रबख्त बेमिस्त ना होवे कर
एक अंगुश्तरी एक तुरग तिस उपर

लेकर आयकर पेश कश मुँज कियाँ^३
एकाएक सब शैव होकर गयो

न जान्या मैं इस धात होयगा ककर
कि असला न था कुच मुँजे यूँ खवर

सुलेमान तो नई है जीता अताल
कि दिसता है मुज सर-वसर काम धाल

यहाँ कौन ऐसा है जान हौर पछान
जो देवे गुलिश्ता-एरम का निशान

लगे फ़िक्क आ शह कूँ इस धात का
मोअम्मा^४ दिस्या मुश्किल इस बात का

अँदेशे मने पड़ हो दिलगीर अदीक
हलूँ शाहज़ादे के आया नज़ीक

१ जन्नत का बर्गान्वा; यहाँ किसी स्थान विशेष के लिए प्रयुक्त हुआ है २ वो शहवाल... लाज की—वह शाह रुख के बेटे शहवाल की बेटी है, जो बड़ा शर्म और लाज वाली है ३ वो ज़र बख्त..... मुँज कियाँ—उन परियों ने उस वेश क्रीमती ज़री-कपड़े के अलावा, एक अँगूठी और एक घोड़ा भी दिया ४ समस्या ।

कह्या ऐ मेरे मन के नूरी निहाल
उजाला दो जग का सो तेरा जमाल

तू जिस रूप केरा दीवाना अहे
वो हूँदने सो आलम में पाना अहे

उताला नको हो कि तुज ज़ियान है
उताला करनहार नादान है

तुजे इस वक़्त पर सबूरी^१ भली
तू आकिल है तुज अकल पूरी भली

पछानत सिती खूब पहचान तू
न कर सँ अपस कू परेशान तू

कितेक दीस खातिर^२ कू टुक जमा राक^३
दरद दूःख ते कर ले सीने कू पाक

जो लेऊ परे^४ मै कला हात पाँव^५
खबर तेरे मक़सूद की ठाँव ठाँव

जो इस धात सँ मंग मुहलत लिया
सो लोगो कू मुल्के मुलुक भेजिया

पतिया^६ बाप की बात सैफुल मुलूक
रह्या दम पकड़^७ छोड़ दे दर्द दूक

लग्या फिरने खुशहाल साअद सँगात
पकड़ कर रह्या वो उसे दिन व रात

१ सब्र २ (फ़ारसी) दिल ३ मन को चैन से रखना ४ पहले ५ हाथ पाँव चलावना, कोशिश करना ६ विश्वास करना, भरोसा करना ७ सब्र रखना ।

गुलिस्तान एरम की खोज

गोहर सेज़^१ इस बेवदल-गंज^२ का
कहे खोल यूँ किस्सा इस रंज का^३

जो गए थे रसूलों^४ तमाम एक बार
लगे ढूँढ़ने आलम मने ठार-ठार

सो ढूँढ़ने लगे कर उताला तमाम
सटे जाके आलम पे जाला तमाम^५

खुरासान, रूम हौर शाम हौर खुतन
हवश हौर गुजरात दिल्ली दखन

इराक हौर शीराज़ रै^६ हौर खुज़न्द
बुखारा; बलख; यज्द हौर समरकन्द

समनजान, काशान, संजान सब
हलब, चीन, तूरान, ईरान सब

मखा^७ आगरा हौर सगल पुर्तगाल
सो मशरिक वो मगरिब, जुनूब हौर शुमाल

लंका, पड़लंका^८ हौर बंगाला वो गौड़
बिचारे जिधर के उधर दौड़-दौड़

गए एक तरफ़ थे जगत् तल उपर
न पाए गुलिस्तान-एरम का खबर

बरस एक लग सब परेशान हो
फिर आए मिसर कूँ पशेमान हो

१ मोती रोलनेवाला, अच्छे अन्दाज़ में कहानी कहने वाला २ ऐसा खजाना, जिसका मुकाबिला न हो सके ३ गोहर संज... .. रंज का—यह कहानी एक वेश क़ीमती खजाने की तरह है और कहनेवाला मोती रोलने वाले की तरह है । उसने यहाँ से दुःख से भरी कहानी का कहना प्रारम्भ किया ४ दूत ५ सटे... .. तमाम—उन्होंने सारी दुनिया में अपना जाल फैला दिया ६ ईरान का एक शहर ७ मक्का ८ लंका से भी और आगे ।

मुन्या ज्यूँ यू अहवाल सैफुल मुलूक
लग्या गम पे गम करने हौर दुःख पे दूक

अंधारे भरे घर मने जाय कर
पड़्या धरतरी^१ पर सो अड़ड़ाय कर^२

सिना गम सिती कूट लेने लग्या^३
कर उस नार कूँ याद गेने लग्या

सबूरी के पहिरन कूँ टुकड़े किया
सो बेहोशी के हात अपनें दिया^४

लग्या इश्क दिन रात काढ़ा उसे
अड़ाया निपट होके आरा उसे^५

सँगाती को अपने पुकारन लग्या
न सह-दुख विरह आह मारन लग्या

करे याद तिल-तिल रोवे ज़ार-ज़ार
पड़े वेखत्र होयकर टार-टार

खत्र पायकर टुक जो हुशियार होय
नज़ीक आपने तां नहीं देग कोय

वो सूत रखे आपने नयन-तल
उस ऊपर ते जावे अधीक बल-बल^६

कहे यूँ कि मुज मन की दिलदार तू
मेरे मन में निसि-दिन बसनहार तू

तू किस समुद की ढाल मोती है कि
तू किस खान की लाल ज्योती है कि

१ धरित्री, पृथ्वी २ जोर से गिरा ३ सिना... .. कूट लेने लग्या—गम से छाती पीटने लगा ४ सबूरी .. अपने किया—उसकी सब खतम हो गई और वह बेहोश हो गया ५ लग्या इश्क आरा उसे—इश्क ने आरे के समान उसे नष्ट करना शुरू किया ६ बलि-बलि जाना, न्योछावर होना ।

किस असमान की है चन्द्र-भान तूँ
किस अकलीन^१ की री है मुल्तान तूँ

है फुल डाल तूँ किस गुलिस्तान की
भूमकली शमा किस शबिस्तान^२ की

जो इस धात तूँ मुजकूँ लुब्धाई है^३
मेरे मन कूँ चित आपना लाई है

न जानूँ तुजे किस घड़ी पाऊँ मैं
सो क्यों हूँद काटूँ तेरा ठाँव मैं

न कुच इश्क का मुँज खबर था अवल
न कुच बिरह का मुँज को डर था अवल

तुही मुज पिरित लाग ते यूँ निदाल^४
रहूँ क्यों सबूरी सो तुज त्रिन इताल

दिने-दिने इसी धात बैठा अछे
देखें उस पियारी कूँ जीता अछे

नवल शाह आसिम लग्या तलमलन
दुःखी पूत कूँ देख फिर-फिर जलन

रह्या सूख दुबला तुनक तार हो^५
निपट ज़िन्दगानी से बेज़ार हो

अपस में अपें भर ठण्डी सर्द उसास
क्या आयकर अपने फ़रज़न्द पास

कि ऐ बेवदल^६ नूर दीदे मेरे
अजब कुच देख्या हूँ मैं ताले^७ तेरे

जो कुछ फिक्र तुज हक पे करना अथा
बजिद होके मैं कर दिखाया चिता

१ मुल्क २ महल ३ लुब्धाई है, आकृष्ट की है ४ शक्तिहीन हो जाना ५ तार के जैसा
दुबला पतला होना ६ ला जबाब; जिसकी तुलना न हो ७ किस्मत ।

जगत् कूँ तल ऊपर कराया तमाम
सो मुल्के मुलूक उस ढूँढ़ाया तमाम

हुआ नई कुच इस हद लग इज़हार अर्भू
इसी से पढ़ाया नई यूँ कित भार अर्भू

लग्या है परी सात तेरा जिया
न समझे किसी धात तेरा जिया

परी कूँ किनें जाके ल्या ना सके
कहाँ है सो किन खोज पा ना सके

मुजे कुच सो तदबीर दिसता नहीं
सो क्यों है कि तकदीर दिसता नहीं

करेगा अगर मालो धन एख्तियार
तो देउंगा तुजे बेहदो बेशुमार

अगर पादशाहों के बेठ्यों में कई
दिल अछता तो देता मिला तुजकूँ मैं

सैफुल मुल्क का जवाब

मुन्याँ सिर थे सैफुल-मुल्क जूँ यू बात
हो तग़य्यीर^१ अपस में अपे धात-धात

क्या “ऐ शहंशाह अगर लाख हूर
उतर आयें जन्नत ते मेरे हुजूर

तो ज़र्री न हो किस पे मेरा खयाल
मुजे हो तो होना बदीउलजमाल

किया सई^२ तू लई मेरे काम में
लिया रंज सर खास हौर आम में

न कीता मेरे हक पे तक्रसीर तू
किया करने के धात तदबीर तू^३

हुआ दुःख तुजे मुज कदन^४ ते ज़ियाद
बले नई हुआ तुज ते मेरा मुराद

मेरे दिल में आता है अब यू खियाल
जो लेऊ रज़ा तुज कने ते इताल

फिरूँ जाके आलम के चौफ़ीर^५ में
अपे हो करूँ अपनी तदबीर में

सो कैसा है देगू दरिया का सफ़र
जो लेऊ गुलिस्ताँ-एरम का ख़ज़र

लिख्या होय तो हर सनद पाऊँगा
मेरे आस थे मैं वरास^६ आऊँगा

भला है जो लाना मुजे बेगी बात
कि बहुत ही न पकड़या मुँज दिल उचात

१ (अरबी) बदल जाना २ (अरबी) कोशिश ३ न कीता.....तू—आपने मेरे लिए कोई प्रयत्न उठा न रखा ४ मेरी तरफ से, मेरी वजह से ५ चारों तरफ ६ आशा का पूरा होना ।

लगे विरह उसका सो ज्यू खर्ग मुंज
यू जीना अख्यो तल दीसे मर्ग मुंज^१

अपन मन में पैदा कर ऐसा खयाल^२
पड़या बाप केरा मुसल्लम दुंवाल^३

जो था शाह अव्वल ते रंजूर पूर
हुवा सिर ते भी दुःख तले चूर-चूर

किते वज्रा सू तलमलाने लग्या
गोते गम के दरिया में खाने लग्या

क्या यू कि फ़रज़न्द मुजे है सो एक
क्यों उस एक कू देऊँ रजा देक देक

सकत है जो बिन तख़्त बिन ताज अछूँ
वले ताब नई मैं जो उस बाज अछूँ

किते करन पीछे मुजे जुलजलाल^३
दया कर दिया है यू नूरा निहाल

नयन तल थे क्यों मैं भगाऊँ उसे
सितम क्यों ग़रीबी में बहाऊँ उसे

मेरा दीन यू हौर ईमान है
मेरा जीव उम पर ते कुरवान है

कितेक बार कू फिर अदेशे सगात
कहने लग्या क्यों रग्यू कैद सात

मवादा^४ दुःखो ते सीना फोड़ ले
मवादा यू जीवन ते दिल तोड़ ले

१ लगे विरह.....मर्ग मुंज—उमरी जुदाई मुझे तलवार की तरह तकलीफ पहुँचाती है; उसके बिना जीना मेरी आँखों में मौत के समान है २ पड़या बाप . दुंवाल—अपने मन में ऐसा खयाल करके अपनी बात को पूरा कराने के लिए, वह अपने बाप के पीछे पड़ गया ३ महान्, ईश्वर ४ कहाँ ऐसा न हो ।

दोजा हौर नई है जो करूँ कुच उसे
किया है निपट इश्क़ तूँ हेच उसे

भला जो खुदा पर तवक्कल^१ करूँ
उसे बाट लाने केरा बल करूँ

सफ़र जाके या मन के मक़सूद पाए
जफ़ा दुक ते खिचवा के या फिर के आए

यू दो हाल थे काम खाली नहीं
बिन इस फ़िक्र ते फ़िक्र हाली नही

बरस पाँच के मुस्तएदी^२ किया
दिल उसका मँगे तूँ दिलासा दिया

नवल शाह आसिम शहे कामियाब
बुला भेज कारीगरों कूँ शिताब

सो फ़रमाइया कश्तियों बेनज़ीर
एक-एक कश्ती एक-एक दरिया गँभीर

हर एकस में हुज़रे^३ किते तरह के
निछुल तख़्त-पोशे घरों फ़रह के^४

बजह तर भज़र नक़श का टार-टार
जहाँ का तहाँ काम खूब उस्तवार^५

करे इस वज़ा तीन साँ कश्तियों
देक उस कश्तियों कूँ भुले भिश्तियों^६

कुदूरत^७ उसे होय न तूँ बाट में
न दुःख दाट आए क्यों जंगल घाट में

१ (अरबी) भरोसा २ तैयारी किया ३ कमरे ४ खुशी के घर, खुशी और आनन्द देनेवाले
५ मजबूत ६ देक उस... ... भिश्तियाँ—इन कश्तियों को देख कर भिश्ती भी आकृष्ट हो
जाते थे ७ तकलीफ़ ।

कितेक माहूर्यो^१ कैं खुश नाज़ के
 कितेक मुतरिबाना^२ खुश आवाज़ के
 कितेक खुश ज़राफ़त के निर्मल ज़रीफ़
 कितेक बे बदल किस्सा खाना हरीफ़
 कितेक खण्डियों अरग़वानी^३ शराब
 कितेक जिन्स के न्यामतों बे हिसाब
 कितेक खूब तोहफे कितेक कगोड़ माल
 कितेक ज़ात तेज़ी पवन के मिसाल
 कितेक फ़ौज़ लश्कर केरे बेनज़ीर
 कितेक दोले सौदागरों के गंभीर
 कितेक जिन्स के खूब बाँदी गुलाम
 अपे हो बजिद^४ मुस्तइद कर तमाम
 कितेक जिन्स का मूर्त^५ कर वेशुमार
 दे सार्यों कैं तरतीब सब एक बार
 हर एक काम पर शह अपे हो बजिद
 जो कुच करने का था किया मुस्तइद
 समज धात इस वफ़ा दैर का
 खुदा ते मदद मंगले खैर का
 दे साअद कैं सैफुलमुलूक के दुवाल
 खाना किया हौर हुवा वई निटाल
 लग्या रोने फ़रज़न्द के ध्यान में
 बुला भेज वई अपने परधान^६ कू
 किया मुल्क उसके हवाले तमाम
 मोजा खाली घर में अपे मुवह-शाम
 इयादत सैं मशगूल हो रात दिन
 दुवा सात चित लाइया छीन-छीन^७

१ माह, (चन्द्रमा) के समान सुन्दर औरतें २ मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले ३ नारंगी
 रंग का ४ कोशिश के साथ ५ सामान ६ प्रधान ७ क्षण-क्षण, हर समय ।

गुलिस्तान परम की खोज में

करनहार सैर इस पिरित घाट का
देवे काढ़ मार्ग^१ थूँ उस बाट का

जो साअरद वो सैफुल मुलूक जहाज चढ़
चले गुलगुले सात दरिया में पड़

तले साफ़ पानी उपर आसमाँ
बरसता हवा मोअतदिल^२ दरमियाँ

सभा वरूश चौधीर मौजों गँभीर
तमाशे कितेक इसे मने बेनज़ीर

सो देक ज़ौक पाने मने धात-धात
चलाने लगे जहाज़ दिन हौर रात

सो नज़दीक ज्यू चीन के आइए
सो जासूस वाँ के खबर पाइए

कहे जाके वई शाहे फ़राफूर^३ धीर
कि आता है फ़ौजों सूँ लश्कर गँभीर

न जाने किधर चाल करते हैं वो
वले इस तरफ़ ख़्याल धरते हैं वो

सुने बात फ़राफूर हुशियार हो
किया मुस्तइद आपना ठार वो

खबरदार लोगों कूँ कर कोट के
दिला सारे दरवाज़े गढ़^४ कोट के

चुन्याँ खूब कूँ अपने ख़ासा मने
दिया भेज कर शाहज़ादे कने

पुछाया कि “तुम क्या सबब आए हो
तुमें कौन हैं ? दिल में क्या ल्याये हो

१ रास्ता निकालना, उपाय निकालना २ सम्म शीतोष्ण जलवायु ३ चीन का बादशाह

अगर दोस्ती की जो कुच बात है
तो फ़रमाओ, कुदरत मेरे हात है

अगर कुच अछेगा तलब माल पर
हती हौर घोड़े रतन लाल पर

इशारत^१ करो ल्यो मुज पास ते
वरास^२ हो उतम आपने आस ते

जो कुल्ल है सो कह भेज देवो शिताब
मेरे पास ते ज्वाब लेवो शिताब^३”

जो वो शाहज़ादा गुनी नेक नाम
सुन्या मूँ ते हाजिब^४ के बातों तमाम

जो कोई आए थे देवने यू खबर
उनन शाहज़ादा बुला भेज कर

अपन सामने सबकुँ बसलाइया
जो कुच कये सो खातिर मने लाइया

हँसा खिलखिला हौर उठा बोल यूँ
उनन खुश हुए ल्यूँ क्या खोल यूँ

कि “जा यूँ कहो शाहे फ़राफ़ूर सात
कि कुच काम नई मुभकुँ तुमना सँगात

रखो खातिर अपना तुमें जमा कर
कि नई है मेरा दिल किसी तमाँ पर

मेरे पास है माल व धन बेक़यास
जो कुच वस्तु होना सो है मेरे पास

वले इश्क के मुल्क का सय मैं
करनहार निकल्या हूँ; कुच ग़ैर नई^५”

१ बतलाओ, इशारा करो २ आशा का पूरा होना ३ दून ४ (अरबी) लालच ।

कि इस धात सँ कये वो हाजिर सँगात
दे खिलअत किया खुश तमाम उसकी ज्ञात

खुशी सात फिर वॉ ते सब वो जने
जो फ़राफ़ूर के आए ख़िदमत मने

अदब सात एक धर ते कीते सलाम
कहे खोल कर वो हकीकत तमाम

किए शाहजादे की तारीफ़ या
सो फ़राफ़ूर खुश हो गिल्या फूल ज्यो

मुहब्बत जो वई मन में ग़ालिब हुआ
देखन शाहजादे कँ तालिब हुआ

सरब दल के दुबाल^१ ले दल पे दल
मिलन आइया आप फ़राफ़ूर चल

मिल्या शाहजादे सँ ताजीम सात
चल्या शहर में लेके तकरीम सात

सो निकल्या वही खुशगवी शान सँ
मिल्या हौर चल्या ले के बहुमान सँ

बंडू दाव की मेहमानी किया
ज़ियाफत भली खुशख़बानी किया

ज़ियाफत उपर कर ज़ियाफत^३ ज़ियाद
किया शाहजादे के हैं रू कँ शाद

तमाम उसके लश्कर से मिल चन्द रोज
लग्या वार, हो करने आनन्द जोर^३

जिते आए सो शाहजादे के सात
वित्थो कँ किया तशरीफ़^४ धात धात

१ पीछे २ अधिक आतिथ्य करना ३ लग्या.....आनन्द जोर—यह अधिक आनन्द भी
उसे भार हाने लगा ४ इनाम देना ।

दिया खिलअत्ता^१ सबकुँ यूँ वेशुमार
जो दिग्बने लग्या भार ज्यूँ नौबहार^१

रख्या पाँच जो दीस खुशहाल कर
मुहब्बत सूँ वाकिफ़ हुआ हाल पर

मुरब्बत सूँ शहज़ादे के मन में पैस
लिया अन्त दिल का मिल एक ठार ब्रैस

जो कुच शाहज़ादे के मकसूद थे
सो खातिर मने सर-बसर ल्यावने

तलब चीन के सब चितारयाँ को कर
लिया गुलिस्ताने-एरम का खबर

सो उसका मुनें भी न थे नाम वाँ
यूँ हगिज़ किसी कुँ न था फ़ाम वाँ

नहीं दे सके कोई उसका निशाँ
किसी थे हुआ नई यकीन व गुमाँ

सो उस वक्त एक सौ सत्तर बरस का
बुढ़ा मर्द एक कोई उस ठार था

बुला कर तफ़्हुस^२ किए उस थे ज्यूँ
सो वो पीर मर्द आ दिया जवाब यूँ

कि दायम^३ दरिया फिर के देख्या हूँ मैं
बले गुलिस्ताने एरम कई तो नई

मगर शहरे कुस्तुनुनियाँ मे जो कोई
खबर दार इस बाग़ थे, होइ तो होइ

कि आता है वो खल्क लई दूर का
मुसाफ़िर जिता सातो सन्दूर कर

१ किया खिलअत्ता... ज्यूँ नौबहार—उसने लोगों को इतने रंग-बिरंग पोशाक दिए कि, बाहर ऐसा मालूम होने लगा कि वसन्त ऋतु आ गई है २ पूछना ३ हमेशा ४ लोग ।

ज्यों उस ये सुन्या शाहज़ादा यू बात
अपन दिल कूँ दे फिर उताले के हात^१

हुआ शह के एहसान का हकगुज़ार
किया लई दुवा हौर सना^२ बेशुमार

हज़ार आरजू सात धर मन में आ
चला वई रज़ा लेने फ़राफ़ूर पास

रज़ा मँग ली वई हुआ मुस्तइद
सो उस शहर लग जावने हो बजिद

तमाम अपने लश्कर सू कश्याँ में बैस
चल्या इश्क के बल सू दरिया में पैस

शिताबी सू जा आँपड़या उस नगर
सो लोगोँ कूँ वोँके बुला भेज कर

लगा पूछने “गुलिस्ताने एरम
कहो बेग मरे उपर कर करम”

कहे लोग वोँ के “कि सुन ऐ जवों
कि हम जानते नई एरम का निशों”

चल्या शाहज़ादा वहाँ ते निकल
अभू डालता मोहनी के बदल^३

पयापै^४ कितेक दीस कश्याँ चलाए
सो एक ठार दरिया के दरम्यान आए

सो औकल कज़ा हौर क़टर आ ग्वइया^५
सो काम आ किधर का किधर आ पड़या

१ उतावला होना, बेचैन होना २ तारीक ३ अभू..... बदल—अपनी प्रेमिका के लिए
आँसु बहाता हुआ चला ४ (फ़ारसी) लगातार ५ सो औकल..... खड्या—ईश्वरच्छा से
उनके मार्ग में कुछ परेशानी आई ।

एकाएक उठा बाव तूफान का
दर्या कूँ चढ़था ताव तूफान का^१

निपट आण थे डाट काले अमाल^२
छिपा सूर हौर चाँद पकड़था पताल

बरसने लग्या मेग उपराल थे
न बरस्या कधी यूँ बरशगाल^३ थे

पड़था गिर्द चारों तरफ़ अन्धकार
कड़कने लग्यो बिजलियो ठार-ठार

न दिन फ़ाम होता समझते न रात
हुआ रात हौर दीस मिल एक धात

खुदा सँ पड़था आके सार्याँ कूँ काम
भरोसा सटे^४ जीवने का तमाम

कि दरिया उबलने लग्या शोर सँ
उठे मौज तूफान के जोर सँ

हुयो कश्तियाँ दरहम^५ एक धीरते
रह्या खल्क आजिज़ हो तदबीर ते

भर आया जहाज़ों मने आव सब
गँवाता गया माल व असबाब सब

बड़ा कुच हुआ तफ़रका हौलनाक^६
हुए लोग लई एक तरफ़ ते हलाक

उठ्या मौज ज्यूँ वो बहती वहीं
चली शाहज़ादे की कश्ती कहीं

हुआ जहाज़ तूफान ते चूर-चूर
मलिक हौर साअद पड़े दूर-दूर

१ समुद्र में तूफान उठने लगे २ बादल ३ वर्षा काल ४ आशा खतम होना ५ तितर-बितर होना ६ दुःखदायी अलगाव ।

बला साअद अपसीस ले धात-धात^१
 चल्या वो कहीं अपनी कश्ती संगात
 तरफ़ रुम के जाके साअद पड़्या
 हबश मुल्क कूँ जाय तइता लग्या
 लगा लग इसी धात चालीस दिन
 हर एकस पे तूफ़ान गुजर्या कठिन

बला साअद .. . धात-धात—साअद तरह तरह की सुसीबते अपने सर लेके चला ।

हृदयियों की कैद में

जो मेह और वारा हुआ कम दुक एक
सो सैफुल मुलूक पाइया दम दुक एक

अमालों^१ हुए दरमियानी ते दूर
हुआ सूर का नूर जग में जुहर

अख्यों खोल देखन लग्या ठार-ठार
न लश्कर है अपना न साअद है यार

सो आये दरेगो^२ अदिक डाट कर^३
हुवा सख्त बेसुध सिना फाट कर

सभी गर्क हो जाके यारों पचास
जो आँचे अथे सो मिले आस-पास

उचा शाहजादे कूँ बस लाइए
नसीहत सूँ अंगे होकर आइए

“कि सुन ऐ दुःखी शाहजादे गंभीर
लिया यू बला तूँ बसा अपने सीर

किसी का यहाँ कूच तदबीर नई
यू वाक्का हमन बाज तक्रदीर नई

दिल इस दुक ते घट करके रहना भला
जो कुच है जफा^४ दुख सो सहना भला

करें मिल तवक्कल^५ खुदा पर तमाम
देखें आक्रिबत^६ किस वज़ा होवे काम

कहे लई सनद सात^७ यारों वले
कलेजा दुरुनी^८ में उसका जले

१ बादल २ दुरे-दुरे विचार ३ अधिक संख्या में ४ जुल्म ५ भरोसा ६ नतीजा ७ कई तरकीबों से ८ अन्दर ही अन्दर ।

अथा शाहजादे कूँ रोए बिन करार
कि साअद के उपराल था बहुत प्यार

फलक भी फिरन-हार जो फिर पड़था
बला हो के उपराल थे गिर पड़था^१

एका-एक बड़े गुल सिती हॉक मार
निकल जंगियाँ^२ आए एक धरते भार

सिलहकोश^३ सारे बड़े धात के
बड़े थोबड़े हौर बड़े ज्ञात के

दरिया पर के वो चोर सारे अथे
पकड़ आदमियाँ खान-हारे अथे

देखे शाहजादे की कस्ती को आ
लगे मारने बाँ^४ तुफंगाँ^५ बला

लड़ाई किए आके शर शोर सों
किए ज़ोर दारोगिरी^६ ज़ोर सों

पकड़ शाहजादे कूँ यारा सँगात
वहीं बन्द कर ले चले राते-रात

सुबह का उजाला हुआ देखकर
सब आए किनारे कूँ दरिया-उतर

निभा देखते हैं जो दरिया किनार
रखे हैं तखत एक ऊँचा सँवार

कुटंगी, जंगी अलखन^७ उसपे चढ़
बड़े वज़ा बैठ्या है सख्ती अकड़

१ फलक भी.....गिर पड़था—आसमान मानो मुसीबत होकर उसके ऊपर गिर पड़ा २ हवारी
३ हथियार बन्द ४ बान, बाण, तीर ५ बन्दूक ६ पकड़-धकड़ ७ जिसको देखा न जा सके ।

इता कूच बदशकल चेहरा अथा
जो देखन किसे उस कूँ जोहरा न था^१

फरिश्ते भी डरते अथे अर्श पर
उतर आवने इस ज़मीं फर्श पर

बड़ा भूत कहते सो था आप वो
कि सारे भूतों केरा बाप वो

गया होंट उपर का जो इक धीर कूँ
लग्या था पिशानी उलंग सीर कूँ^२

तलें का यूँ आया अथा लुङ्क होंट
जो था उसके गुरग्याँ मने फर्क बहूत

लम्बा कद लम्बी नाक चौड़े बुलाख^३
जिसे शार के नाद लवनों फराख^४

बड़े डॉंगरे सार के कान दो
उजड़ घर केरे ग्वाड़ जो रान दो^५

मसे काले उसके अथे मुँह पर
मख्याँ भिन भिनाती हैं ज्यूँ गूह पर

अँगुलियाँ बदल आपने साज के
गुश अँगुलियों में पहना डले प्याज के

पकड़ उसके नज़दीक सार्यों को ल्याए
उसे एक तरफ़ ते सलामों दिलाए

सो हवत सँ सार्यों के सीने फुटे
लगे कॉपने हौर तकवा सेटे

१ मजाल न होना २ गया होट.....सीर कूँ—उसका ऊपर का होंट निकला हुआ था और ऐसा मालूम होता था, जैसे खलांग मार कर सर तक पहुँच गया हो ३ नथने ४ चीड़े ५ बड़े डॉंगरे.....रान दो—उसके दोनों कान डॉंगरे (वह बड़ा बैल जिसके शरीर पर मांस न हो) के समान थे और उसकी रानें किसी पुराने गिरे हुए घर के निकले हुए खम्भों की तरह मालूम हो रही थी ।

बड़े शाहज़ादे कूँ वो देख कर
ले जावो क़ह्या अपनी बेटी के घर

सो काले ज़ंगी दोय संगत जा
दिए उसकी बेटी केरे हाथ जा

लेकर आए ज़ंगन कने शाह कूँ
मिलाए जोहल^१ सात ज्यूँ माह कूँ

जु बेटी कने बाप भेजे जिसे
उसे तिल मने भून खावे उसे

वले शाहज़ादे का देख वो जमाल
दिवानी हुई इश्क़ लाई कमाल

अथा खुश हवा का जो एक मर्गज़ार^२
सोहावे लताफ़त में जन्नत के सार

छिपाने कूँ फ़रमाई उस ठार उसे
किए कैद निकले न त्यूँ भार उसे

गुज़र कर गया म्याने एक सातरा^३
मलिक ज़ादे कूँ देख मुख-जातरा^४

बड़े शौक़ हौर जौक़ सू दौड़ आए
सो मुख शाहज़ादे केरा ज्यूँ निभाए

सो देक शाहज़ादा^५ हुआ वई निढाल
रगे-रग में एक धर ते बैठा कँटाल^६

कि ज़िश्ती^७ मने सख़्त वो ज़िश्त थी
निपट रुसियाही^८ में अंगुश्त थी^९

१ एक मनहूस समझा जाने वाला सितारा २ चरागाह ३ सत्र ४ मुख-यात्रा, मुख देखना

५ नफ़रत करना ६ बदसूरत ७ काले रंग का मुँह ८ निपट.....अंगुश्त थी—अपने रंग के कालापन में वह एक थी ।

कि था थोबड़ा^१ उसका ज्यू फ़ील का
 सर उसका सो काला रंजन^२ नील का
 आँखों डोंग्यों ज्यू खुडी सार के
 दो दीदे भितर ज्यू पथर गार के
 चढ़था होंट उपराल का नाक पर
 टुडी पर पड़था है तले का उतर
 तमाम अंग गोनी केरा टाट ज्यू
 चुच्चों दो सीने पर हैं दो माट ज्यू
 निकल पेट अंग को ज्यू आ खड़ा
 अथा पेट थे सख्त पेडू बड़ा
 बाबी खुल रही थी सो ज्यू ऊखली
 मुसल हो के दौड़ी थी रोमावली
 लुड़कती जो चुतड़्यों पे चोटी दिसे
 जो ज्यू भाड़ की पेड़ मोटी दिसे
 सूए सार पिड़ल्यों उपर तेज़ बाल
 न थी जग में डायन कोई उसके मिसाल
 सड़ी बोई^३ बगलों में ते थू भरे
 जिनें बास उसकी सुंगे सो मरे
 पवन सारका उसकी टुक बास पाय
 तो ल्या हल्क में अंतड़ियाँ न्हास जाय
 जंग्यों में कोई ऐसी काली न थी
 हो काली कहीं ऐसी खुजाली^४ न थी
 अगर लावे जिस ठार मशल हज़ार
 उनावे तो तीरे पड़े अन्दकार

गंदी प्याज़ के डल पुरो छील कर
गले में हमायल-नमन^१ मैल कर

चतुर दो दमामें किते कोज के
नगारे बजाते हैं बिन कूच के

इता कुच ऊँचा था उसे
सिरी वाजते कोई पहुँचा उसे

न होय शाह राज़ी मनावे तो वो
अथे रोय हँसती जो आवे तो वो

चले घर मने शाहज़ादे कूँ ले
कँदोरे करे बार^२ अपने वले

जो बैठे दोनो मिल कँदोरे उपर
सो वो ज्यूँ हती हैर यूँ ज्यूँ मछर

कि आना मुवाफ़िक़ सँ सोहबत घड़ी
परों उड़के जा फ़िक़र लागी बड़ी

जो फ़ारिश हुए पेट भर खान खा
मँगाईं तुरत मस्त प्याला निखा^३

सो गड़व्यो^४ पे गड़वे लगी खेलने
लगी शाहज़ादे सँ मिल खेलने

पिये शाहज़ादे सँ मिल वैसे कर
मती होके खिलवत में गये पैस कर

सो अपने मुहब्बत करे शौक़ सँ
मँगी ऐश करने के तई जौक सँ

कुबुल्या नहीं शाहज़ादा उसे
डरया देख तन पर के उसके मसे

१ हार के जैसे गले में पहनना २ दस्तरख़ान तैयार करना ३ अच्छा ४ दूँटीदार लोटा ।

सटी हात जा उसपे सोरात^१ कर
सो दरहम^२ हो मार्या वहीं लात कर

निपट दिल में जागा किया कन्दराट^३
सो फ़ामी वो ज़ंगीन डायन खुसाट^४

गुसे सात अत ज़ंगियाँ कूँ बुलाय
सो संगी चक्की पीसने कूँ मँगाय

मालिकज़ादे के कन ले जावो, कही
सुबह उठ के आया पिसावो, कही

हुआ शाहज़ादा दुःखी ला इलाज
कया दिल में मौत अपनी आई है आज

लग्या पीसने आया लहूँ आँट कर^५
छूले आए हातों कूँ सब डाट कर

सो खलरी निकल आई दोय हात की
मशक्कत लगी दीस हौर रात की

हथेल्याँ जो नाजुक अथे पान थे
नरम तर नरम रूई खतियान^६ थे

गठे पड़ रहे सख्त फ़ौलाद हो
गई नाजुकी तन की बरबाद हो

१ लालच में आना २ गुस्से में आना ३ नफ़रत करना ४ खूसाट ५ लहू का औटना,
खून का खीलना ६ एक बहुत ही अच्छे किस्म की रूई ।

जंगी की कैद से निकल भागना

कितेक दिन कूँ वो जंगिए नाबिकार^१
सुन्याँ ज्यूँ सो घर में ते काढ़था ब्रहार

सो बेटी कदीं ये बुरा मानकर
कपट दिल मने हाथ में आनकर

मँगाया बरर^२ एक लसड़ी^३ सँगात
दिया फिर दुःखी शाहजादे के हाथ

दे यारों कूँ दुबाल उसके तमाम
सो लकड़ियाँ दुलाने लग्या सुबह शाम

रह्या शाहजादे केरा हाल सब
दुःखा तल हुआ हाल पामाल सब

गए कपड़े सब आँग के फाट-फाट
परेशानगी हो लग्या वई उचाट

मशक्कत लगी दीस हौर रात की
न थी कुछ खबर पॉव हौर हात की

नसीवे कूँ जल बोल मारन लग्या
सो यारों ये मिल यूँ त्रिचारन लग्या

किया फिक्र ये अपने यारों के पास
भला है जो उस टार ये जाय न्हास^४

जो सौ बरस अछंगे हमें इस बनें
रहेंगे इसी गिफ्तारी मने

हमन पर किसे प्यार आसे न याँ
हमारा दरद दूक यासे न याँ

सकल मस्त एक होय कर एक बार
किए होड़ी^१ एक मुस्तइद उस्तवार^२

अपस सबक्क^३ उस हीड़ी के बीच डाल
तवक्कल^३ खुदावन्द ताला पे घाल

जँग्याँ के छुटे हर तरफ़ बन्द थे
अनन्द पाए दन्द्याँ केरे दन्द से^४

१ नाव २ मसबूत ३ भरोसा करना ४ जँग्याँ के.....दन्द से—सैफुल मुलूक और उसके साथी हबशियों की कैद से आजाद हो गए और उन्हें दुश्मनों से प्राप्त होनेवाले दुःख से मुक्ति मिली ।

एक द्वीप में आना

दर्शा के उपर ज्यू खाना हुए
सो खुशहाल सबके पराना^१ हुए

सो हौड़े^२ चलाने लगे हाते-हात
कितेक दीस चलने लगे राते-रात

दिसे मौज कई ऊँच हौर नीच कई
ले जाता खड़ा बाव आ खींच कई

कहीं डूबते हौर कही तैरते
हलाकीं सिर्ती^३ फीरते फीरते

अचानक पड़े एक जज़ीरे में आ
करार उस जज़ीरे में टुक पाय जा

कितेक भाड़ वाँ देखते मेवेदार
हर एक भाड़ मेवा सो आया है बार

वो खुशहाल एक दम वही दूक छोड़
सो मेवे लगे खावने तोड़-तोड़

किए प्यास हौर भूक कूँ दफ़ा वाँ
हुआ दस्त राहत केरा नफ़ा वाँ

बजा लाए शुक़राना करतार क़
तमाशा देखे नादिर इस ठार क़

हुई रात देक इस जज़ीरे मने
रहने का फ़िक़र मिल किए सब जने

अथा भाड़ वाँ एक बलन्द सायादार
सो उस भाड़ पर चढ़ के बैठे हुशियार

अंधारा गिरद ज्यूँ हुआ ठार-ठार
जनावर निकल आए दरिया ते भार

निहंगों^१ कितेक पहाड़ वैसे गँभीर
हती सारके माहियों^२ बेनज़ीर

अख्याँ दूर थे सो दिखे उनके यूँ
अंधारे मने देवतियों^३ लाये ज्यूँ

कितेक शकल में ऐन जैसे शिगाल^४
कितेक बदशकल रीछ केरे मिसाल

कितेक उस मने के थे ऐसे बड़े
देखे आदमी तो वहीं जल मरे

कितेक बहुत हौर कब्क^५ की ज्ञात के
कितेक सो शुतुरमुर्ग की धात के

कितेक उसमें रह रह उठें यूँ पुकार
जो होवे दर्या तल उपर जोश मार

सफ़ा दर सफ़ा^६ खुश गुजरते अथे
दर्या के उपर सैर करते अथे

नूरानी सुवह का जो बारा हुआ
चंदर का झलक डुक उतारा हुआ

सितारे लगे झूबने ठार-ठार
पंखी उठ लगे गुल करन यूँ पुकार

अर्श^७ का मुरग बाँग कहने लग्या
सुवह का ठण्डा बाव बहने लग्या

सूरज के उजाले कूँ ज्यूँ खोज पाय
सब एक घर ते डुब्की दरिया म्याने खाय

१ (फ़ारसी) मगर २ (फ़ारसी) मछली ३ दीवट ४ (फ़ारसी) भोजिया ५ चकोर ६ कतार की कतार ७ आठवाँ आसमान जहाँ खुदा रहता है ।

रयन सब दरिया का देखत यू खलल
छुपे ठार ते शहजादा निकल

कहा यूँ ज़बाँ खोल याँ सिती
अपन दर्द के 'दोस्त-दाराँ' सिती

कहा यूँ "कि अब यों ते जाना भला
बलायों ते अपसें बचाना भला"

सो चुन ज्यूँ मेवा निछल धात-धात
लिए बाँद तोशा खुशी अपने सात

रवाना हुए वेग मिल सब जने
चले फिर तवक्कल सू दरिया मने

जफ़ा हौर दुःख देखते ठार-ठार
हुए भी परेशाँ महीने चहार

किधर जावते सो न था फ़ाम कुच
किसी के न था दिल कूँ आराम कुच

क्रज़ा^२ यूँ हुआ जो कहीं बाट पाये
एका-एक हौर एक जज़ीरे में आये

रहे बाट हौर ना किये वाँ मुक़ाम
जो कुच होवने का सो होये यू तमाम

बन्दरों की कैद में पड़ना

अजब वो जजीरा सफ़ादार^१ था
जो शहाद^२ के बहिश्त के सार था

कि था वाँ अजब कुच सफ़ा जाँ तहाँ
फ़रह पाये एक-एक के रूहाँ वहाँ

जो कुच जीव मँगता सो मेवा वहाँ
भाड़ाँ पे मौजूद था जाँ-तहाँ

किते भाड़ थे वाँ जो ना उस गिनत
रँगा रँग के जिन्स की हद ना अन्त

जनावर अथे उसमें कई धात के
कितेक खुश नुमा कुमरियों^३ ज्ञात के

कितेक नूर के नूरियों बेनज़ीर
कितेक बुलबुल^४ रावें^५ रोशन-ज़मीर^६

हलावे हलू पंग हर डाल थे
पड़े मेवे भड़-भड़ सो उपराल थे

अपस में अपे खुश हो मरगोलते^७
कितेक जिन्स की बोलियाँ बोलते

हर एक भाड़ तल शाहज़ादा वहाँ
लग्या फिरने याँ सँ हो शादमाँ

हवा हौर ठण्डी छाँव खुश वाँ की देक
लगे नींद सँ नींद लेने टुक एक

सो ऐसे मने आए चोराँ वहाँ
पिछोडे वँदे सब के हत जोर साँ

१ साफ़ सुथरा २ एक बादशाह का नाम, जिसने दुनिया में ज़ब्रत बनाई थी ३ कुमरी,
एक पच्ची विशेष ४ रब करना, बोलना ५ दिल की बातों को ताड़ने वाले ६ चहचहाना ।

चले मारते लेके ख्तारी^१ संगत
हुश्ना दूक यारों कूँ भारी सँगत
बहर हाल इस गुल में थे भार पड़^२
चल्या शाहजादा कहीं न्हास कर

१ बेइज्जती करना २ बाहर पड़; बाहर निकल ।

कप्तारों का कैदी होना

निरंकार आधार जग छाँव है
करीमों मेहरबान का नाँव है

भर्याँ हैं वहाँ औरताँ खुश शकल
चल्या देखता वॉ महल दर महल

एकस थे अर्थ्यों एक साहब जमाल^१
दुनिया में न थी उनकी सूरत मिसाल

हर एक की पेटों में मेहराब अथा
कलेजा मुअल्लक^२ लटकता अथा

पकड़ शाहजादे कूँ वई बन्द कर
लेकर आईयाँ अपने अपने राजे के घर

सौ सैफुल मुलूक देखता है जो वॉ
रखे में तखत सूर सा दरमियाँ

सो बैठे हैं वॉ नार मकबूल^३ खूब
सुरज चोंद ते खूब निरमल सरूप

मुकल्लल ज़रीनों^४ वो पेने हैं नार
खुश आवाज़ सँ देख बोली पुकार

“कहाँ ते तू आया है ऐ नेक नाम
तू किस मुल्क का बोल तेरा मुक़ाम

कि यू खूब आदम है साहब जमाल
अंगे ल्याक पूछे गरीबी का हाल

तफ़हूस किऐ^५ हाल कूँ सर-बसर
न तक्कसीर कीते^६ हर एक बोल पर

१ एकस थे . . . साहब जमाल—एक से बढ़ कर एक खूब सूरत २ जिसको कोई सहारा न हो ३ खूबसूरत ४ ज़री का काम किया हुआ कपड़ा ५ खोज करना ६ खोद-खोद कर पूछना ।

बज्जों हाल जी दूक का था जिता
सरासर क्या खोल कर सब विता

दुखिया गम थे उस ही के पाई तमाम
सो वो दूख खातिर में ल्याई तमाम

बज्जों^१ आवो कई एक नार कूँ
सो बसलाने फ़रमाई लई प्यार सँ

मँगाई कँदोरे शहा ने जिते
रिफ्ताने को फ़रमाई नादिर विते

कँदोरी ते फ़ारिग हुए पर तमाम
क़िसा उनका खातिर में ल्याई तमाम

बज्जों वो कही नार “ऐ जग उजाल
तू आपस कूँ यो ते बहुत ले सभाल

यू सासानियों आतिशी ज्ञात हैं
तुझे खावेगे.....बात हैं

सुन्यों ज्यू सैफुल मुलूक बात कूँ
लग्या रोवने गम सँ बहु धात सँ

सो वो नार भी यू कही उसके तई
“जो रोता है ऐ दुःख भरी धात तई

अगर तू मेरा दिल करे खुश अताल
जतन सँ रखूंगी तुझे जीव-निहाल”

बुलाई नज़िक दौर सिने सँ लगाई
अदिक प्यार सँ लब मने लब मिलाई

करे तू जो सोहबत अगर मुंज सँगात
छिपा तुज रखूंगी निपट प्यार सात

जिता कुच मनाई मनाने के धात
कुबूल्या नहीं शह उस आतिश सँगात

कया नार कूँ यूँ दुख्या ज्ञात सँ
सुन ऐ नार फिरता हूँ किस धात सँ

सो वो नार मिलती न दिसती कही
उसे हँदता जग में फिरता हूँ मैं

बगैर वो मिले किससे ना होऊँ जुफ्त^१
नको दिल में हाँडी पका^२ नार मुफ्त

अजब मोहनी है वो नामाँ जमाल
सो है वो चंचल दहन^३ बदीउलजमाल

मेरा ध्यान अब छोड़ दे नार तू
मेरा दिल नहीं किस उपर नार सँ

सुनी नार सैफुल मुलूक ते यूँ बात
गुसे सात दौड़ाई शह पे सो हात^४

मँगी उसकूँ खाने के तई तुफ्त^५ हो
कलेजा मँगी खावने मुफ्त हो

गुसे सो रखाई सो एक सातरा
रखी कैद सँ कैद कर सातरा

रह्या नार सँ शह अदिक बन्द में
रोये याद कर नार कूँ बन्द में

अपस में अपे शम करे यूँ कहे
गुदा या बचा तू बला यूँ अहे

बला यूँ बड़ी मुज गले आ पड़ी
न फुरसत है जाने की मुश्किल घड़ी

१ मिलना २ खयाली पुलाव पकाना ३ चंचलता को दूर करनेवाली ४ हाथ चलाना
५ गुस्सा हो ।

जो एक रात अधी रात गुजरी अथे
मँग्या न्हासने ताई उस बन्द थे

सो मद पी हुयँ थीं मत्थों वो जित्यँ
सो बेसुध हो अस-पास सकल्यो सोत्यों

हल्लू शाहजादा सो निकल्या बहार
लग्या खल्लू कू देग्वने ठार-ठार

मत्थों हो पड़्यो हैं किसे नई खबर
निकल भार आया दरिया के उपर

एका-एक तख्ता दिस्या एक वहाँ
निकल कर चल्या हौर हुआ तब र वों

जो तख्ते पो जा बैठिया बेग वे
चल्या बावले उस उपर बेगवे^१

दरियों में जफ़ा^२ हौर दुःख देखता
सो डुबता निकलता चल्या तैरता

कहीं बाव तूफ़ान का आ लगे
कहीं ताव तूफ़ान का जा लगे

न डूबे निपट ना तिरावे उसे
सो बारा^३ चहल दिन^४ फिरावे उसे

राक्षसों के द्वीप में पहुँचना

कज़ा^१ सों हुआ करम करता का
लजाया निहायत कुँ एक बार का

छः महीने पिले एक जज़ीरा दिस्या
जज़ीरा दिखत दिल मनै यूँ हँस्या

कया दिल मनै शाह गुरवत संगत
जज़ीरा यूँ दिसता है राशन सिफ़ात^२

मवादा^३ अलेगी बला याँ कुबल
मवादा मुभे जाय चीता निगल

चल्या फ़िक्र करता जज़ीरे कने
सो रख तख़्ता उस पर लग्या फीरने

सो फिरने लग्या ज़ौक सूँ भाड़े भाड़
सो मेवा लगा खावने पाड़ पाड़^४

एकाएक राकस निकल आके भार
सो पा बास आदम की दौड़था पुकार

पहाड़ों के मानिन्द दौड़े जिते
सो हाका^५ ते बादल गरज कर उठे

दिस्या शाहज़ादा बला याँ कुबल
सो तख़्ता त्रिसर कर चल्या वई निकल

जमीं पर चल्या न्हासता न्हासता
न था न्हासने बिन कहीं आस्ता^६

जहाँ फिर देखे उस बलायाँ कुँ शाह
पहाड़ दौड़ते हैं या बादल सियाह

१ संयोग वश २ विशेषताएँ रखनेवाला ३ कहीं ऐसा न हो ४ (मराठी) निकाल-निकाल

५ चलिना ६ ठिकाना ।

सो फिर देखता हौर अधिक न्हाटता
अधिक न्हाटता हौर सिना फाटता

सो ज्यूँ उस पवन पर उड़ा ले चल्या
हवा पर चले त्यूँ ज़मीं पर चल्या

हुआ बे खबर दूख हौर भूख सँ
अकल उसमें रही नई सूक सँ

न था किस उसे ज्ञात में एक ज़रा
न था कुव्वत उस न्हासने बिन ज़रा

छे महीने पिछे न्हासता न्हासता
खड़ा एक ज़ज़ीरे कने आस्ता

कितेक जिन्स के भाड़ आये थे बार
बड़े पाड़^१ थे भाड़ सब टार-टार

सो मेवा लग्या चुन के खाने के तई
छे महीने पिछे उस मिल्या कूत^३ वई

जो कल कूत सँ खाय कर भी चल्या
जज़ीरे के उपराल एक गढ़ मिल्या

सकसारी के हाथों में गिरफ्तार होना

है सुबहान तेरा करम जिस उपर
तेरे अन्न का जग कूँ होवे असर

जज़ीरे के भितराल डरता घुस्या
वाँ सकसार^१ एक दौड़ उस पर धस्या

सो सैफुल मुलुक कूँ पकड़ ले चल्या
सो जिव का भरोसा वहाँ ते टल्या

कह्या दिल मने ऐ खुदावन्द पाक
बल्यो ते पाइया है मुज तन पे धाक

सो रोता वहाँ शहर में आइया
दिल अपना तमाशे सँ, बहलाइया

सो बद-शकल मुँह है कुते सारका
बदन उस लुङकता मुअर सारका

सो हत पॉव उनके हैं अदम्यों के सार
वले तन मने रास्त बोले पुकार^२

सँवारा गया शहर है इस वज़ा
जो किस मुल्क में शहर नई इस वज़ा

बड़ा शहर मामूर^३ है जिन्स ते
न थे बिन वहाँ कोई सग सार ते

जो सैफुल मुलुक कूँ जो सकसार ने
पकड़ लाइया अपने राजे कने

सो सैफुल मुलुक देकता है जो वाँ
रविश हौर तरतीब शाही रवाँ^४

१ हुक्म २ आदमी का हाथ-पैर रखनेवाला और कुत्तों का मुँह रखनेवाला योनि विशेष
३ वले तन...पुकार—आवाज़ मुँह से नहीं; बल्कि शरीर से ही निकलती है ४ मरा हुआ
है ५ रविश... रवाँ—उसने देखा कि वहाँ बादशाहों का रंग ढंग है ।

ले गये सामने अपने राजे के पास
खड़े रह लगे देखने आस-पास

सो राजा कह्या अपने लोगों के तई
जनावर नवा आज देख्या हूँ मैं

हुआ खुश जो कोई ल्याये थे उस उपर
दिया तशरिफा उन कूँ जरबफ्त^१ जर

खिला खान मोटा करो कर उसे
इशारत सूँ फरमाइया और किसे

हँस्या बहुत खुशहाल ज्यों फूल खिल
रखाने कूँ फरमाइया संग दिल

रह्या बन्द में शाहजादा वहाँ
सो दिन बीस म्याने एकाएक वहाँ

खुदड़े^२ जो थे राकसों उसके तई
जज़ीरा हर-एक हँदते आये वई

सो सगसार का शाह पाया खबर
बहुत राकसों आये कर शहर पर

वहीं तफ्त होकर^३ उठ्या सगसार
किया लड़ने तई मुस्तइद अपना भार^४

लड़ाई करन मुलह संजोत सों
जो मैदान जा खड़े रीत सों

सो सगसार सब शहर के मार गये
जिते आम हौर खास सब भार गये

हलू शाहजादा जो निकल्या बहार
लग्य देखने शहर में टार-टार

नज़र नई पड़था कोई सगसार वाँ
निकल शहर ते बेग हुआ रवाँ

चल्या न्हासता बेग जंगले जंगल
चढ़था एक टेकान पर जा कुवल^१

बलन्द टार था वो जहाँ है इता
लम्बा हौर ऊँचा जो कई हद न था

उस उपराल चढ़ चौकदन^२ देखता
धरत हौर सन्दूर एक कर रखा

किया शुक्र करतार का वाँ बहुत
नबी-ते मँग्या फिर शफ़ाअत^३ बहुत

जो सगसार राकस भी लड़ने लगे
एकस हात त एक पड़ने लगे

सटे राकसों डोगरों कूँ उचा
सो सकसार कल्ल कर ज़न बचा^४

किते राकसों भाड़ सूँ मारते
कित्यों कूँ ज़मीं पर फिरा मारते

किते राकसों जायें उनको निगल
कित्यों कूँ रगड़ कर सटे खाक तल

जो सगसार अड़ाड़ा के दौड़े^५ बहुत
लेवे नाक मुँह तोड़, धड़ कूँ बहुत

लड़ाई देख्या शह कितेक दिन तलग
जो लड़ते अथे रात, दिन होय लग

चल्या वाँ ते सैफुल मुलुक हौर अंगे
सो माशूक के ग़म कूँ लेकर अंगे

१ दुर्गम टेकरी २ चारों तरफ ३ हुआ ४ सटे... .. जन बचा—राक्षसों ने सकसाराँ को
बुरी तरह हरा दिया और उनकी औरतों बच्चों को कल्ल कर दिया ५ जोरों के साथ दौड़ना।

अपें हैर माशूक का ध्यान था
न त्रिन ध्यान माशूक कुच ध्यान था

कहीं जौक सँ हो चले हर जंगल
कहीं दूक सँ जाय जिउड़ा^१ निकल

कहीं गाय ज्यू भाये^२ त्यू हॉक मार
कहीं याद कर नार कू रोये ज़ार

इसी ध्यान में साल बाँ तीन चल
कटा वो जंगल राम ते यू नयन-तल

दिवालपायों^१ के हाथ में पकड़ा जाना

इलाही जो उस पाक आशिक़ उपर
मिल्या एक जज़ीरा उसे खूब तर

डर्या फिर जज़ीरे में जाने के तई
बलायों की दहशत के पाने के तई

जो उस शहर में जा देख्या हर मक़ाँ
कि नई आदमी ज़ाद का कुच निशाँ

हर एक तरफ़ रौशन हैं बाज़ार चार
सँवारे गया है सो है ठार-ठार

भरे हैं वहाँ दालपाये^२ बहुत
न हिलते न चलते से बैठे बहुत

सो लिङ्गने^३ लगे दालपाये वहाँ
हलूँ आके लट-पट हुए जाँ तहाँ

गले हौर हाताँ में पावाँ सूँ पेच
लगे मारने हात सूँ खँच खँच

जो माँदा किए उसको दौड़ा कर
वहाँ ते ले गए अपने राजे के घर

सो गजे के ज्यूँ सामने आइया
देखत शाहज़ादे कूँ वो यूँ कइया

कि यूँ जानवर खूब है अज्म^४ का
तमाशा देख लभाव है बज्म^५ का

रखाने कूँ फ़रमाइया बन्द कर
सो एक महल में जा रखे बन्द कर

१ दिवाल पाया—एक योनि विशेष, जिसके हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं, ये ज़मीन पर सरकते हुए या लुढ़कते हुए चलते हैं २ दिवालपाये ३ लुढ़कते हुए आगे बढ़ने लगे ४ जैसा हम चाहते हैं ५ सभा ।

अदिक बन्द में शह हुआ ला-इलाज
कह्या मौत का घर मुज आया है आज

सो ल्या न्यामतौ उस खिलाने लगे
सो गो मुरक कर गुल कूँ लाने लगे

कितेक दिन इसी बन्द में पड़ रह्या
निकल जाऊँ कर फिक्र एक दिन किया

जो फुरसत खुदा ते मँग्या शाह ने
अधी रात गई फिक्र करते मने

सो मद पी हुए थे मती वो जिते
जो बेसुध हो अस-पास सकली सुते^१

उसी में चढ़्या जाके एक महल पर
सठ्या वई उड़ी^२ हौर चल्या तल उतर

कितेक उसमें पा होश दौड़े सँगात
लिड़े कई कूँ यूँ जो बोंदर के धात

वहीं न्हाट कर जा जंगल में पड़्या
एकाएक गारे में आकर उड़्या

अधी रात गये न्हासते उस मने
जो यूँ गार के भार आया उने

हुआ है सो यूँ सुवह भल्लकार सूँ
देख्या दालपाये लगे पीठ सूँ

चल्या था दीस न्हासता जो तलग
जो ऐसे मने रात आई विलग

छुप्या सूर भी शत्रु^३ ले नूर का
खड़्या आ चँदा ताव ले नूर का

चँदा चौकदन रखत सौदा अथा
तनावों सितार्यों सूँ बौद्ध्या अथा^१

सुरग्या^२ शमा जोत लुङ्काय कर
जगा जोत असमान पर सर बसर

कठ्या गत सकली सो जगल मने
तमाशा देख्या नादिर अवकल^३ मने

चड़्या जाय कर एक ऊँचा भाड़
वहाँ ते लग्या देखने ठार-ठार

कितेक भाड़ रौशन हुए नाल कर
कितेक भाड़ फिरत हैं ज्यूँ जाल कर

कितेक भाड़ पढते हैं कुरआँ^४ वहाँ
कितेक शमा दिपते अहे जौ-तहाँ

कितेक भाड़ इलहान^५ सूँ जिक्क कर
दुआ कूँ उचाये है हातों मगर

दुआ मे रखे पात कूँ हात कर
कँठे^६ रैन सकली इसी बात पर

सो सैफुल मुलुक रैन सकली कँठ्या
उसी मे उजाला रैन का फुट्या

चन्द्र जब निकल रफ्त बौद्ध्या^७ तमाम
शफक मे खडा रह किया उस सलाम

जमाना जो हर दाय निकली बहार
जमी का बदन पार था बार दार

१ चँदा बौद्ध्या अथा—चन्द्रमा ने चारों तरफ अपना सामान फैला दिया था । चँदनी के डेरों के तनावे सिनारों से बँधे हुए थे २ एक तारे का नाम ३ अजीब ४ कुरान ५ आवाज ६ कटी, गुञ्जरी ७ साज सामान बाँधा, चाद डूबने लगा ।

सती हात की नार के हात सों
शफक़ खून मे थे उचा हात सो

मुरग अर्श का हॉक मारन लग्या
परिदया सँ अपने विचारन लग्या

परिन्दे लगे कूकने ठार-ठार
दरिन्दे चले सेर करने कूँ भार

रैन जिउँ जनी सुबह की पूत कूँ
सो रौशन हुआ सुबह की रूत सँ

१ रैन जिउँ रूत सँ—रात ने सुबह के पुत्र को जैसे ही जन्म दिया, वैसे ही पशु पक्षियों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी ।

कैसरिया शहर में पहुँचना

उम अवतार बाजी केरा हुक्काबाज
करे इस रविश सात यूँ हुक्काबाज^१

सो सैफुल मुलुक सर्वरे आशिकों
विला शक है ताजे सरे आशिकों

निपट फॉक सबते मुजर्रद हुआ^२
बिरह पर बिरह हदते वेहद हुआ

अधिक भूक हौर प्यास ते तलमल
लग्या सैर करने कूँ जंगले जंगल

हुआ सख जा तन सो काडी के सार
वले नूर उसका अथा बरकरार

जो तनहा जिधर चल के जाता अछे
उधर जंगल जगमगाता अछे

जहाँ लग जो बागों दरिन्दे अथे
जहाँ लग जनावर परिन्दे अथे

बराबर उसी के सो फिरने लगे
हो बेताब इश्क उस सँ गिरने लगे

जहाँ भाड़ ऊँचा अछे सायादार
उस उपराल कर उस दुःखी कूँ सवार

जंगल मे जा कई फल फलाली अछे
जो चुच फल फलाली सो आली अछे

सकल जायें चुन-चुन के ल्याने के तई
मलिकजादे कूँ ल्या खिलाने के तई

^१ उस अवतार हुक्काबाज—सब से बड़ा बाजीगर जो वह खुदा है, वह यहाँ एक और नमाशा दिखला रहा है ^२ अकेला हो जाना ।

मुसल्लम हुआ हुलूक^१ सैफुल मुलूक
लग्या सूसने^२ गम पे गम दुख पे दुख

जो देख्या जगल के चिते बाग कूँ
हिरन, रीछ हौर अजगरो नाग कूँ

निपट गड़बड़ा कर हुआ धावरा
दरेगे^३ सिती वई पड़था थरथरा

सो कहने लग्या “ऐ खुदावन्दगार
ऐ रहमान, ऐ पाक परवरदिगार

कहाँ ते मुजे तू कहाँ लाइया
सो ला किस बलायों मे सपड़ाइया

न यों आदमी जाद का कई निशों
न मुज कूँ है यों कोई जान हौर पहचान

जिधर देकता हूँ उधर बेकयास
जंगल के जनावर खड़े आस-पास

गुमूँ क्यो उनन सात दिन रात मैं
करूँ इस गुग्याँ सात क्या बात मैं

मुँजे कौन आ फाड़ खाता है कि
मेरा जीव ले कौन जाता है कि

दरेगा^४ मेरे बख्त है कैसे सख्त
किसी कूँ दुनियाँ मे न होय ऐसे बख्त^५

न माँ आप थे पा सकूँ कुच जवाब
न माशूक थे हो सकूँ कामयाब”

हर एक बख्त इस धात रोता अछे
निदाल अपने आप होता अछे

न ग़मता दिखत वख्त अपना कहीं
किया फ़िक्क एक दीस मन में वहीं

सो एक रात अधी रात गुज़री देखत
जगत नैन कू नींद पकड़ी देखत

जनावर लगे ऊंगने ठार-ठार
पड़े बेखबर सब न थे कोई हुशियार

एकाएक हुआ शैब थे बल उसे
चढ़या हात हिम्मत केरा कल उसे

चल्या उस अधी रात वॉ ते निकल
बड़े दग़ दग़े सात जंगले जंगल

एकेला नंगे पाँव नंगे सरीर
थे खारे मुगीलों^१ उसे ज्यों हरिर^२

कितेक दिन कू जू बाट पाया टुक एक
नज़र तल पड़या दूर ते शहर एक

जो उस शहर का कैसरिया था नाँव
सफ़ा जा बजा हौर हवा ठाँव-ठाँव

बड़ा शहर नाहद न कुच अन्त उसे
कि चौधीर लग पेशोपश पन्त उसे

जो ल्या सातो असमान इसमें छुपाये
तो एक कोने में इसके सब छुप के जाये

निछुल चोकदन रस्ते बाज़ार चार
सो जैसे लताफ़त में गुलज़ार चार

वले आदमी जाद नई कोई वहाँ
भरे हैं वहाँ बान्दरे जा तन्हें

हुकूमत उनन का च है ठार-ठार
 उनन का च चलता है वॉ कारोबार

देखे शाहजादे कूँ जूँ सर-बसर
 ले गये अपने राजे कने कैद कर

जो देखता है वॉ शाहजादा निभा
 अजायब तरह का है ऊँचा छुजा

रखा है जड़त का तखत म्याने-म्यान^१
 ज़मी वॉ की दिसती है ज्यूँ आसमान

छुत्रीला जवॉ एक गियानी सुगड़^२
 खुश उस तख्त उपराल बैठा है चड़

सकल बान्दरे दायरा छोड़ कर
 खड़े हैं अदब सात हत जोड़ कर

बुला बाँदर्यों कूँ कह्ला वो जवॉ
 कि कुसीं ले कर आ रखो म्याने-म्याँ

ले कर आये जा बेग कुरसी निछल
 कि जोड़े अथे इस जड़त बेबदल

मलिक जादे कूँ बैसला उस उपर
 लग्या पूछने हाल उस सर बसर

“कि ऐ जान, तँ कौ ते आया है कि
 कहाँ कौते किस गाँव जाता है कि

तू किसका है जाया, तेरा ठाव कौन ?
 कहाँ चौद तेरा है असमान कौन ?

तुजे काम किस वजा सँ आ खड़या
 तू क्या इस खराबे^३ मने मे आपड़या

सो कह मुज कने खोल ऐ यार तूँ
हो मेहमान चन्द रोज़ इस ठार तूँ”

जो ऐसी वो शीरीज़बानी किया
मलिक जादे कूँ गाल पानी किया’

सो एक घर ते जो हाल अपना अथा
जो कुच तलमलाना व तपना अथा

जो कुच आके डाट्या अथा बाट में
जो कुच सर घिरा था जङ्गल घाट में

सरासर कट्या खोल इस जान सूँ
लग्या पूछने उस कूँ फिर शान सूँ

“कि ऐ बख्तवर राज तुज राज की
तेरे तख्त की हौर तेरे ताज की

रविश हौर तरतीब कुछ हौर है
तेरे बख्त का बाव वर जोर है”

सो पूछ्या कि “इस राज इस ठार तूँ
मरातिब यूँ पाया है किस धात सूँ

तुजे बाँदर्या सात गमता है क्यूँ^१
तेरे मन में ये ज़ौक़ जमता है क्यूँ

तेरी खुशरबी का अजब तरह है
निभाने थे मुज नयन कूँ फ़रह है”

अगर मुज पे तूँ आशकारा करे
दुआ तुज मेरा रूह सारा करे”

१ पिघला दिया २ तेरे बख्त ... वर जोर है—तुम्हारी भाग्य जोरों पर है ३ तुजे...
ममता है क्यूँ—इन बन्दरो से तुम्हारी कैसे बनती है ४ तेरी खुशरबी फ़रह—
तुम्हारी बादशाहत हमारी आखों को खुश करनेवाली है ।

कह्या तब वो राजा “कि सुन ऐ अनीस
मेरा बाप था मिस्त केरा रईस

दिया भेज मुज करने सौदागरी
ले कर आने सौदा सो दरिया वरी

एकाएक सो कश्ती फुटी मौज मार
सो तख्ते उपर एक निकल्या बहार

वहाँ बाँदरे फौज कर आइये
पकड़ कर मुजे बाँ ते बाँ लाइये

सितम ज़ोर साँ बैसला तख्त पर
दिये पादशाही मुज उस वक्त पर

दोराई^१ मेरी शहर में सब फिराये
मुझे आपना राज कर बैसलाये

कि इस क़ौम के बाँदर्यों में तमाम
चल्या है रसम इस वज़ा का मुदाम

जो मरता है राजा उनन का कर्धी
करार उनको अछुता नही है कर्हीं

दिये बादशाही किसे होय ताँ^२
न जोड़या कने जायँ न खान खाँ

उनन के अवल के महाराज की
सो बेटी है अत शर्म हौर लाज की

गमूँ इस सिती मैं कि हम जिन्स है
वो हम सार खाकी वह हम इन्स है

लिख्या इस वज़ा था सो अँपड़या मुजे
खुदा अम्र हौर देवे राहत तुजे^३”

१ हुकूमत २ किसी को दिये तक ३ लिख्या इस.....तुजे—मेरी किस्मत का लिखा
इस तरह पूरा हुआ। खुदा तुझे चैन और शान्ति दे।

मिल एकस को एक बात कर इस तरीक
कंदोरे शहाने अथे जिस तरीक

किया अम्र ल्या बाह करने शिताब
कितेक जिन्स के न्यामतो बेहिसाब

जो ल्याकर कंदोर किये बार खूब
जड़त के रखे जफ हर ठार खूब

दोनों मिल के खुश जौक सँ खान खाये
रंगेला शराब अरगवानी^१ मंगाये

पया पै^२ लगे ऐश सँ भेलने
हुए मुस्तइद बंदरे खेलने

अपस में अपे ताल मंडल बजाय
विकट बाजियो के तमाशे दिखाय

कुलाथ्यो उछलने लगे मेल खूब
कितेक खेल मुजहिक कितेक खेल खूब

हुनर भेद अपना जिता था दिखाये
बहर हाल दोनो कू खुश कर हँसाये

कितेक दीस शहजादे कू रख वो राज
किया बाट लाने^३ कू एक दिन इलाज

पयापै रख इस धात दिन तीन चार
शगुफता^४ किया मोदगी^५ सब उतार

समज ग्याल उसका कह्या यूँ उसे
“कि तू जिव सँ आशिक हुआ है जिसे

यहो कोई इस थे खबर दार नई
किसी मुल्क में वो तो इजहार नई

१ नारंगी के रंग की २ लगातार ३ रास्ता निकालना ४ खुश किया ५ थकावट
६ जाहिर नहीं है ।

अजब कुछ है दुनियाँ में तेरा पिरित
न देखा कोई ऐसा भी गहरा पिरित

अपड़ते तेरे दाद फरियाद कूँ
सकत नई किसी आदमी जाद कूँ

तेरे मन के मकसूद बर ल्यान हार
नहीं कोई याँ बाज परवरदिगार

तक्कल सूँ कर आपने मन कूँ शाद
मुलुक हूँद हौर पा तू अपनी मुराद^१

कि इस धात एक बादपा^२ ऐन जात
मँगाया जड़त के खुश अबरन^३ सँगात

अंगे हो अपे सरकला उस उपर
हुआ उस केरे हक में लक धात कर

कर इज़हार अपने जिते मेह ते
खाना किया खुश उसे शहर ते

कितेक बाँदरे देके उसके मँगात
जहाँ लग है अपना मुलुक हौर विलात

वहाँ लग उस अपड़ाव कर भेजिया
हुआ उसके हक बेनिहायत किया

चले बाँदरे उसकूँ अपड़ाव ते
तमाशा हर एक ठार दिखलावते

खड़े रहे रज़ा लेके ऐलाइ^४ खुश
किये अपने सरहद थे पैलाइ^५ खुश

कैसरिया से रवाना होना

चल्या शाहज़ादा ले बैताग^१ भी
उठी सुलग कर विरह की आग भी

सो फिर अपने माशूक के ध्यान सूँ
भगड़ता ज़मीं हौर असमान सूँ

सरासर सरीर आपना जालता
अंगारे अझूँ गर्म अधिक डालता

पन्ते-पन्त जंगले-जंगल भाड़े-भाड़
गव्यों^२ हौर भुड़पे-भुड़प^३ फाड़े-फाड़^४

उलंगता गया एक जज़ीरे कने
जो देकता है जा उस जज़ीरे मने

लगे हैं गगन ऊँचे सन्दल के भाड़
खड़े हैं हर एक ठार खुश पॉव गाड़

ज़मीं सब सोने की है इस ठार की
भलकने में ज्यूँ सूर के सारको

भरे हैं मकोड़े वहाँ ठार-ठार
हती सारके आदम्यों खान हार

भुके होके फिरते हैं चारे के तई
सो खाने मँगे इस बिचारे के तई

लग्या फिर वो जिव के दुल्लू^५ न्हासने
सो देख्या पंखी एक ऐसे मने

बड़ा धड़ शुतुर्मुग के सारका
बड़े शह परों तेज़ मिनकार^६ का

लिया उस मुरा की मुण्डी जायकर
भसम कर सट्या तिल मने खायकर

देख्या शाहजादा जो इस हाल कूँ
छुटी कांपनी तन पे हर बाल कूँ

जो हैबकज़दा हो लगा कांपने
सो तदबीर वाँ ते किया न्हासने

एकाएक कुबल आके बाज़ी घड़ी
सो वई भाड़ उपर ते मील्या उड़ी^१

जंगल बीच पड़ लाख दुशवार सात
लग्या न्हासने ताई बाकी संगत

न कुच हाल तन में न कस पाँव में
सो उठता व पड़ता हर एक ठाँव में

अदिक प्यास हौर भूक ते तलमले
चल आया हलूँ एक हरे भड़ तले

सो वाँ एक चश्मा अथा आव का
खज़िल^२ उस अँग आव गुल्लाव का

पड़्या था वहाँ गैव का एक अनार
सो रंग-रस भर्या हौर मिठा दानेदार

भुका था सो वई छील खाया उसे
रगे-रग मने जीव आया उसे

पिया नीर चश्मे मने जाय कर
किया तकिया उस भाड़ तल आय कर

पंखी एक ऐसे में मरगोल^३ उठा
यूँ उस भाड़ उपराल थे बोल उठा

१ एका-एक... मील्या उड़ी—एकाएक एक बड़ी मुसीबत आई और टल गई २ शर्मिन्दा

३ बोल उठा ।

“सोता है जवाँ यू जो साहब जमाल
हुआ है जो बिरहे के गम में निढाल

बड़ा कुच बला एक यों आयेगा
सो इस बेगुनाह जवान कूँ खाएगा

पंखी दूसरा सुन बुरा मानकर
देरेगे^१ अधिक मन मने आन कर

लगा पृछन उसकूँ यू क्या है कना^२
कि इस बेगुनाह का सो क्या है गुनाह

कह्या वो पंखी खोल इस धात तब
कि क्रिस्ता सो इस जवान का है अजब

कि एक दिन कितेक जिन आये अथे
मिल एक ठार मजलिस भराए अथे

जो कोई था बड़ा जिन जो मजलिस मने
एकाएक उठ्या बोलकर यूँ उनें

कि है वस्तु ऐसी जो वो खाई जाय
वो खाये तो जिन्नो की शाही मुँज आय

सुन्याँ हूँ कि कई बाग है एक रुखन^३
है उस बाग का नाँ अवतार बन

वहाँ भाड़ है एक अन्नार का
लगा है उस एक फल जो अवतार का

देवेंगे मुजे ल्याके वो फल जो कोई
तो मेरा प्रान उसते खुश नूद होइ

मजलिस में बाजे अथे जिन जिते
सो ढूँढ़ ल्यावेगे कर कबूले विते

छः महीने की फुरसत^१ लिये एक रुखन
चले हूँढ़ लेने वो अवतार बन

सो एक जिन ने उस बाग़ कूँ पाइया
वो अवतार फल जायकर लाइया

एकाएक प्यासा हो पानी के आस
पीने नीर आया जो चश्मे के पास

वले फिर के जाता वखत नावकार
बिसर कर गया था वो अवतार अनार

उसी फल कूँ यूँ ज्वान खाया अहे
वले भेद इसका न पाया अहे

बिसर कर गया सो वो जिन आग हो
बसाने बला उसपे आता है वो

अगर अकल कुच हो गया उस मनें
है खातिम^२ सुलेमान का उस कनं

वो जिन फिरके जिस वक्त यो आयेगा
जो अन्नार हूँढ़ने के तई धायेगा

कना यूँ गज़ब सँ उसे हाँक मार
“कि ऐ जिन कुदंगी नजिस नावकार

वो अवतार बन था सुलेमान का
‘रज़ाबाज’^३ उसके फल उस ठार का

तुजे तोड़ने हात किस धात आये
तू क्या काम रह-रह किया हाय-हाये

सुलेमान भेजा अहे यो मुजे
लेकर आवो बन्द कर पिछौँडे तुजे^४

१ इजाजत लेना २ बेकार ३ अंगूठी ४ बिना आज्ञा के ५ लेकर.....पिछौँडे तुजे—सुलेमान ने तुम्हारी मुश्के कस कर लाने के लिए मुझे भेजा है।

दिया है निशान आपना मेरे हात
खड़े हो न देखूँ^१ तुझे एक सात

वो जिन जूँ सुलेमान केरा निशान
देखेगा तो उड़ जायेगा वई परान

दिसेगा उसं टूट पड़े तूँ अकास
सो छुप जाएगा बीच पाताल न्हास^२

सो सैफुल मुलुक जूँ सुन्याँ यू बिचार
डड़ी मारकर जा छुपा एक ठार

जूँ आया वो जिन दौड़ चश्में कने
एकाएक आया निकल भार उने

अंगूठी दिखाया उसे हाँक मार
सो हैबक़ज़दा^३ होके बेअख्तियार

हुआ ग़ैब पाताल में जा वो जिन
सलामत छुट्या उसके हाताँ ते इन

१ देखूँ २ दिसेगा.....पाताल न्हास—उसे ऐसा मालूम होगा, जैसे आसमान टूट पड़ा हो
वह दौड़ कर पाताल में जा छिपेगा २ बहुत अधिक डरना ।

इस्फन्द नाम के द्वीप में पहुँचना

जो राहत कलम की ज़बॉ को छुटे
कलम साखे असरार की यूँ फुटे^१

कि रहमान अपने बन्दूयों के उपर
दया की जो मँगता है करने नज़र

उचा आपने प्यार के हाथ सँ
बचाता है आफ़त थे हर धात सँ

करीमी^२ जहाँ पर करन हार वै
मशक्कत कूँ राहत देवन हार वै

जो निकल्या वहाँ थे सो सैफुल मुलूक
पड़्या जाके हौर एक जंगल में चूक

एकेला जो आँगि हो जाने लगा
कठिन बाट कूँ चल घटाने लगा

चड़या जायकर एक टेकाँ उपर
देख्या दूर ते एक मैदाँ उपर

सो चौधीर उजाला बसता अहे
जंगल नूर सीते च बसता अहे^३

लगा बहुत उसे यू तमाशा अजब
रह्या गुम हो आपस मने आप तब

चड़या टेक उपर थे उतर आइया
नज़र चार अतराफ़ दौड़ाइया

सो वेमिस्ल नक़शे रंगारंग महल
सफ़ा दार एकाएक पड़या दृष्टि तल

१ जो राहत यूँ छुटे—जब कलम की ज़बान चैन और शान्ति का वर्णन करेगी तो उस समय नीचे लिखे रहस्य जाहिर होंगे २ मेहरबानी ३ जंगल.....बसता अहे—जंगल नूर से हँ बसा हुआ दिखलाई पड़ रहा था ।

जो नज़दीक आया खुशी सात जब
अपस ते अपी खुल पड़े कुफल सब^१

दुरुनी^२ चल्या ज़ौक पा बेशुमार
निभा देखता है जो वाँ ठार-ठार

सवारे अहें गैब थे सब महल
बिछाने बिछाए हैं जॉ ताँ निछल

रखे हैं तख़त हौर उसके उपर
सोता है ले मूँ टॉप कोई बेख़बर

न हिलता न चलता है इस ठार ते
न धरता खबर क़च संसार ते

न डर जीव कूँ अपने इस वक़्त पर
दिया मर्ग के हात अपस सख़्त कर

शाहजादी को पाना

चल्या धस के देख्या नजिक जा उसे
सो नारी है मकबूल^१ सोती दिसे

न उस सार सूरत मने हूर कई
न वैसी तजल्ली सती सूर कई

कितेक बार बैठा नजिक बेकरार
मगर नींद ते होयगी कर हुशियार

सो हरगिज़ वो हुशियार होती नहीं
मुवे त्यू च दिसती है सोती नहीं

डरथा हौर मॅग्या फिर के जाने वही
सो देख्या पटी एक सिराने वही

उचा वो पटी देखता है जो पड़
सो बोंदया है कोई नींद उसके उपर

सट्या फोड़ ज्यू टुकड़े कर वो पटी
वो मकबूल एकाएक वहीं जाग उठी

अंगे हो किया शाहजादा सलाम
मुक उसका देखत जौक पाया तमाम

सो हैरान हो बैठी वो उस घड़ी
अधर खोल ज्यू फूल की पखड़ी

कहीं यूँ “कि यों आदमी जाद कुँ
व थी कुदरत आने, क्यों आया है तूँ^२”

सही कह कि तूँ कौन किस ठार का
खबर क्यों लिया है तूँ इस ठार का

१ खूबसूरत २ न थी कुदरत आया है तूँ—किती में ऐमी ताकत न थी कि यहाँ आ सके, तू कैसे आ गया ।

तेरा नावँ क्या कौन इन्सान तू
खबर दे मुझे गुनवती जान तू”

तब उस शाहज़ादा उठ्या बोल कर
हकीकत सो अपना कहा खोल कर

“कि ऐ नार किस्सा है मेरा दराज़
कहूँगा जो सुनने कूँ आसे नवाज़”

हुए बरस तेरह मुझे रात दिन
जो फिरता हूँ बैताग^१ सर ले कठिन

बलायों बहुत सूसियों^३ विरह क्यों
जफ़ायों देख्या इश्क के गिरह क्यों

हुआ इश्क थे हाल सब पायमाल
न जानूँ होवनहार है क्यों अताल

बदीउल जमाल एक है शहपरी
वो सूगत पे अपनी मुजे यूँ करी

कहूँ क्या तुज ऐ शाहे शक्कर लवों
कि र्या लटपटाती है मेरी ज़वों

न वो मिलती है ना गुलिस्तों एरम
यूँ इस ताई खोता हूँ अपना जनम

तले धरतरी हौर उपर आसमान
दुःखो पीस जाता हूँ ग्याने मियान

कि धरता हूँ सीने में दुक कड़ज मैं
हुआ हूँ पिरित सोच जल भड़ज़^४ मैं

कि धरता हूँ सीने लक खार-खार
पड़े हैं कलीजे में रौज़र्न^५ हज़ार

एकाएक अल्लाह जो लयाया मुजे
सो इस महल में आज पाया तुजे

तेरा हाल हौर वज़ा क्या है सो बोल
छुप तू नको मुजते दिल खोल-खोल''

शाहजादी के साथ दोस्ती

वो अमृत के गुन की सगी मेहरबान
फिरासत^१ सँ उसका जलया दिल पछान

कही यूँ “कि वेटी हूँ मैं लाज की
सरांदील^२ के मुल्क के राज की

हमें दरअसल तीन बहनों अर्थ्यों
सो एक दिन रज़ा बाप का ले वित्यों

गया बाग़ में सैर करने के तई
लग्यों तैरने हौज़खाने में वई

सो दरहाल वॉ एक बारा^३ उठ्या
चमन दर चमन सब धुलारा उठ्या

सो उस धूल में ते जनावर बड़ा
उचाकर^४ मुजे ले गया वई उड़ा

हवा पर चल्या दौड़ पंख मार-मार
रख्या मुंज को ल्याकर सो इस ठार उतार

अंग हो मेरे आ किया वई सलाम
कह्या डर नफ़ी ऐ चंचल नेक नाम

कि आशिक़ हूँ मैं तुज उतम माह का
कि बेटा हूँ परियों के मैं शाह का

बड़ा भाई जो एक मुजे आज है
वो दरियाये कुलजुम^५ केरा राज है

इसी महल म्याने है मेरा मुक़ाम
न मेरा है यू बल्कि तेरा मुक़ाम

यू जागा जज़ीरा है इसफ़न्द का
फ़रहबग़श^१ हौर लाख आनन्द का

रख्या यूँ लेकर आके इस ठार मुंज
किया यूँ बला में गिरफ़्तार मुंज

महीने को एक बार आता है वो
मुंजे देक फिर-फिर के जाता है वो

मैं उसका क़ह्या ना सुनूँ देक कर
गुस्ता बेनिहायत पकड़ मुंज उपर

मंतर सूँ मेरी नींद कूँ बाँद आये
अकेली मुंज इस महल में छोड़ जाये

सो तू जिस पटी कूँ सट्या फोड़ कर
वंद्या था मेरी नींद इसके उपर

इसी वज़ा सूँ वर्ष बारह हुए
मेरे दीस चुपक्री आवारा हुए^२

कहूँ क्या तुजे कहने की बात नई
कि याँ एख्तियारी मेरे हात नई

दिल अपना तवक्क़ल सूँ किये हूँ गँभीर
कि नई मुज खुदा बाज कोई दस्तगीर^३

नको जा, दो दीस अछू^४ मेरे पास तूँ
नको ल्या ले कुच दिल में व स्वास^५ तूँ

वो आसे^६ ना अजनूँ न हो घावरा
अजहूँ दीस आक्री है एक सातरा

१ आनन्द देनेवाला २ मेरे दीस... आवारा हुए—मेरे दिन बिना किसी कारण के बेकार हुए। ३ मदद करनेवाला ४ रहो ५ डर, भय ६ उसके आने से।

दे शहज़ादे कूँ धीरक इस घात सूँ
उठी बोल फिर यूँ मिठी बात सूँ

कि इस वक़्त पर मैं तुझे ऐ जवाँ
तेरी मोहिनी के जो देऊँगी निशाँ

कहूँगी जो बान्ने एरम की ख़बर
तो क्या अपड़ेगा मुजक़्क़ इसका समर^१

बदीउल जमाल के बारे में ख़बर मिलना

वो गुनवन्त सकी^१ जो कही अपनी बात
खुशी सँ फुगी शाहज़ादे की जात^२

अदब की रविश सात सर भुँइ पर धर
दुआ हौर सना^३ उसकूँ लई धात कर

कया यूँ कि ऐ मोहनी नेक नाम
फ़िदा तुज पो थे जीव मेरा तमाम

अगर तू कहेगी मुजे उसकी बात
तो देगा खुदा तुज जज़ा^४ हाते-हात

जो देगी तूँ उस मोहनी का निशाँ
करेंगे दुआ तुज ज़मीँ आसमान

जो ख़बराँ कहेगी तूँ उस हूर के
तो उतरेंगे तुज पर तबक़ नूर के

रह्या बहुत कुच आबारा हो मैं
इसी ताईँ फिरता हूँ बारा हो मैं

परेशान उसका हूँ मुल्के-मुलूक
भर्या है रगे-रग मने उसका दूक

मेरा दूक गवाँ तूँ कि है तुज सबाब
मुजे तेरी दौलत सँ कर क़मयाब

देखी आजिज़ी उसकी ज्यूँ वो तपा
सो दिल में ये वई मेह का जोश उठा

लगी खोल कहने कूँ सुन ऐ जवान
कि मुज पीट की थी नन्हीं एक बहन

१ सखी, सहेली २ खुशी सँ.....जात—शाहज़ादा बड़ा प्रसन्न हुआ ३ तारीफ़

४ बदला ।

हमन तीन बहनों में वो खुब थी
सो बेमिस्ल आलम में महबूब थी

तन उसका निछुल मकमकाता अछे
अंबर मुश्क का बास आता अछे

हसी सात गुलरेज़^१ ज्यू बाग थी
कलेजों पे हूरों के न्यू दाग थी

सो एक दिन ले संगत हमना कुँ माई
खुशी सात एक बाग में लेकर आई

कितेक दीस वाँ शादमानी किये^२
अदिक जशन वाँ खुस खानी किए

एकाएक औरत एक इस ठार पर
हरे भाड़ पर थे उतर आय कर

अंगे हो मेरी माँ कुँ कीती सलाम
उठी बोल इस धात हो हम कलाम

कि परियों के राजा की औरत हूँ मैं
देखन आई हूँ तेरी बेटी के तई

सकल शह पर्यों में मेरा नाव है
मेरा गुलिस्ताने एरम ठाँव है

जो है मुंज कने एक बेटी नन्हीं
सो है मेरे नैन की रोशनी

रख्या नावँ उसका बदीउल जमाल
है उस सात मेरा मुहब्बत कमाल

बहुत दिन थे अछती हूँ इस ठार में
अदिक खुश किये हूँ यू गुलज़ार मैं

तुजे देक मैं जौक पर जौक पाई
अछो कायम यू आज थे आशनाई

यू बेटी सो तेरी है बेटी मेरी
यू बेटी सो मेरी यू बेटी तेरी

पिला प्यार से दूद तेरा उसे
कि मैं देउँगी दूद मेरा उसे

कर इस वज़ा सँ बात एकस कूँ एक
रहे दो जने मिल अपस एको एक

लगा जीव वो यूँ मेरी माई सात
करन आवे महिने कूँ एक बार बात

बड़ी होयगी वो चंचल आज कूँ
अछेगी सूरज थे निछल आज कूँ

अजब शह परी है वो साहब जमाल
कहीं जग में होसे न इसका मिसाल

मैं अपने नगर बीच अछती जो आज
तो करती हर एक वज़ा तेरा इलाज

कहती हूँ हौर एक बात सुन ऐ अज़ीज़
अगर तुज सकत है तो दे मुज तमीज़

सो शहज़ादा सुनकर हुआ यूँ खुशहाल
कह्या सुन ऐ रौशन तूँ साहब जमाल

कि मैं अर्ज करने भी मँगता हूँ तुज
अगर खुश जन्नो खोल फ़रमाये मुज

खुदा मुश्किल आसों करन हार है
निराधारियों कूँ वो आधार है

कही मोहिनी बोल क्या है सो मुज
कहूँगी मैं उस बात का जाव तुज

कहा “जब वो देव आवे इस ठार पर
सो तू पूछ ले उसके जीव का खबर

मेरा जीव तुज हात में है यहाँ
तेरा जीव मालूम नई मुज कहाँ

यू खूबी खबर उसतें ले मुज कना
तो मैं कर सटूँ उसकूँ तिल में फ़ना”

यू सुन मोहनी कई शकर लब कूँ खोल
लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल

कि इस दीस मुजकूँ रख्या सो परा
लग्या मुजसूँ बातों करन बहुतेरा

कह्या यूँ कि तुज बिन नहीं कोई मुंज
तेरा इश्क काफ़ी है जग दुई मुंज

बहुत है मेरा जीव तेरे उपर
वले नई तेरा जीव मेरे उपर

मैं इस बात कूँ जवाब दी यूँ फिरा
कि मुंज पर अगर जीव होता तेरा

तो अलबत्ता अपना कता राज़ मुंज
देता अपने बातिन ये आवाज़ मुंज

तेरे हात में है मेरा जीव तो यों
वले कह मुजे है तेरा जीव कहाँ

अगर आदम्यों ये पर्यों कूँ हयात
अछे ज्यास्त तो क्या हुआ नई निहात

दो दिन की दुनियाँ कूँ न कर एतबार
कि जीना हमारा है दो दिन उधार

हैं आगे पिछे जान हारे हमीं
समज लेवें आपस में बारे हमीं

सुन्याँ मुंज ज़वाँ थे वो यू बात ज्यूँ
उठ्या बोल कर फेर मुज सात यूँ

कि है सच तेरा जीव मेरे हात में
वले नई मेरा जीव तेरे हात में

मैं ऐ मोहनी तुजते अब क्या छुपाऊँ
कता हूँ मेरा जीव रहता सो टाउँ

कि है एक सन्दूक शीशे केरा
सो उसके दुरुनी^१ अहे जीव मेरा

वो सन्दूक सो है दरिया के भितर
अंगोटी^२ सुलेमान की कोइ अगर

दरिया के नज़िक जाके दिखलायेगा
निकल वो संगती च उपर आयेगा

बज़ाँ वाँ थे ऐ मोहनी मेहरबान
मेरी ज़िन्दगानी सरी कर पछान^३

१ भीतर २ अंगूठी ३ मेरी ज़िन्दगानी सरी... .. पछान—यह समझ ले कि मेरी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई ।

दैत्य का मारा जाना

सुन्याँ शाहजादा जो इस बात कूँ
कह्या सुश हो उस पद्मिनी ज्ञात कूँ

कि “ऐ मोहनी पाक दामान की
अँगूठी तो हज़रत मुलेमान की

मेरे पास हाज़िर है दत्र^१ में अताल
तूँ क्यों मुजकूँ सँभालती सो सँभाल”

मुलेमान की उस अँगूठी कूँ देक
हुए शाद बहुत ही च एकस ते एक

ज़माना जो आखिर हुआ मेहयाँ
सो दोनो को हिम्मत दिया आसमाँ

पकड़ हात बाटसारू हुए^२
मिल अपने दरद दुक के दारू हुए^३

एकस कूँ एकन जल्द हो पाँव सार
शिताबी सती आये दरिया किनार^४

दिखाये दरिया कूँ अँगूठी निछल
सो दर हाल सन्दूक आया निकल

जूँ एक वारगी पाय दोनां जने
उचाकर ले कर आये दोनो जने

वो सन्दूक ज्यूँ देखिए खोल कर
जनावर अथा एक उसके भितर

सटे उस जनावर की मुंडी^५ मरोड़
किये चूर सन्दूक को तोड़-फोड़

१ कमर में २ रास्ता तय करने लगे ३ मिल अपने दारू हुए—वे दोनों मिल कर एक दूसरे का दुःख दर्द दूर करने लगे ४ एकस.....दरिया किनार—एक दूसरे की बजह से दोनों तेज चले और जल्द ही दरिया के किनारे पहुँच गए ५ सर।

सो दर हाल पैदा हुआ एक गुवार
बरने लगा मेहों लहू बेशुमार

पहाड़ सारका सर एक उपराल थे
पड़्या सो हल्या धरत पाताल थे

दिया भड़ बर्या जीव अपना तुरुत
सो उसके मरग थे हुए गुश बहुत^१

खुदा इस बलाते किया ज्यू खलास
सो चलने कूँ वाँ ते किये फ़िक्र खास

दोनों वई नन्ही एक हौड़ी किये
जवाहिर कंकर इसमें कुच भर लिए

कर अल्लाह का शुक्र वाँ बेशुमार
हुए गुश दोनो मिलके हौड़ी सवार

क़ज़ा पर नज़र रख तबक़्क़ल सतीं
दरिया पर चढ़े मौज़ के बल सतीं

चल्या बाव ले बेग हौड़ी कूँ काड़
अजायब कितेक देखते भाड़-पाड़

छः महीने तलक दुःख जफ़ा देक-देक
उलंगते अजायब जज़ीरे कितेक

न थी सुद किधर मौज़ बयो आवते
न था फ़ाम यूँ कुच किधर जावते

हो माँदे बहुत एक जज़ीरे में आये
कितेक दीस रह वहाँ अमन पाये

१ दिया भड़.... बहुत—उसने अपनी जिन्दगी फ़ौरन ख़त्म कर दी। उसकी मौत से ये दोनों बहुत प्रसन्न हुए।

ताजुज मुलूक से भेंट करना

ज्यूँ एकबाल का दर खुला गैब थे
चढ़या दुक के मुक पर कल्ला गैब थे^१

खुश उस ठार रोज़ी फ़रागत हुआ
परेशान खातिर कूँ राहत हुआ

सो एक दिन निकल शाहज़ादा वहाँ
हल्लू सैर करने लग्या जॉ तहाँ

सो आदम कितेक वॉ पड़े दस्त तल
एकाएक खुशी आई मन में उबल

सो नज़दीक जा सबकुँ कीता सलाम
कहे मिल अलैकस सलाम^२ उस तमाम

वजाहत उपर उसके रक ओक कई
मिल एक ठार बैठे सो नाफ़ोक वई^३

फ़िरासत में देक उसकुँ आली वक्कार
लगे भेजने मरहवा वेशुमार^४

हुए एक जेहत सात ज्यूँ हम कलाम
सो बोल्या उनन धर दुक अपना तमाम

जो एक बारगी लोग उस ठार के
सुने क्रिस्ते इसके हौर उस नार के

सो लक धात सँ दिल में दुक आन ले
किते वज़ा सेतीं बुग मान ले

१ ज्यूँ एकबाल.....गैब थे—जैसे ही भाग्य ने साथ दिया वैसे ही दुःखों के मुँह पर चोंटा पड़ गया २ सलामालेकुम ३ वजाहत.....वई—उसकी हालत को देख कर सभी लोग वहाँ एक साथ बैठे ४ फ़िरासत.....वेशुमार—उसकी अधिक बुद्धिमानी को देख कर सब लाग उसकी प्रशंसा करने लगे ।

कहे यूँ कि “वो जगमगाते शमे
समझते हैं कि बज्र के सो हमें

है बेटी हमन राज के भाई की
जनी माई जीती है उस जाई की^१

सरांदील में बादशाही संगीत
है उसका जिता बाप हाली हयात

चचा उस नहीं का सो एकी च है
वो वासित कते सो नगर बीच है

नेखा नाव^२ उसका है ताबुल-मुलूक
अजब कुछ है उसका मुरौवत मुलूक

हमें सब रैयत हैं उसकी तमाम
यहाँ ते उसी का है आगं मुक़ाम”

ज्यूँ ऐसी खबर खल्क ते पाइया
सो दौड़ उस सहेली कने आइया

कहा खोल दर हाल अहवाल उसे
खबर दे किया बहुत खुशहाल उसे

फ़रागत के मिल दोनों हौड़ी पे चढ़
चले वाँ ते राहत की दरिया में फ़ड़

चले शहरे वासित क़दम ज़ौक सँ
लगे बाट चलने कूँ अत शौक सँ

कहीं बाट मंजिल में आलस न कर
शिताबी सेनी अँपड़े जाव उस नगर^३

कितेक पिछें शहर वासित कूँ पाय
बहर हाल उसकी हवेली में आय

१ जना माई... उस जाई की—उस लड़की को उरत करनेवाली माँ अभी जीती है

२ अच्छा नाम ३ शिताबी.....उस नगर—बहुत शीघ्र उस नगर में पहुँच गए ।

जो नज़दीक उस शहर के खास बाग़
अथा सो रहे वीं लगे दिक चिराग़

रयन जाग़ रब्बी के फ़रमान सैं
जो आया निकल सूर असमान सैं

सो उस शहर का बेवदल शहरेयार^१
नेकोकार ताजुल-मुलूक नाम दार

इसी बाग़ में खुसरवी दात्र सां
करन सैर आया बड़े लात्र सैं^३

सो नागह नज़र उसकी इस ठार पर
पड़ी शाहज़ादे के दीदार पर

सो नैनां कैं उसके लगा मुबुर्क^४ बहुत
बुला उस निभाने लग्या मुक बहुत^५

बड़ा बरूतवर कोई है कर पछान
नज़िक बैसला उस कह्या “ऐ जवान

कहो कॉ ते आया है ऐ जवान तू
सो मँगता है जाने कैं किस ठाँव तू

क्यो आना हुवा यों तेरा बोल मुंज
जो कुछ है तेरा माजरा खोल मुंज”

जो इस धात का उसते पाया मुलूक
लग्या बोलने हाल सैफुल-मुलूक

“कि ऐ शाह, ग़मगीन हो संसार ते
मैं आया हूँ यों मिस्र के शार^६ ते

१ (फ़ारसी) बादशाह २ अच्छा काम करनेवाला ३ इसी बाग़ में . . .लाक़ सैं—
उस बगीचे में ताजुल मुलूक बादशाहों की शान शोकरत से सैर करने को आया ४ अच्छा
५ बुला.....मुक—उसको बुलाया और उसके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा ६ शहर से।

मेरा किस्सा है सफ़्त दूरो दराज
लगेगा कहने बार^१ ऐ शाहबाज़

कि लए दिन ते फिरता हूँ गुरअत मने
जनम सब गँवाया हूँ शिद्दत^२ मने

कि होसे न मुज सार दुःखियारा कहीं
न मुज सार वैताग^३ मारया कहीं

बहुत रंज देख्या हूँ मैं टार-टार
नहीं है मेरे दूक कूँ कूच शुमार

न मेरी जफ़ा रंज कूँ है शुमार
न सीने कूँ टण्डक न दिल कूँ करार

मेरा दर्द कोई ना सुने तो भला
सुने तो बिला शक उठे तलमला

जो खातिर में ल्यावे मेरा रंज कोइ
तो उसका सीना फाट ज्यूँ फूट^४ होइ

खबर जिसकूँ होवे मेरे वैताग ते
तो जल राख होये दुक की आग ते

गरीबी मेरी खोल कहने मुजे
अदिक शर्म आती है क्या कऊँ तुजे^५

मुन्या यूँ जो ताजुल-मुलूक शह नवल
दरेगे^६ सँ मन में ते आये उबल

कि बोल्या ज़ाँ खोल “सुन ऐ जवान
नको डर कि अल्ला है मेहरवान

१ बार लगेगा, तकलीफ़ होगी २ मुसीबत ३ दुःख ४ एक विशेष प्रकार की ककड़ी, जो पक जाने पर फट जाती है ५ रंज और यम से ।

कि ग़मनाक हूँ मैं भी लई साल ते^१
ख़बर कुच नहीं मुज मेरे हाल ते

भतीजी मेरी एक साहब जमाल
गँवाई गई सो हुए बारह साल

दुक इसका कल्ल मुझकूँ छाती नहीं
कि अजन्म वो कई पाई जाती नहीं

एकाएक गुम हो गई बाग़ ते
कि मरता हूँ मैं निशदिन इस दाग़ ते

मुई है कि जीती नहीं कुछ ख़बर
बड़ा दुःख है यूँ मुज कलेजे भितर^२

जो यूँ बात फिर इस परेशान कूँ
लग्या तीर हो दौड़ जा कान कूँ

सो जलती दुरुनी^३ सूँ जल आह, मार
उलेड्या अँख्याँ में ते दुग्य बेशुमार

कह्या “दुख न कर ऐ मुखी राज तू
ख़ुशी कर यूँ दुख छोड़ दे आज तू

कि तेरी भतीजी कूँ ल्याया हूँ मैं
कुबल ठार^४ ते उसकूँ पाया हूँ मैं

सो क्यों उसके लेखे सगा भाई हो
बचाया हूँ सो जान ते माई हो^५

तुजे आज ते ज़ौक है लाख लाख
वले मैं सोहूँ ग़म ते नित चाक चाक

१ कई साल से (लई का प्रयोग मराठा में ‘कई’ के अर्थ में होता है) २ जलना हुआ दिल
३ बहुत ही अगम्य स्थान ४ सो क्यों उसके.....माई हो—एक संग भाई और माँ की
तरह मैंने पूरी कोशिश से उसे बचाया है ।

जिता कुछ है नाज़िल दुःख आफ़ाक़ पर
जम्या है वो दुख मेरे सीने भितर^१

अज़ल ते यू आया है बाँटा मेरा
कि पंज्याँ है काँठ्याँ सूँ फाँटा मेरा^२

दरद दुक सूँ इस वज़ा गुज़रान बाद
मिल एकस कूँ एक हात म्याने ले हात

चले इश्तियाक़ी^३ सूँ दोनो जने
वहीं आये उस पाक दामन कने

देख्या ज्यूँ भतीजी कूँ आपीं चचा
सो पुतली कर अँख्याँ की लेता उचा

गले लाग अड़ड़ा के रोने लग्या
फ़िदा उसके उपराल होने लग्या

दिल उसका बहुत धात सो हात ले
कलेजे के टुकड़े कूँ संगत ले

लेकर आइया घर में ताज़ीम^४ सात
गया शहर में लेके तकरीम सात

घर आया सो हुई शादमानी बड़ी
किया शहर में मेज़बानी बड़ी

नवाज्या अदिक शाहज़ादे के तई
रख्या जीव कर दूख ज़ादे के तई

दिया भेज कासिद कूँ वई भाई पास
मेहरबान उसकी जनी माई पास

१ जिता.....सीने भितर—आसमान से जितनी मुसीबतें संसार में आई हैं, वे सब मानों मेरे ही लिए थीं २ शौक़ से ३ इज्जत के साथ ।

हुमाये सआदत असर खोल पंख
उड़या ज्यू सरांदील की धर निशंक^१

सरांदील का बादशाह बख्तवर
सुन्या अपनी बेटी केरा ज्यू खवर

इता कुच हुआ खुश जो बोलया न जाए
मगर गैब ते लाक गर—कोट आए^२

लगी भड़ने अम्वर ते रहमत की फुई
जलनहार सीने कूँ टंडक हुई

१. हुमादे.....निशंक—वह दूत सिंहलद्वीप की ओर क्या गया मानो हुमाँ पक्षी अपना पंख खोल कर गया। हुमाँ के सम्बन्ध में विश्वास है कि जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ती है, वह बादशाह हो जाता है २ इता कुच.....गढ़-कोट आये—सिंहलद्वीप का बादशाह इतना प्रसन्न था मानो उसे लाखों किले प्राप्त हो गये हों। प्रसन्नता के मारे उससे कुछ बोला नहीं जाता था।

शाहज़ादी के घर जाना

भया^१ वस्ल^२ का बाव चौंधीर ते
सूकर बाग़ मन का खुल्या सीर ते^३

हुआ फ़रह रोज़ी जनी माई कूँ
तमाम उसके बहनों कूँ हौर भाई कूँ

कबीले कूँ सब आबरूई चड़ी
हुई सब सरांदील कूँ शादी बड़ी

अजीज़ अर्जुमन्द अपनी बेटी के तई
बुला भेजने का किया फ़िक्र वई

बुला भेजने उस उतम जाई कूँ
किया मुस्तइद उस केरे भाई कूँ

दे संगत लश्कर के दल वेहिसाब
बड़े दबदबे सात भेज्या शिताब

जो मुस्ताक़ हो भाई ल्याने चल्या
सगी भान^४ के तई बुलाने चल्या

चचा के नगर बीच ज्यू आइया
सो देक उस चचा जीव कर पाइया

हज़ार आरजू सात दोनो मिले
ख़ुशी के कल्य़ाँ हर तरफ़ ते खिले

बोल्या घर कूँ ल्या सो मिले भाई भान
एकस कूँ एकस दे लिए जीव दान

जो कुच दुःख अथा आपन दिल मने
सटे काड़ सीन्धो में ते तिल मने

लग्या दिल कूँ हम^१ भान हम भाई की
जो फिर कर जने पेट ते भाई की

गम एक सातरा लाक इशरत^२ संगात
दुआ ले चचा हौ चचानी के हात

निकल वाँ ते संगात ले भान कूँ
चल्या मिल के सैफुल मुलूक जान सँ

पंते-पंत तीनों कन्थे^३ खोलते
गँमाते वक्रत हौर किस्से बोलते

सरांदील के आए ज्यूँ वो नज़ीक
उमस^४ पर जना आप खुश हो अदीक

निकल घर ते लाक इन्तज़ारी सती
सो दौड़था वही बेकरारी सती

जिगर शोशे कूँ अपने ज्यूँ पाइया
छुतर कर अपस उसके सर छाइया

सिने सँ लगा उस परी चेहर कूँ
उंडेलन लग्या मेह पर मेह कूँ

बड़े दबदबे सात ल्याया उसे
सो फुल नीर सँ मुक धुलाया उसे

ज्यूँ आया गया सो रतन हात में
नवा जीव आया त्यूँ हुआ जात में

मित्थो दिल सँ सैफुल मुलूक जान सँ
हुवा आसमों उस जली भान कूँ

हकीकत कैं उसके अपड़ खूब आप
दिया धीरज इस ज्यू देवें माई-बाप^१

रख्या उस हतेली के फोड़े नमन
हो दरमान^२ उसका किया दुःख भंजन

करम उसके हक्क हद ते पैलाड़ कर
सठ्या गर्द एक धर थे सब भाड़ कर^३

अजीजों में सब दे बड़ाई उसे
इनायत किया पेशवाई उसे

१ हकीकत.....देवें माई बाप—सैफुल मुलूक की हालत जान कर उसने उसे धीरज बंधाया जैसे माँ-बाप अपनी सन्तान को देते हैं २ दवा दारू करना ३ करम.....सब भाड़ कर—उसने सैफुल मुलूक पर बड़ी मेहरबानी की और इस तरह सैफुल मुलूक के दुःख दर्द मिट गए ।

साभद का मिलना

कहानी कहन हार इस धात की
चलाता है खुश बात हर बात की

कि एक दीस सैफुल-मुलूक शहसवार
निकल आइया भार खेलन शिकार

एकाएक बाजार में एक जवों
नज़र तल पड़्या ज़ार हौर नातवों^२

मुसल्लम है दिलगीर^३ हौर बेकरार
वजाहत^४ मने ऐन साभद के सार

किया याद साभद कूँ उस देक कर
अंभू लाइया दूक के नयन भर

अपस में अपे भाइया सरद उसास
किया आपने मन मे ग़म बेक़यास

कह्या अपने लोगों कूँ “जा उसकूँ लाव
अपे आये लग; घर ले जा बैसलाव”

उसी धात जा उस बुला लाइये
ले जा एक ज गे पे बसलाइये

कि ज्यूँ उस मुबारक सवारी सू फीर
ज्यूँ आया शिताबी सू अपने मंदीर^५

किया याद आते च उस ज़वान कूँ
बुलाया नज़िक उस परेशान कूँ

शफ़क़त^६ जो उसकी ग़रीबी पे आई
कह्या कौन है तूँ सो मुज बोल भाई

१ बाहर २ दुबला पतला और कमज़ोर ३ ग़म ज़दा ४ ऊपर देखने से ५ मंदिर, महल
६ बेहरबानी ।

सो वई वो परेशान जल आह मार
उठ्या बोल कर यूँ कि “ऐ काम गार

कहूँगा अगर मैं मेरे दर्द कूँ
तो ताकत न रहसे किसी मर्द कूँ

भर्या सीना पूर इस दुःख सँगात
कहूँ मैं तुझे खोल किस मुख सँगात

मेरा यार एक शाहजादा अथा
वो मिलता तो मुज दुख न होता इता

मैं उसकी जुदाई ते लई हूँ हलाक
जल उसके बदल में तिल-तिल कूँ राक

न जानूँ कि वो सूर किस ठार है
मुज उस बाज आलम सब अंधकार है

वो या दूक सो है याके इकबाल सँ
ना जानूँ वो अछूता है किस हाल सँ

है फ़रज़न्द वो मिस मुल्तान का
हूँ फ़रज़न्द मैं उसके परधान का

नेका नाँव उसका है सैफुल-मुलूक
हूँ मैं बेखबर उसके तई भूक-भूक^१

मेरा नाँव साअद वले वास्त^२ नई
करूँ क्या कि वो यार इस वक्त नई

मैं अपना मुलुक सट हुए तेरह साल
न किस कूँ मेरे अवदसे^३ का मलाल

एकेला हूँ इस शहर में मैं गरीब
न कोई मुज अक्कारिब^४ न कोई याँ हबीब^५

कि फिरता हूँ नित यों दुकानें दूकान
न पिउने को पानी न खाने कुँ खान”

जो अपनी गरीबी वो बोल्या तमाम
सो वो शाहजादा उतम नेक नाम

गलाया दुःख सुना ताबल्या^१
गले ला उसे आँख में आव ल्या

कह्या यूँ कि “ऐ यार अब छोड़ दूक
तेरा यार सो मैं हूँ सैफुल-मुलूक

हमारे नसीवाँ मने ज्यूँ खुदा
लिखा था सो अपड़ाइया वाँ खुदा

हमे सर जफ़ा दे फेकाया सो वो
सलामत यूँ फिर ला मिलाया सो वो

फिकाने के काम हौर मिलाने के काम
खुदा वाज़ भी नई किसे हौर काम

यू जीव उसकी कुदरत पे कुरवान है
कि साहब बड़ा वो मेहरवान है”

मिले देक एक जीव के दूइ यार
हुवा खुश सरांदील का शहरेयार

जो साअद् आवारा हो दुक दर्द में
हुब्या था जो गुरवत^३ केरे गर्द में

सो हम्माम में गर्म ले जा उसे
किये खुश धुला आँग हलका उसे

निछल खूब किसवत^३ शहानी पिनार्य^४
रँगारंग मजलिस नूरानी भराय

१ गलाया.....सुना ताबल्या—उसने मन ही मन साअद् को गले लगाया और बड़ी शान्ति के उसकी बात को सुना २ मुसाफिरी ३ (फारसी) कपड़े ४ पहना कर।

मँगा नुकुल^१ मद मस्त आराम सँ
दोनों यार बैस आपने फ़ाम सँ

पियाले लगे भेलने जौक सँ
क्रिस्ते ल्याके ग्याने सटे शौक सँ

नवल जान सैफुल-मुलूक जग उजाल
बजिद होके^२ साअद कूँ लाग्या दुंवाल^३

कि मुजते बिलुइ तूँ फिर्या किस वज़ा
खड़या आ तेरे सर उपर ब्यूँ कज़ा

छुपा तूँ नको मुजते तकदीर कूँ
जो कुच है सो कह खोल मुज धीर तूँ

गुनी यार साअद देक उसका ख्याल
लग्या भार भाने कूँ दिल का उवाल^४

शरीबी के बातों लग्या बोलने
कँथा अवदसे का लग्या खोलने

“कि ऐ शाहज़ादे जधों ते जो मैं
चल्या कौक कर^५ तेरी सोहवत साँ वई

फुट्या जहाज़ हुक्मे गुदाई हुआ
तदों ते^६ तुजे मुज जुदाई हुआ

सो बेसुध हो तूफ़ान के बाव सँ
पड़या एक जज़ीरे में जा ताव सँ

कितेक बार कूँ देखता हूँ जो वॉ
सो चौधीर छाया है जोरों धुवाँ

१ शराब पीने समय खाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ें २ हठ करना ३ पीछे पड़ गया ४ लग्यदि।..... ल का उवाल—अपने दिल के उबाल को बाहर निकालने लग ५ अलग हो कर ६ उस समय से ।

हवायों हो चढ़ते हैं बाँ साँप सब
लिये हैं जज़ीरे कूँ बाँ टाँप सब

ना आसमान दीसता न कई धरतरी
छुटी सीस ते पाँव लग थरथरी
गगन सार ऊँचे कितेक डोंगरा^१
पड़े उसपे मुसकारते अजगरी

एता कुच वहाँ देखिया मैं अज़ाब
जो नई इस अज़ाबाँ^२ कूँ हृद हौर हिसाब

पड़था जा बलायों के भौरे मने
पड़था आ के लई-लई^३ जज़ीरे मने

बहुत दिन बहुत ठार फ़ाँके देख्या
कह्या जाय ना ऐसे बाँके देख्या

बसर दिन हुवा आके इस शहर में
मिले शुक्र वारे हमें हौर तुमें

वले कुच ग़नीमत मुजे आज है
गदा मैं तेरा तू मेरा राज है^४

वले उस परीज़ाद का खोज कई
तू इस हृद तलग अजबू पाया कि नई

कही बी गुलिस्ताने एरम का निशाँ
किया तुझ कूँ सपड़थाँ कि नई ऐ जवाँ^५

बज़ों वो उतम जान मुमिरत गँभीर
कह्या खोल इस धात साश्रद् की धीर

कि “मुज तुज बनाया सो परवरदिगार
मुज उम्मीद का एक सो ल्याया है वार^६”

नहीं कुच खुशी पाइयाँ जायेगी
वो दो दिन कूँ इस शहर में आयेगी^७

१ किले २ अजीबोघरीब ३ बहुत से ४ गदा मैं.....राज है—मैं तेरा फकीर हूँ त मेरा बादशाह है ५ मेरी उम्मीद के दरकत में फल लग रहे हैं ।

बदीउल जमाल का सरांतील आना

सआदत के जूँ दीस आगे आइये
बखत रौशनाई सँ भलकाइये^१

सुलखनवंती धनि बदी उल जमाल
एकाएक एक दिन खयाले खयाल

निपट दिल रुबाई के तन्नाज़ सँ
लटकती अपस में अपे नाज़ सँ

सरांतील के राज के घर कूँ आई
सो गुम हुई सो इस शाहज़ादी कूँ पाई

सगी भान^२ कर जानती थी अवल
बड़ी कर उसे मानती थी अवल

बड़ी दर्द मंदी सँ ग़म खार हुई
एकट दिल सँ मिल जा उसँ पार हुई

कही “ऐ संगातन^३ इते दीस तूँ
अथी किस वज़ा हौर किस भेस सँ

निकल उस बलाकन ते किस धात आई
छुटक उसके हाथों ते किस वज़ा पाई

सरासर मुझे कह जो टुक अम्र पाऊँ
दुःखी दिल कूँ मेरे सुखी कर बसाऊँ”

सो वो शाहज़ादी उठी बोल यूँ
हकीकत सो अपना कही खोल यूँ

कि “ऐ मोहनी मन की साहब जमाल
जो तेरा मुहब्बत है मुझसँ कमाल

१ सआदत.....भलकाइये—जैसे ही अच्छे दिन आगे आये, वैसे ही भाग्य चमक उठे

२ बहन ३ सखी ।

सदा यू मुहब्बत सो कायम अच्छो
भूमकता तेरा हुस्न दायम^१ अच्छो

जो मैं हात में उस बला के हुलग^२
गिरफ्तार होके जो थी आज लग

एकाएक उस ठार परवरदिगार
नज़र जो करम की किया एक बार

सो फ़रियाद-रस^३ मेरी फ़रियाद कूँ
दिया भेज एक आदमी ज्ञात कूँ

सो आ भार काढ़था मुज उस ठार ते
हूँ शर्मिन्दी मैं उसके उपकार ते

एता कुच किया मुजपे एहसान वो
एता कुच दिया मुजकूँ जीवदान वो

जो तिल उसकी उतराई ना होने पाउँ^४
कि जग में किया वो बड़ा नेक नाउँ

सुन इस बात कूँ कई बदी उल जमाल
कि “आदम कूँ आने न था. वॉ मजाल

सो किस धात उस ठार वो आइया
न थी बाट सो बाट क्यों पाइया

अजायब यू लगता है इस ठार मुज
कन्ना खोलकर तू यू गुफ्तार मुज

कही शाहज़ादी कि “ऐ मोहनी
बड़ी बात है यू नहीं कुच नन्हीं

१ (अरबी) हमेशा २ जो मैं हात.....हुलग—मुसीबत के हाथों में पड़ी हुई जो परेशान
थी ३ ख़ुदा ४ जो तिल.....पाउँ—मैं उसका बदला थोड़ा सा भी न देने पाऊँगी ।

कथा मुजसे जासे^१ न यों इस वजा
कहूँगी कमेका^२ अहे जिस वजा

दोनों मिल के चल एक गुलशन में जायँ
दो बातों करें वक्त अपना गमावँ

कि हर बात में इश्क का राज है
तुन इस राज कूँ तू कि तुज साज है^३”

कर इस धात सेती खबरदार उसे
ले जाने मैंगी बीच गुलजार उसे

जो वो एक फ़रहबूश^४ गुलजार अथा
सफादार अथा हैर हवादार अथा

उसी ठार कर शाहजादा मुक़ाम
गवनहार था जौक सँ सुवह शाम

जमी माई कूँ ले वई अपनी दुवाल
चली वो अपे होर बर्दा उल जमाल

सो चमन चमन गश्त करने लग्यो
कल्यों चून चून गोद भरने लग्यो

कहूँ वाँके चमनों कूँ मैं क्यों चमन
कि था हर चमन साफ़ एक-एक गगन^५

भर अमरत सँ चमनों के म्यान तमाम
जड़त के अये हैज़-खाने तमाम^६

अने-धन धरक^७ लहलहाते अये
कल्यों पर कल्यों वार आते अये

१ जाये २ कहने का ३ तुज साज है, तुम्हारे ही लायक है । तुम्ही से वह कहा जा सकत है ४ आनन्द-प्रद ५ आसमान ६ भर अमरत... ..तमाम—उस वाय में जो होश व डुप थे, उन पर हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे और वे अमृत से भरे हुए थे ७ वृक्ष ।

पवन भोले सा फूल की डाल हल
सो पड़ते अये फूल हर भाङ तल

मगर आ अंबर के चितारे तमाम
चमन में बिछाए थे तारे तमाम^१

अये बुन्द शबनम के यूँ पात में
रतन खास खूबों के ज्यूँ हात में

इलाही के हो जिक्र में मस्त हाल
पंखी गुल उचाते थे खुश डाल-डाल

वो आशिक सो माशूक के ध्यान सँ
मता हो^२ अपस में खुश इलहान सँ^३

जम्हों ख्याल इस धात गाता अथा
जो हर रूख कूँ हाल आता अथा

पंखी गुम हुए थे वो इलहान सुन
बहता नीर बहता न था; तान सुन

सुनी वो गला ज्यूँ बदीउलजमाल
गली उस गले के उपर रख खयाल^४

“कही यों यूँ किसका है नादिर गला
किया है मेरी रूह कूँ मुन्तला

गला यूँ न होय कुच बला है गंभीर
कि पानी किया गाल^५ मेरा शरीर

रुमें रूम मुज जौक सारा हुवा
यही रूह कूँ मेरे चारा हुवा”

१ मगर.....तारे तमाम—बाग में जो नीचे फूल गिरे हुए थे, वे ऐसे मालूम होते थे मानों आसमान में तारे बिछे हुए हैं २ मस्त हो ३ अच्छी आवाज से ४ सुनी.....रख खयाल—बदीउलजमाल ने जैसे ही उस आवाज को सुना, वह उस पर न्यूँदावर हो गई ५ गला कर ।

कही शाहज़ादी की माँ तब उसे
“यू नादिर गला उस किसी का दिसे

जिनें मेरी-बेटी कू ल्याया अहे
दे जीव-दान सर ते बँचाया अहे

जो देखेगी तू उसकूँ दिखलाऊँगी
नज़िक उसके डेरे के ले जाऊँगी”

सो वई आसरे ते वो चन्दर बदन
देखन आई सैफुल मुलूक के कदन

जो देखी निभा खूब उसका जमाल
दिधानी हो दर-हाल हुई वई निढाल

पड़ी उसके आ इश्क के दाम में
बले टुक रखी थी अपस फ़ाम में^१

दिल उसका लम्बा तलमलन^२ तन मनें
किया ठार इश्क उस केरे मन-मनें

लगा जीव बातिन में उस सात वई
चले सैर करत हलूँ दौर कई

बले शाहज़ादे कूँ उन आई सो
दरस देग़ दिल आपसों लाई सो

न थी कुछ ख़बर मस्त था अपने ठार
अपस में अपे खेंचता इन्तज़ार

ज्यूँ उस सात वो चुलबुली दिल लगाई
सो वो शाहज़ादी उसी वक़्त पाई

बुला वई नज़िक उस परीज़ात कूँ
उतम दिल रुबा सर्वआज़ाद^३ कूँ

१ बले.....अपस फ़ाम—लेकिन उसने इन तमाम भावों को अपने ही हृद तक रखा

२ तल मलाने लगा, बेचैन होने लगा ३ (फारसी) माशूक ।

कही “याद है एक हिकायत मुजे
सुनेगी अगर तू तो कहूँगी तुजे

मुनी हूँ कि कोई मिस्त्र में बेनज़ीर
है आसिम गुनी सो नवल शह गंभीर

सबी कुच खुदा उसकूँ बख़्शा अथा
वले उसके तई कोई फ़रज़न्द न था

तवज्जह वल्य़ाँ सात धरता अथा
बहुत ख़ैर आलम में करता अथा

कितेक दिन पिछेते खुदा उस उपर
नज़र कर जो फ़रज़न्द दिया बख़्तवर

सुक अपना पराया देखत वो मुख्या
उसे नाँव सैफ़ुल-मुलूक कर रख्या^१

जो था उस कने एक दाना वज़ीर
हुआ उसको फ़रज़न्द एक बेनज़ीर

वो साअद कर उसका रख्या नाँव सो
जो अपड़े बुजुर्गी कूँ एक ठाँव वो^२

कितेक दीस कूँ वो जो स्याने हुए
हर एक इल्म में खूब दाने हुए

सो दोनों पे वो खुसरव गुन बज़ाँ^३
हज़ारों शफ़क्कत सों हो मेहरबाँ

बुला भेज ख़िलअत दे ज़रबख़्त एक
दिया सो अथी सूरत उसमें एक नेक

१ सुक. ... कर रख्या—अपने और पराये लोगों को सुखी देख कर उस सुखी बादशाह ने अपने बेटे का नाम सैफ़ुल-मुलूक रखा २ जो अपड़े..... ठाँव—एक दिन आगे चल कर साअद बक़्पन प्राप्त करे ।

कि वो ऐन तेरी च सूरत अथी
वो तुज शहपरी की च मूरत अथी

देखत शाहजादा वो सूरत वही
सो आशिक हुआ बेजरूरत वही

चढ़था ज्यूँ उसे इश्क एक बार सर
ले सगीन वैताग^१ का भार सर

जुदा होयकर अपने घर बार ते
निपट तोड़ ले जीव ससार ते

अपे हौर साअद सिना सख्त कर
बिरह सँ कलेजे कूँ खद लख्त कर^२

जहाँ दर जहाँ फीरता-फीरता
दर्या बीच पड़ डूबता तीरता

न चंदना समझता न सूरज की आँच
अदिक बेखबर हो बलायों ते बाँच^३

तुजे ढूँढ लेता कहाँ ते कहाँ
हलाकी सेती आइया है यहाँ

किया यूँ उसे इश्क तेरा शिताल^४
नजर सँ तेरी बख्त उसके उताल

वो आशिक सच्चा है तेरा झूट नई
ज़र इसके तो इश्क मे दूट नई

जिनें जीव दिया उस इलाही की सौ
लग्या जीव बाँदया है वो दिल तू सो

कि दिखलाऊँगी कर तुजे एक नजर
मै आते बरों^५ आई हूँ कौल कर

१ मुसीबत २ सौ टुकड़े करना ३ न चंदना बाँच—न चाँद की चाँदनी स ने
आकृष्ट होते न सूरज की गर्मी से परेशान ४ मजबूर ५ आते समय ।

खुदा जानता है उसे कौल ते
फरागत सँ हुई फारिग इस हौल ते

दिखा हर सनद^१ मुख एक बार उसे
बिना आधार है दे तू आधार उसे

मेरा हौर मेरी भाई का रग रेवाज
मेहरवान हो हर तरीक^२ उस पे आज

यही अज़ मेरा बड़ा आज है
अगर नई तो मुझकूँ बड़ा लाज है”

वो चंदर बदन गुन भरी ज्ञान की
वो निर्मल रतन हुख के खान की

खुश इस धात सेती उठी खोल कर
दिये जवाब ऐसी जवा खोल कर

कि “ऐ भागवन्ती सँगातन मेरी
मेहरवान दुःख मुख की सातन मेरी

जो तू मुजपे इज़हार यू राज की
सगअफराज़ की मुज सरफराज की^३

वले मैं परी हौर वो सो वशर^४
बड़ी क्योंकि दोनो मे लई है अन्तर^५

एकाएक यू अन्तर सँटू काड़ क्यों
पड़ू भार पदैं कूँ मै फाड़ क्यों

अगर यू सुनंगे मेरे माई बाप
गलेगे हया सँ वो आपस में आप

१ हर प्रकार से २ हर तरह ३ सर अफराज.....की—तू ने मुझे बड़ी इज्जत दी कि
तुमने मेरे सामने एक राज की बात कही ४ (भरबी) आदमी ५ घड़ी.....अन्तर—दोनो
में अन्तर बहुत है। हम दोनो एक कैसे हो सकते हैं।

मेरा हाल रहसे न कुच ठार थे
गुज़रसे न वो मेरे आज़ार से^१

दुजे बार कूँ भेज देसे न भी
मेरा नाँव रोसूँ सूँ लेसें न भी^२

न को हो तूँ इस बात के पै मने
कि हरगिज़ न आसूँ तेरे कहे मने^३

वो ज़ाहिर तो यूँ एतराज़ी अथी
वले दिल सूँ बातिन^४ में राज़ी अथी

समज अकल सूँ खूब इसका खयाल
सो माँ हौर बेटी लगे फिर दुबाल

“कि शहपरी काड़ सट दसादसा
न को अपने आशिक कूँ दे तूँ दसा

न को सर्द पड़ लाज ते गर्म हो
कि है फूल ते नर्म तूँ नर्म हो

हमन बाज़ कोई तुजकूँ हमराज नई
न करमे हमें फाश यूँ राज़ कई

ले जायेंगी तुज ऐसे झिलवत के ठार^५
जो कोई ना अछे बाज परवरदिगार

दिखा एक नज़र ठूक दीदार उसे
बिना धार है वो दे आधार उसे^६

१ मेरा हाल आज़ार—मेरी कोई हालत बाकी न रह जायेगी और कहीं मेरे मा-बाप मेरे इस दुःख के कारण गुज़र न जायें २ दुजे... लेमें न भी—मेरे मा-बाप दूसरी बार यहाँ आने न देंगे और गुस्से से मेरा नाम भी न लेंगे ३ दिल ही दिल में ४ एकान्त स्थान ।

बहर हाल फुसला के राज़ी कियोँ
लगा इश्क उस न फिर तें ताज़ी कियोँ^१

हुई देख आशिक की वो मुब्तला
नहीं जानत्यों त्यूँ च कीता कला^२

१ लगा.....ताज़ी कियोँ—उसके प्रेम को फिर नये सिरे से ताज़ा किया २ हुई.....
कीता कला—बदीउल जमाल, सैफुल मुलूक को देख कर उस पर आशिक हो गई । साथ ही
माँ बेटी ने ऐसा जाहिर किया जैसे उन्हें इस सम्बन्ध में कुछ मालूम ही नहीं है ।

बदीउल जमाल से मिलना

जिन उस बाग की बागबानी करे
यू उस बाग की गुल फिशानी करे^१

कि ज्यू वो लुबीली चंचल गुलेज़ार
करार आपना छोड़ हुई बेक्रकार

उताली हो आशिक के दीदार की
सटी लाज हुई यारनी यार की

एकेली नज़िक जा अधी रात कूँ
उचा उस संगतन उतम ज्ञात कूँ

कही यू कि “मैं तो तेरे बोल पर
जो थी गोट दिल में सटी खोल कर

गवाँऊ इते दिन की क्या आशनाई
कि बज गई है आलम में सब यू शनाई

फिरू क्या न मैं आज तुज बात में
कि सँपड़ी हूँ यो खुश तेरे हात में

जो देखू उसे एक नज़र आज में
कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज़ में

न जाने नमन कोई, मिल जायें चल
उसे दूर ते देख फिर आयें चल

कि तू हो शिताली है जब ते मुजे
नहीं ज़रा आराम तब ते मुजे^२

यू गत^३ क्या लुपाँऊ तुज अंगे अताल
कि मैं हुई देक बेसुद मैं उसका जमाल

१ जिन.....गुल फिशानी करे—जो इस कहानी को सुना रहा है, वह अब उस कहानी को इस प्रकार कह रहा है, जैसे उसके मुँह से फूल भड़ रहे हों २ कि तू.....मुजे—जब से तुमने मुझे मजबूर किया है, मुझे ज़रा भी चैन नहीं है ३ यह दशा ।

न जानूँ उसे किस घड़ी मैं निभाई^१
नहीं नींद अंखियों कूँ तेरी दोहाई

तूसां मिल मैं गरचे बैठी हूँ यों
बले दिल मेरा सैर करता है यों^२

लगी उसके दुंचाल पड़ हात पावें
चली ले उसे हँदती टावें-टावें

जो आशिक के डेरे के नज़दीक आई
खबर होय ना त्यो उसे खुश निभाई

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे
चढ़या है मदन का सो खुश लहार उसे^३

तजल्ला उपर मुग्न बरसता है खुश
लियों अंखियों नाज़ां हँसता है खुश

लंग हैं शमे चौकदन नूर के
भमकते हैं रुखसार^४ ज्यूँ सूर के

अपन मन में भलता अथा मस्त ख्याल
सो टलकी है पगड़ी खुल्या है जमाल

खुले हैं सफ़ा के किवाड़ों तमाम
देवे जलवा डेरे के बाड़ों तमाम^५

खुले हैं रँग-रंग चमन आस-पास
सो महकता है महकारवाँ बेकयास

डुब्या है सभी बाग़ खुश बास में
सो दौड़या है महकार आकास में

देखा २ चढ़या है... लहार उसे—उसके ऊपर काम का नशा चढ़ा हुआ है ३ गाल
: खुले है.....तमाम—यूब सूरती के तमाम दरवाजे खुले हुए हैं; वह खूबसूरत है
और चारों तरफ़ उसकी कान्ति फैली हुई है ।

नज़र जो पड़्या यू तमाशा मोहाल
सो उस चुलबुली का हुआ हौर खयाल

देखत यू तमाशा बदीउल जमाल
हो हैरान अपस कूँ न सकसी सँभाल

मती होके वो यार के बास ते
पड़ी थी जो फूलों के ज्यूँ रास ते^१

न थी कुछ खबर उसके तन की उसे
ज़मीं सेज थी उस चमन की उसे

खड़ी थी सो वई सर्द भाकर उसास
पड़ी जा चमन में हो फूलों की रास

जो सैफुल-मुलूक आशिके बावतवर
मदन मद की मस्ती ते पाया खबर

एकाएक सहरगाह^२ बे अख्तियार
दुरुनी ते डेरे के निकल्या बहार

चल्या सैर करने कूँ चमने-चमन
सो वो शह परी नार चँदर बदन

पड़ी थी सो देख्या नज़िक जा उसे
बदीउल जमाल है कि समज्या उसे

अगरचे न देख्या अथा उस अवल
वले उसकी बेमिस्त सूरत निछल

चुर्ची उसकी नैनाँ में बे अख्तियार
पड़्या वई ज़मीं के उपर बेकरार

जो दीदाग का शौक उबल्या अदिक
दरस देखने तई जो आया नज़िक

१ मती.....ज्यूँ रास ते—बदीउल जमाल सैफुल-मुलूक के शरीर की खुशबू से मस्त हो कर वहाँ फूलों के ढेर के समान बिना हिले उले पड़ी थी २ संभरे के समय ।

अजब नूर केरा अथा मुख पे ताव
कि कुरबान उस मुख पे लक आफताव

भरया नूर उसका अथा पृष्ठ यूँ
उबलते थे असमों के सन्दूर ज्यूँ^१

मनौवर^२ हुये थे मकानों तमाम
अर्श हौर कुर्सी के थोवों तमाम

समन पद भरी है अदिक नाज़ तन
सहेली कमल से है नाज़ुक बदन

सो रुखसार रौशन अमोलक हिलाल
सो है नावें जिसका बदीउल जमाल^३

कोने तू बहुत मेहतरी नार है
शकर हौर नमक का जो अचाह है

जमी आरसी नमने ता काफ सब
भलकते थे इस धात हो साफ सब^४

जो दीसते अथे लोग पाताल के
कि ज्यूँ मोतियाँ ढाल बीच थाल के

देख्या ज्यूँ चदर उस मुड़ी काड़ कर
सख्या पैगहन असमान के फाड़ कर^५

सितारे देख उसका निछुल नूर सब
लिये हात शर्मिन्दा हो चूर सब

१ भरया नूर.....सन्दूर ज्यूँ—उसका सौन्दर्य चारों ओर फैला हुआ था । ऐसा मालूम होता था मानों आसमान से सौन्दर्य का समुद्र उबल रहा हो २ रौशन ३ सो रुखसार..... जमाल — उसके गाल पहला तारीख के चन्द्रमा के समान रौशन थे ४ जमी.....साफ सब—बदीउल जमाल के नूर में काफ पहाड़ तक की सारी जमान दर्पण के समान भलकती थी ५ देख्या.....असमान के फाड़ कर—चन्द्रमा ने ज्यों ही बदीउल जमाल को सर निकाल कर देखा, उसे अपने में भी खूबसूरत पा कर, उसने आसमान के अपने लीबास को फाड़ कर फेंक दिया ।

कल्यों सब चमन के देख उस भान कूँ
कियों चाक अपने गिरहवाने कूँ

जिते सरो घाँ के डुलन हार थे
फिदा उस के कद पर वो सारे अथे

देख उसके नयन बन के नर्गिस तमाम
हो वेहोश लड़ते थे खिस-खिस तमाम

देखत उसके पेचों भरे कुण्डलों
सब आये थे गल बरजमी^१ मुबुलों^३

पवन उस गुल अन्दाम की खास पास
भँवर होके फिरता अछे आस पास

दिवाने हो भाड़ाँ के पातों तमाम
हुवा सूँ उचाये थे हातों तमाम

कि वो नार अवतार कुच हर थी
न कुच हर वो ऐन सन्दूर थी

मुनी^४ देककर उमकूँ आशिक गंभीर
लग्या गंवने उसपे चौफार फार

नजार्यों की पै में हुवा जौक सात
लग्या वारने इश्क के शाँक सात

दो दीदों के अभुवाँ सूँ मशगल कर
छिनकने लग्या शयनम उस फूल पर

जो वो शहपरी पास आदम की पाई
एकाएक उठी नाज सूँ दी जमाई^५

१ ऊपर के वस्त्र में सीने पर का वह हिस्सा जिसमें बटन लगता है । गिरह शब्द फ़ारसी के 'ग्रे' का अपभ्रंश है, जो संस्कृत के 'ग्रीवा' से मिलता है और उसी अर्थ में है २ जमान पर ३ एक विशेष प्रकार का घास, जो घुंघुराले बालों के समान होती है ४ सोई हुई ५ उसने जम्हाई ली ।

निभा देखती है जो अंगर्या पसार
नज़िक आके बैठा है वो दोस्त दार

घूँघट में छुपा मुख वही नाज़ से
हल खोल अधर नर्म आवाज़ से

कही “यू तो वाजिब नहीं है तुजे
जो नज़दीक आकर निभावे मुजे

मैं औरत शरम की हूँ दौर मः तू
न मैं तुजके जानें न तू मुंजके

पनज' में तू आदम है दौर मैं परी
नहीं महरम आदम सेती कई परी

सब्र क्या अथा आने इस रात के
कना मुभक्के तई खोल यू बात तू”

वफादार वो आशिके नामदार
जो माशूक थे पाइया यू अधार

सो खुश बेनिहायत हो पाया उमम
रंग-रंग में दौड़था नवा रंग रस

जवा खोल बाता लग्या रोलने
रतन जीव के राज के रोलने^१

“कि ऐ बेवदल मोहनी जग उजाल
जो है नावें तेरा बदीउल जमाल

तेग नावें पर थे हूँ बलदार मैं
सदू जीव के तुज उपर वार मैं

नज़र कर मेरी धीर जो अम्र पाउ
देखू दीद पर दीद दुक दुःख गवाउ

कि धरता हूँ सीने में दुःख कड़ज़^१ मैं
हुआ हूँ पिरित अंग में जल भड़ज़^२ मैं

इता कुच भरथा है मेरे मन में सोज़
जो सुलगी उम्र लाक भड़के हर रोज़

अभू मुझ नयन थे जो ढलते अहं
तेरे इश्क के दाट^३ उबलते अहं

तेरे लिए च फिरता हूँ मैं रात दीस
लिया हूँ तेरे लिए च वैताग भेस^४

यकीं जान मैं आशिके पाक हूँ
तेरे इश्क का पाक बेचाक हूँ

तेरे लिए किता रंज देख्या हूँ मैं
जो देख्या नहीं कोई दुनियाँ मे कई

न यू कुच आया है मुज धीर थे
कि नाजिल हुआ है यू तकदीर थे

तेरे वम्ल^५ का देक मुज मन कू आस
दिया है खदा भंज मुज तेरे पास

नको देक अपस थे बेगाना मुजे
भला है जो अपना कवाना^६ मुजे

बचन बोल वो आशिक इस धात सँ
हुवा उस पे कुग्दान सब ज्ञात सँ

चतुर चुलचुली धन बर्दा उल जमाल
छुपा मन में रख यू मुहब्बत कमाल

१ अधिक २ भाड़ में जलनेवाला ३ (मगरी) बहुत अधिकता से ४ ऐसा वेश या ढग,
जो मुसीबतों से भरा हुआ है ५ मिलना ६ कहवाना ।

उबलते पिरित कूँ सो मन में ज़िरो^१
बहाने सेतीं यूँ उठी बोल वो

कि “ऐ शाहज़ादे गुनी बग़्तवर
अपस मन के सोरात^२ पर रख नज़र

तू मुज सात तो इश्क लाया न देक
तू मैं इश्क क्यों ल्याऊँ मैं देक-देक

अगर तुजमें निस्वत कुच अल्लती मुजे
मैं अपना कर हर बजा पाती तुजे

एकाएक तेरी बात कूँ क्यों पत्याउँ
एकाएक तुज सात क्यों मन लगाउँ

फिरथा बहुत मुल्क तू दूट कर
मुबादा^३ तेग दिल अल्ले भूट पर

मुनी हूँ बशर^४ में नहीं कुच वफ़ा
तू मैं जीव ल्याये तो क्या है नफ़ा

तू जा योंते सँभाल ले आप कूँ
कि डरती हूँ मैं अपने इन बाप कूँ

अगर कोई देखेगा यों मेरे लोग
तो आज़ार अपड़ायेँग^५ दोनों के टांक

सलामत मैं मुश्किल है फिर बाँचना
समज ले तू आकिल है तुज क्या कना”

चुप अजमावने कूँ कती थी वली
दुर्ल^६ में उसे थी अटिक तलमली

लगा रौने सैफुल-मुलूक सुन यूँ बात
निकल तन थे गई त्यूँ हुवा उस हयात^७

१ दबा कर ; यह शब्द फारसी के ज़ेर करदन, धातु से बना है २ ख्वाहिश ३ (फारसी)
कहीं ऐसा न हो ४ आदमी ५ मुसीबत में डालेंगे ६ मन में ७ निकल उस हयात-
उसकी हालत ऐसी हो गई, मानो उसके शरीर से प्राण निकल गये ।

गोता खाइया वई मुंडी ढाल कर
सट्या विरह अगिन सँ अपस जाल कर

हुवा सर थे संगीन दुक उसपे यँ
रखे पाड़ कू लाके काड़ी पे ज्यू^१

रह्या जीव होया मने आ उसे
हो वेसुद अकल सर नदी जा उसे

देक ये हाल मोहन बदीउल जमाल
हो मन मे मुसल्लम परेशान हाल

पछानी कि यू कुच तो वाजी नहीं
हकीक़ी पिरित है मजाज़ी^२ नहीं

उचाई नजिक जा उसे हात मँ
गले लागती जीव के सांगत सँ

देती लक वजा सात जीव दान उमे
सो तहकीक कर पाई ईमान उसे

मुहव्रत जो जागा किया दिल मने
ग्वी पाँव यारी के मंज़िल मने

पलो सात अजू उसके पाँचन लगी
भगेमा दे धीगज सो बोलन लगी

“कि ऐ मेरे मन के संगती अताल
न कर दूक तँ होग नको हो निटाल

तू आशिक मेरा कर सची पाई मैं
यकीं तुज सँ ईमान जीव ल्याई मैं

१ हुवा सर.....काड़ी पे ज्यू—कि नये सिरे से उमे बहुत अधिक दुःख हुआ। उसके शरीर के लिए वह दुःख काड़ी पर पहाड़ के जैसा था २ भूठा।

बले क्या करूँ नई मुजे अस्तियार
पर्यो मुज मुवकिल^१ हैं कई लक हजार

न तदबीर है कुच जो हीला करूँ
एकाएक तुम् वयो वसीला करूँ

मेरी एक दादी सो है एक टाँव
शहरवानो उसका अहे नेक नाँव

जो सीमीपटन शहर है एक गँभीर
वो करती है वो खुसखी बे नज़ीर

है सारो कूँ उसका बड़ा एतवार
कि है सब कबीले की वो नामदार

बले जाँ तलक शहर की घाट है
वहाँ लग अग्नि काच एक घाट है

सकत है जो वाग^२ जहो फिर सके
बले नई यूँ कुदग्न वहाँ फिर सके

कि दरिया अग्नि की उबलती है वो
जमी गर्म ताँवा हो जलती है वो^३

कही त्यूँ करेगा जो ऐ जान तूँ
किये त्यूँ है लक मुजपे एहसान तूँ

भला है जो वालग^४ अपे जाये तूँ
कि हाल आपना मुद्दुवा^५ पाये तूँ

कि अपड़ेगी वो तेरे अहवाल तई
कुबूलेगी वो तेरे अकवाल तई

कि वो गुन भरी बस्तवर नेक नाम
करेगी तेरा काम हर वयो तमाम

१ मेरी रत्नवाली के लिए मुकर्रर है २ हवा ३ जमी गर्म.....जलती है वा—वहा की
जमीन आग में जल कर ताँवे की तरह लाल है ४ वहाँ तक ५ इच्छा ।

कि धरती है वो दोस्त^१ इंसान कूँ
करेगी बहुत प्यार तुज जान कूँ

जो तेरी ज़बाँ थे वो रौशन ज़मीर
सुनेगी तेरा किस्सा यूँ दिल पिज़ीर^२

तो हर क्यो^३ करेगी तुजे सरफ़राज़
कि शाहबाज़ों में तूँ शाहबाज़

मेरी माई हौर बाप कूँ मँग ले
मिला एक करेगी मुजे हौर तुजे

कि भरती है कुदरत वो असबाब का
हो खुशहाल तूँ वक्त है लाव^४ का

वले तुज अकेला केरा नई है काम
जो ढूँढ कर सके काड़ उसका मुकाम

सलामत साँ अपड़ाय तुज मीत कूँ
देऊँगी सँगात एक इफ़रीत^५ कूँ

ना आज़ार होय लूँ तेरे बाल कूँ
वहाँ भेज देऊँगी तुज लाल कूँ^६

जो कुच ग़म है दिल में सो तूँ काड़ सट
गरद दर्द का मुख पो थे भगड़ सट

तरे तई वो शाहज़ादी हौर उसका माई
बहुत कुच सिफ़ारिश किया मुजकूँ आइ

किते वज़ा साँ कर सिफ़ारिश तेरा
पड़ी थी गले अंत लेने मेरा

१ दोस्त रखनी है २ दिल का पिघलाने वाला ३ हर तरह मे ४ लाभ ५ ज़िन्न, देवी की एक योनि विशेष ६ ना आज़ार.....लाल कूँ—वहाँ तुझे इस प्रकार भेज दूँगी कि तेरा बाल भी बाँका न होगा ।

वले कूच खातिर में ना लाई मैं
तगाफुल^१ में सुन कर अपस भाई मैं

अभी तू नको बोल कुच उनके धीर
खज़िल^२ कर नको गाल मेरा सरीर^३”

कया शाहज़ादा “मेरा क्या मजाल
जो ठेलू तेरी बात पे जग उजाल

तेरा अग्र मुज सर पे ज्यूं ताज है
मुजे तुज तरफ थें रेवाज^१ आज है”

बचन घट करे यूँ हुए एक दिल
मुबह लग गये बाग में दुई मिल

उजाला हुवा जग में ज्यूँ मुबह का
रहे ले अपन टार अनजान जा

१ (अरबी) लापरवाही २ (अरबी) शरमिन्दा ३ इज्जत ।

बदीउल जमाल का आना

अलामत सँ नेक अख्तरी का जुहूर
किया ज्यूँ जहाँ में जहाँ ताब सूर

सो उसकी सँगातन सो मिल उसकी माई
भितर उस परीजात के डेरे आई

दुआ कर कही थू कि 'ऐ गुलेज़ार
अजब आज का दीस है कामगार

ग़नीमत है यू फुसत आगम कर
तू कल शर्त की तूँ च अब काम कर

कही शर्त कल की बजा ल्याव नाँ
तेरा दइस उस आज दिखलाव नाँ^१

नको ठेल दे तू मेरी बात अताल
मेरा दूद पी है सो कर तू हलाल

जो बेटी मेरी भान तेरा अहे
तू उस थं मगी मेरी बेटी अहे

कलेजा कतें सो मेरा तू है आज
सच ईमान मुज जीव केरा तू है आज

तू आज उसी दुःखी याद कृ याद कर
दिग्या दरस तेरा उमे शाद कर

जुदाई तो नहीं कुच हमन तीन में
तू एक नाम कर ले दुनियाँ दीन में

१ अलागत मूर—अच्छी किस्मत का तारा हम तरह चमकने लगा, जिन तरह सूर्य
सारे संसार को प्रकाशित कर देता है २ तू.....अब काम कर—कल तुमने जो शर्तें
बांधी, उनके अनुसार काम करो ३ कह. शर्तें.....दिखलाव नाँ—तुमने जो शर्तें कल
की थी उमका पूरा करो अपना दर्शन सँकल-मुलूक का दो ।

कहूँगी तुझे तो बदीउल जमाल
जो उम बे-नवा' कूँ करेगी निहाल

मिन्नत मेरी खातिर में ल्या हर सनद
कि रहेगा तेरा नाव' अज़ल' ता अवद'

ज्यूँ इस बात पर थें छुटी गुदगुली
सो राज़ी हुई वो चंचल चुलबुली

सुहृद्वत मने देक उसका खयाल
कुबुली वो कये ल्यूँ बदीउल जमाल

जमा कर खुशी मन के सारात की
किये गर्म मजलिम खुश उम . त की

कुदूरत' सां ज्यो आरसी पाक हो
अमर सात मग सो तरबनाक' हो

सो चागे मिले खुश हो वई एक टार
सो बैठे लताफत सो मजलिम सैवार

अदिक गर्म सोहृद्वत सो खुश मात हुई
टल्या दीस बातों मे सो रात हुई

हुब्बा सूर: महतार्व आया निकल
बरसने लग्या साफ चंदना निछल

सितारे भूमकने लगे टार-टार
छुपा जाके जुल्मात' में अभकाग

उजाला हुआ साफ यूँ चौकदन
ज़मी कूँ मगर लाये थे घस चन्दन'

१ गरीब २ (अरबी) सृष्टि का प्रथम दिन ३ (अरबी) सृष्टि का अन्तिम दिन, कयामत का दिन ४ गम और गुस्ता ५ (फारसी) खुश ६ चन्द्रमा ७ वह स्थान जहा हमेशा अधरा रहता है ८ उजाला.....घस चन्दन—चारों तरफ चाँदनी फैली हुई थी । ९ भा प्रभाव होता था मानों किसी ने ज़मीन पर चन्दन धिस कर लगा दिया हो ।

सफ़ादार इस बज्म के नूर थे
भूमकते अथे शमाँ खुश दूर थे

हर एक ठार पर शमाँ की रौशनाई
जकाजोत सो चौकधन जगमगाई

मँगाये निछल मस्त रंगी शराब
सुरायो भरे पाछु क्यो बे हिसाब

फिराने लगे प्याले याकूत^१ के
सटे म्याने बादाम ल्या कूत के

वो गुनवन्त शहजादी हौर उसकी माई
अधी रात लग वक्त अपना गँवाई

रजा ले चल्याँ वाँ ते अपने मंथीर^२
हुई यो खुशी ज्यास्त दोनों कूँ पीर

असर भेद मन में हुए मस्त झ्याल
वो सैफुल मुलूक हौग बदीउल जमाल

जो देखन लंग खूब एकस कूँ एक
अँख्याँ मे रहे खूब एकस कूँ एक

कि थे एक ते एक माहव जमाल
मती हो मुहब्बत के वो जग उजाल

हलू हात में हात लेने लगे
चुमें लग मुहब्बत माँ देने लगे

मदन दो तरफ थे जो आया उबल
हुए महव आपस में आया पिघल

हुए मुर्द गवाँ बेखबर दो जनें
सुते मिल के वई एक चिछाने मनें

१ हरे रंग का एक बेशकामती पत्थर २ लाल रंग का हीरा ३ मंदिर, महल
४ सुधि, होश ।

व लेकिन उनन में न था कुच ख्याल
कि थे पाक दामन में दोनों कमाल

जो कोई पाक आशिक है बाबल नही
वो संगीन है कुच उतावल नही

यकीं जान तू इश्क जों पाक है
नलब नफस का उम अंगे खाक है^१

सुबह जो रयन में थे पैदा हुआ
जो मशरिक कदन थे हुवैदा हुआ^२

छुपा चोद जा गूर की ताब थे
एकाएक उठे जाग वो खाब थे

चले अपने खीमों में भट फोर्क हो
रहे दोनों दो धीरे थे दो अंगव हो

सो सैफुल-मुलूक रात के जौक सात
कह लेने लग्या इस वज्रा शौक सात

कि क्या कुच मुबारक थी रात आज की
मगर हूर आई थी मेराज^३ की

अजब फैज पाया मैं उस रात में
कि माशूक आया था मुज हात में

मुजे इश्क का मस्त अपड़्या शराब
सोता था मेरे गोद में माहताब

यही जोक जीता हूँ लग बस मुज
यही रग बस है यही रस मुज

चह तन के कस दिल के उमस हुआ
बड़ा जस हुआ मुज बड़ा जस हुआ

१ यकीं जान... ..खाक : —जहाँ पवित्र प्रेम है, वहाँ प्रेमी शारीरिक प्रेम को कुछ समझने
है २ रैन, रात ३ प्रजा ४ दोनों ५ अलग हो ६ स्वर्ग ।

सैकुल-मुलूक का सीमीपटन जाना

जो उस आवरी का परीज़ात कूँ
लग्या आव उस सर्वेआज़ाद^१ कूँ

चड़ी इश्क के खुश हँडोले मने
पड़ी जा मुहब्बत के भूले मने

हुई ज्यू कि लैला सो उस लाल की
भँवर होके उस फूल की डाल की

परेशान जी में लगी फीरने
लगी बिरह दरिया मनें तीरने

गोते बेसुदी^२ हो जो खाने लगी
सो हैरत में पड़ रग फिराने लगी

दीवानी हुई मुध सटी ज़ात की^३
लगी खूब सोहबत अमर रात की

जो पाई खबर फिर कितेक बार कूँ
खबरदार हुई ज्यू मुबद्द टार कूँ

सगी अपनी दादी कूँ तब याद कर
रबी नाम ले नौमा^४ बुनियाद कर^५

करी खुश इबारत में तहरीर यूँ
लिखी इश्क ताज़ा की तकरार यूँ

जो हम नेत पर वो पिगल नीर होय
पिगल नीर हो आपने धीर होय

लिंगीं हर सतर सो सतर मेह^६ की
उस उपराल वई मोहर की मेह^७ की

१ (फारसी) आशिक २ बेसुध ३ दीवानी.....जात की—वह प्रेम में पागल हो अपने
आप को भूल गई ४ पत्र ५ प्रारंभ करना ६ जादू ७ प्रेम ।

निछल गुन भरी शह परी बेमिसाल
मुलकखन^१ चतुर धन बड़ीउलजमाल

अदब की रविश सूँ सग^२ बेहिभाव
लिखी अपने हातों सूँ दादी कुँ ज्वाब

बुला कर कही एक इफरीद^३ कुँ
मेरा मीत है एक इस मीत कुँ

ले जा काड़ सीमीपटन लग शिताब
मिला मेरी दादी सूँ हौर ल्या ज्वाब

कह उस शहर बानूँ कुँ मेरा सलाम
जो कुच मुद्दुवा^४ है सो उसका तमाम

ले कर आवले अपने खातिर मनें
कि आया है वो आस कर तुज कनें

वो फरमाई थी तूँ च इफरीद सो
मलिक जादे कर आइया दौड़ वो

कहा ऐ जगाजोत नूरी निहाल
मुजे भेज दी है बड़ीउल जमाल

तुजे अपनी दादी कन अपड़ाव कर
खबर अपड़्या सो तुरुत ल्याव कर

चला तू मेरे सात एक तिल मनें
तुज अपड़ाउंगा उसका दादी कने

नजर राख सैफुल-मुलूक बरकज़ा^५
सरादील के शह से लेता रज़ा

वो साअद कते सो नन्हें भाइ थे
वो शहज़ादी हौर उस केरी माई थे

१ मुलकखन, अच्छे लकड़वाली २ सराह, तारीफ़ कर ३ प्रेतों की एक योनि विशेष

४ इच्छा ५ तकदीर पर भरोसा करना ।

दुवा मँग ले इफ़रीद पीट पर
चढ़ाया जो कहा वो अख्यों मूच कर

जो सैफुल-मुलूक ज्यू अख्यों मूचिया^१
वो इफ़रीद वई वॉ ते हमला किया

उड़ाया कबूतर कर उस जान कूँ
चल्या हौर लग्या जाके असमान कूँ

उलंग आग का गर्म सन्दूर घाट
पकड़ रास सीमीपटन धीर बाट

ज्यू शहर केरे नज़िक आइया
अख्यों शाहज़ादे कूँ खोलो कहा

उतारया जो इस शहर में जा उसे
अजायब दीस्या वॉ तमाशा उसे

देख्या ज्यू अख्यों खोल सैफुल-मुलूक
सो लागे अजब वॉ के चरबस्त^२ लोग

परयों का जो शौगा^३ है दर हर मकॉ
नहीं आदमी ज़ात का कई निशॉ

ज़र्मी वॉ की दीसनी है जोनी तमाम
कि कंकर न थे वॉ थे मोती तमाम

सकल कोट चांगिर्द भंगार^४ का
बरसता है वॉ नूर करतार का

मुरस्ता^५ के चौंधीर थे भाँच^६ उमे
रखे हैं अज़ल^७ थे मगर मौज उमे

बँदे है लुजा उसपे अलमाश^८ का
मंडप उस पे ताने हैं आकाश का

१ आँख बन्द किया २ चीज़ें ३ शोर-गुल ४ भीषण शब्द ५ (फारसी) जहाज, जिस पर
वेशकर्मना पत्थर जड़े हुए हों ६ कलश ७ शुरू से ८ वेशकर्मना पत्थर ।

सोने की है चौंधीर ऊँची दीवार
जड़त के कंगूरे उपर ठार-ठार

लग्या है बड़ा बाग उस आस-पास
मदल, ऊद, अगर के बैरक बेक्यास

हर एक ठार अमृत की तासीर के
बहते हैं निछल काल्वे^१ नीर के

दिये हैं हर एक ठार डेरे बलन्द
तनावों मुरस्सा के मेखों के बन्द

न था शहर आलम में इस धात कड़े
हुआ देक शाहजादा हैरान वड़े

लग्या फिक्र करने जो उस ठार पर
कि खीमों शहर बानू का है किधर

दिया उसके इफरीद ज्यू आ निशान
सो नज़दीक शाहजादा आया पछान

अग्वंड पाच^२ का देख्या एक तख्त
उस उपराल वो मावली^३ नेक बख्त

शगुफ्ता^४ हो बैठी है खुश दाग सां
ग्वड़्यों हैं पर्यों सब मिल आदाग सां

मुकसल है किसवत मन नूर की
तजल्ली दिपे मुग्य उपर सूर की

वो आशिक चलन हार इफरीद सात
खड़या सामने जा रविश रीत सात

अगे हो किया शाहजादा सलाम
सो देती अलैकी^५ फिर वो नेक नाम

१ नहरें २ हरे रंग का नेश कामनी पतरंग ३ माता; बूढ़ी औरत ४ खुश हो कर ५ सलाम का जवाब देना ।

कही तू सलामों न करता मुंजे
तो करती बिला उज्र दुकड़े तुजे

कि देवाँ व परियाँ कँ इस ठार पर
सकत नई है आने की यू बेजिगर

अथा सख्त तेरा कलेजा बड़ा
जो आकर मेरे सामने तू खड़ा

सो यूँ आ कहा शाहज़ादा उसूँ
कि मुंज ते हुआ है गुनह बरूश तू

बदीउल जमाल उस लिखी सो जवाब
दिया हात में जाके उसके शिताब

पड़ी सरबसर ज्वाब वो खोल ज्यूँ
रुख उसकी तगफ़ कर उठी बोल यूँ

देखी हर्फ़ दरहर्फ़ मशगूल हो
सो खातिर^१ में अपने खिली फूल हो

वो मतलब उसे खुश मुवाफ़िक़ लग्या
यू आशिक़ वो माशूक़ लायक़ लग्या

देक उसके कधन मेहरवानी में आई
नज़िक़ बैसला हम ज़वानी में आई

शक़ल सूरत उसकी निभाने लगी
अदिक़ फ़रह पर फ़रह पाने लगी^२

कि तू कौन है और किधर का अहे
जो इश्क़ इस सहेली सां धरता अहे

तेरी ज़ात आदम़ दिसे वो परी
तू सूँ जुफ़्त^३ क्यों होवे वो गुन भरी

कि हँ वो चंचल पद्मिनी आतिशी
तुज आतिश सँ गमने कँ क्यों हुई गुशी

क्यों उस नार में हो सके जुफ्त तू
कि देख्या अहे यू मगर मुफ्त तू^१

मेरी जान कँ बहुत मुश्किल दिमे
कना क्यों वो तुज एक तन, एक दिल दिमे

मुनी हूँ पर्यो थं मुंज याद हँ
बड़ा बेवफा आदमी जाद हँ

वफा आदमी जाद में कुच नहीं
जहाँ कुच वफा नई वहाँ सच नई

मैं किम धात वग ल्याऊँ तेग मुगद
कि मुंज दिल कँ लगता नहीं एतमाद^२

मुन्यों शाहजादा जो इस बात कँ
उठ्या बोल उस वक्त इस धात सँ

अगिन इश्क की फीर इस बात ते
उठी मुलग कर उस जले जात ते

कि “गे वफतवर माई गुन जान की
तू सन्दूर सचली हे दरफान^३ की

अल्लो उग्र दुनिया में तेग दगाज
कि तू फिल दफीका हे आदम नवाज

जो कुच तू कही सो मुंजे सच कही
वले मुन कना हूँ तुजे में सनी

लग्या हे मेरा दिल उम मुवद शाम
भरी है मेरी ज्ञात में वो तमाम

१ कि देख्या.....मुफ्त तू—बर्दाउल जमाल को तूने बेकार ही देखा है २ पूरा कहे
३ समुद्र ४ शान ।

अगर पूछती है तो मुँज बाले-बाल
बदीउल जमाल है बदीउल जमाल

मैं उस नार का पाक आशिक हूँ कर
बजा है ढेंढोरा नव आकाश पर

उतम ज्ञात वो नार आतिश नेहाः
ठंडी मुज लगी आव थे बी ज़ियाद

न कुच मुँज में हौर उस मनं फर्क है
यू तन उसकी पीगित मनं गर्क है

बजा है मेरा हॉक मुलुके मुलूक
मदन कामता मैं हूँ सैफुल-मुलूक

मैं वो आदमी हूँ जो सब थे अवल
दिउँ जीव उस शहपरी के बदल

जम उस मोहनी का वफादार हूँ
सदा जीव सू उसका खरीदार हूँ

बहुत दूख देख्या हूँ मैं उसके तई
जंगल घाट कोई नई न देख्या सो मैं

फिरया डोंगरा डोंगरा' दूर के
किया डौड़ लई गरन सन्दूर के

कि उसके बदल में जफा' सीम ले
जिया जालिया' हौर सिना पीस ले

फिरया सर ले मैं दुःख के डोंगरा
किया तल उपर सात मैं सन्दुरा

बहुत मार्गा पेच' के देखिया
तमाशे तमाशे जगह देखिया

मेरे दर्द दुख कूँ निहायत नही
मेरे अवदशे कूँ जो शायत^१ नही

तू ही यूँ सुनंगी मेरा दर्द अगर
अजब क्या जो जावे सिना तख्त^२ कर

गरीबी मेरी कुच बिसरने की नई
एकाएक मेरी बेग सरने की नई^३”

दचन बोलता हौर रोता अथा
भरा रग तगय्यीर^३ होता अथा

जो याद आई वो धन मो हो चर्च वई
हुआ बेखबर फिर सिना तख्त वई

देखी शहर वानू कि सख्ती च यू
हुआ है गुम उमके पिरित बीच यू

समझ ली उसे आशिके पाक कर
हुवा है विरह मर्ग^४ थे चाक कर

कही जो भला उसके हक पर अताल
जो वाकिफ हो उसको करूँ मै निहाल

नज़िक आपने प्यार सूँ वई बुलाई
बहुत मान दे तख्त पर बैसलाई

कही “शम नको कर तू खुशहाल अल
खिल्या ताज़ा ज्यूँ फूल का डाल अल

कि हर क्या करूँगी तेरा काम मै
दिलाऊँगी तुज वो दिल आगम मै

खिलाऊँगी गुंचा तेरे आस का
दिपाऊँगी तारा तुज आकाश का

लगाऊँगी मरहम तेरी रीश^१ कूँ
मिलाऊँगी तुज से तेरे खीश^२ कूँ”

जनी माँ हो फ़रज़न्द पाई उसे
दे इस धात तकवा^३ ज़िलाई उसे

बज़िद उसकी हुई कारसाजी मने
चित उसकी रखी सरफ़ग़जी मने

तलब सारे देवाँ कूँ कर एक बार
जमा करने फ़रमाई सब एक टार

तमाम अपने लश्कर दशम^४ भार से
मिल इस तलमलाने जलनहाग से

हवा के उपर दो तरफ़ बान^५ सफ़्त
चली गई गुलिस्ताने एग़म की तरफ़

नज़िक गुलिस्ताने एग़म के ज़्ये आई
सो एक टार शहजादे कूँ बेसलाई

चली शहर में आप खुशहाल से
मिली जाके फ़रज़न्द शहबाल से

देवों के द्वारा पकड़ा जाना

जहाँ जानियौ^१ जिस निगहवान है
न उसकी कहीं ज्ञान के जियान^२ है

अजब कुच समाया है इस टार का
अजब खेल कुच याँ है कगार का

कि जिस टाँव वो आशिके नेक नाँव
अकेला रह्या जो अथा कर मुकाम

सो वो टाँव अवतार कुच टार था
जनत के गुलिस्तान के सार था

गिले थे कितेक जिन्स के फूल वाँ
बू के बिन न थी नाँव के धूल वाँ

डुवे थे चमन सग्नसर फूल में
किते जिन्स की वास हर फूल में

पवन बाज वाँ कोई माली न था
किसी फूल थे बिन वो खाली न था

कहीं राई चम्पा कहीं सेवती
कहीं मोंगरा हौर कहीं रेवती

कहीं यासमन हौर मदनवान कई
कहीं ताजे सुख हौर रैहान कई

कहीं लाल हौर कहीं रंगीले गुलाल
कहीं फूल सदर्ग के वेमिसाल

कितेक इस मनं फूल कीते कल्यों
देख ता नयन के उटे गुदगुल्यो

कहीं तख्ते अंगूर के बेबदल
कहीं अंजीर वो अनार शीरीं निछल

कहीं सेव हौर कई अनन्नास खूब
कितेक जिन्स के मेवे खुश बास खूब

कई अखरोट बादाम पिस्ते नफीस
कई जौज़ चिलगोज़ दिसते नफीस

खुश ऐसे अचंचे गुलिस्तान में
लग्या सैर करने अपन ध्यान में

ठंडी कुच हवा वाँ की ज्यूँ उसकूँ भाई
सो एक भाड़ तल खुश उसे नींद आई

कज़ारा^१ वो इसफ़्न्द केरा परा
जो उस शाहज़ादी कूँ लेके उड़ा

रखा जो अथा कैद कर बन्द सैं
जो नींद उसकी बौदया अथा दन्द सैं

दुःखी उस परे का बड़ा भाई हो
मुसल्लम मुक आराम थे हात धो

तलब कर पर्या कूँ सो कई लक हजार
किया सबको ताकीद यूँ बेगुमार

कि “मारया जो है भाई कूँ मेरे कोई
सो वो आदमी बाज दूसरा न होई

हूँदो जाके मशग़िब ते मशग़िब तलब
करे तल उपर मुल्क एक धर ते जग

तफ़्दुस^२ सिते हर सनद पावो उमे
मेरे पास जीता पकड़ ल्यावो उमे

चल्यौं वहीं परथौं दूँद लेत्यौं उसे
सो फिरने लग्यौं पृथ्व्यौं हर किसे

उनन में थे कितेक परथौं पाइयौं
मलिकजादे के हक पे वो धाइयौं

एकाएक आयौं उसी वन मनं
सोता उसकुँ पायौं उसी वन मनं

नज़िक आ तमाम उसकुँ कीता दुशियार
कह्या कौन है तू तेग कौन टार

न था उस विचारे के तई फ़ाम कुच
एकाएक खड़या सर पे आ काम कुच

समज यूँ पछान्यौं^१ कि सब यूँ परथौं
इसी टार क्या होयेंगी सुन्दरथौं

जो कुच था किसा आपना सरबसर
कह्या इस परथौं धीर ना जानकर

वही वो परथौं उस उपर दूट पड़्यौं
हवा के उपर ले उस वई उड़्यौं

चल्यौं गुलिस्तानेएरम ते उलंग
पिछाँड़े बन्द्यौं ज़ोर वर ज़ोर तग

पड़ी उसके गरदन पे ज्यूँ यूँ बला
न सह सक जफ़ा तलमला-तलमला

कह्या शाहज़ादा यूँ क्या हाल है
यूँ क्या कह है जो मुज उपगल है

दिनों ज़्यादा सब वो परियौं यूँ उसे
“तू सँपड़्यौं सितम पृथ्वता है किसे^२

१ (अरबी) खोज २ पहचानना, समझना ३ तू सपड़या.....पूछता है किसे —तुमने ज़ुल्म किया है, अब हम से क्या पूछने हो ?

परा^१ जो मुवा है तरे हात सँ
लग्या है फिकर उस केरे भाई कँ

वो दरियाये कुलजुम केरा राज है
शहँ में बड़ा सो वही आज है

हमीं उसके फरमान बरदार मव
तुजे हँदते थे हर एक ठार सव

ले जाते हैं तुजकँ उसी पास अताल
न जाने तेरा किस वज़ा होवे हाल

बहरहाल उस ले गयो राज पाम
सो देक राज उसे तुन्द^२ हो बेक़याम

वो मातमज़दा ज्यूं उसे देखिया
सो टुकड़े करो कर इशारत किया

कह्या बेग ज़लाद कँ मार उम
वो ज़लाद ना मार, कर प्यार उम

कह्या उस शहंशाह कँ इस बात जा
कि इस मारना ख़व नई इस वजा

सो गंव ज्यूं उसके तई बन्द कर
जो भुर-भुर अज़ावा^३ थे यू जाय मर

इसे मारना ख़व नई एक बार
अज़ावा^३ सँ गवना उम एक ठार

जो भुर-भुर^४ आपस में आप मुवद शाम
देव छोड़ दिक्कत सँ ज़िउदा तमाम

अगर मारते हैं तो एका च बार
वहीं जीव देकर सो मरना है ठार

१ परा का पुरुष वाची शब्द २ (फासी) गुस्सा ३ तकलीफ ४ दु ग मे खूब-खूब कर ।

कहे तूँ बन्द उस सज़ावार
वले क्या रज़ा शह की इस ठार है

जो ज़ह्नाद थे शह सुना यू बचन
सो फ़रमाइया तू च करने जतन

रख्या शाहज़ादे कूँ ज्यू बन्द में
भर्या दूक बन्दे-बन्द के पैबन्द में

बड़ा दर्द उस आशिक़े पाक कूँ
हुवा बन्द में उस दग्दनाक कूँ

लग्या रोवने हौर सिना फाड़ ले
सकत नई जो वाँते अपस काड़ ले

धसे बख्त फिर इस पे दन्दे के सार^१
सो मरने के काग़न हुवा एस्तियार

खुदा वाज भी उस न था कोई नजिक
करे याद उस शहपरी कूँ अदिक

दुःखो ते अपस में हुवा यूँ मलूक^२
न था आदमी का कुच उसमें उमूल

पड़या दर ज्यू आपने खीस^३ ते
सो ताजा किया गेश^४ कूँ नीश^५ ते

न कुच फ़हम इसमें न कुच ज्ञान था
उसे कूँ माशूक का ध्यान था

जो वो मावली गुन भरी बेनजीर
सुलक्यनवती शहरवानू गँभीर

सो उस पाक आशिक़ जलन हर के
गिफ़तार हौर तलमलनहार कूँ

१ दुश्मन की तरह २ दुःखी ३ अपने लोग ४ जरूरी ५ नशतर ६ खुराक ।

रखे ठार पर है च कर जान ले
खुशी बेनिहायत अपस आन ले

मिली जाके जूँ अपने फ़रज़न्द कूँ
निछल नूर दीदे ख़िरदमन्द^१ कूँ

हुआ माँ कूँ देक शाह यूँ शादमाँ
जो गुल-गुल हो कीता हुआ आसमाँ

उतर बात में वो टंडी पेट की^२
कहीं हाल उस जान के नेट^३ की

सो कुर्सी उपर बैसला बात कूँ
किये शाद शहवाल की ज़ात कूँ

कही हाल सैफुल-मुलूक का तमाम
सुनाई किस्ता उसके दुक का तमाम

सो शहवाल वो सात^४ उस तिल मने
मुहब्बत पकड़ आपने दिल मने

कह्या अपनी माँ कूँ कहाँ है वो ज़वान
देखन उसकूँ तपता है मेरा प्रान

कही शहरवानू मै उस ज़वान कूँ
सो आते वखत सात ले आई हूँ

फ़लाने चमन में रखी हूँ उसे
एकाएक डरी ल्याने तुज कन उसे

कि आदम हो वो आदमी सो कही
कि वज़ा हमनों सँपड़ता नहीं

मुवादा^५ करेगा तूँ उसको हलाक
बहुत एक मेरे दिल मनें था यूँ धाक

१ (फ़ारसी) अक्लमन्द २ (मुहाविरा) बाल बच्चोंवाली ३ दोस्त; प्रिय ४ सज़ा (अरबी)
समय ५ कहीं ऐसा न हो ।

सो दर हाल शह-पाल शह बख्तवर
पर्यो कूँ दिया भेज उस ल्याव कर

बुला भेजिया भेज कीतेक परी
सो जा उस गुलिस्तान में गुन-भरी

जो उतर्या अथा शाहजादा जहाँ
वहाँ जायकर देखि आये वहाँ

देख हँद चमने-चमन ठारे-ठार
न पाये कही सो लग्या खार-खार

कह्यो शाह शहपाल को जायकर
कि वो जान दीसता नई उस ठार पर

फिकर-ज़ाद हो फिर के आते बरों^१
कह्या एक परा सामने होके वाँ

कि देख्यो हूँ मैं खूब उस जान कूँ
निछल हुस्न के उस उतम भान कूँ

परी एक जमाअत की जाती अथी
हवा पर उड़ा उस ले जाती अथी

शगुफ़ता^२ न था सख्त दिलगीर^३ अथा
चले मैं न पूछ्या सो तकसीर^४ अथा

सुन इस धात उस ज्वान के हाल कूँ
कहे आयकर त्यूँ च शहपाल^५ कूँ

सो शहवाल बिन शाह रुख ज्यूँ यूँ वात
सुन्याँ सो लग्या तलमलन धात-धात

जो था शाह खुशहाल ज्यूँ फूल खिल
सठ्या सोच आपीं हुवा वई खजिल^६

कमर शहर बानू की पैटी वई
परेशानगी दिल में बैठी वई

जो इस हाल ते धन बदीउलजमाल
खबर पाई सो सुद गवाँ हुई निढाल

पड़ी भुईं उपर जो न था ताव्र उसे
सो छिड़क्यो पर्यो मुख गुल्लाव्र उसे

कितेक बार कूँ फिर जो दुक होश पाई
सो उठकर हलूँ अपनी दादी कन आई

कहीं “ऐ सगी बया करूँ मैं अताल
कि दिसता है उस बाज जीना मुहाल

मेरा जीव था मो वही पीउ था
कि उस पीउ पर लई मेरा जीव था

उस वाँ एकट छोड़ के आई तूँ
संगात अपने की ना उसे लाई तूँ

कती किस वज्जा काम तूँ हाय हाय
कि यो नई रखी फ़ाम तूँ हाय हाय

करी काम अम्मा^१ न पूरा करी
धतूरा दे मुजकूँ दीवाना करी

दीवानी हूँ मैं वो दीवाना कहाँ
‘वो दानिशवरी^२ का है दाना कहाँ

किधर गई वो रैशान ज़मीरी तेरी
थू किस धात की दस्तगीरी तेरी

अधर लग मेरे ल्याके अमृत कूँ
फिर आकर लेकर गई तूँ इस रीत कूँ

अगर होसे तो फिर तुजसे होना यू काम
नही तो मेरा काम है या तमाम”

जीउँ इस धात वो चुलबुली बोल उठी
च छुपे राज कूँ आपने खोल उठी

सो लक धात दिलगीर वो मावली
हुई वई पिछल नीर वो मावली

चली आपने पूत शहवाल कन
जकाजोत वो खुसरवी लाल कन

कही “ऐ मेरे मन के बन के निहाल
कि यू काम तुजसूँ है निश्चत अताल

एकाएक जो याँते हुवा शैब^१ वो
सो तुज शाह कूँ है वड़ा ऐब वो

तेरे नुल्क में ते है क़दरत किसे
जो यूँ काढ़ चोरी ले जावे उसे

हर एक धात सँ कर तू पैदा उसे
तफ़्दुस^२ सती हर सनद पा उसे

कि आशिक है उसकी बदीउल जमाल
मवादा होवे उसके तई पायमाल

मगर शाह दरियारे कुलजुम के लोग
अदावत सँ सो राखते हैं यूँ रोग

कि इसके जीवें भार कर भाई कूँ
सरांतील के राज की जाई कूँ

एकेला अपे काढ़ लियाया अथा
सो माँ वाप सँ लिया मिलाया अथा

उसे मक्क^१ सँ दन्द कर वो दन्दी
किया आज तुजते मुजे शर्मिन्दी

तू फ़रज़न्द है गर मेरे पेट का
तू याँ नेट कर वक्त है नेट का^२

मेहरवान हो उस दरदमन्द पर
तू अपनाच कर जान फ़रज़न्द कर

कर इस वक्त पर उसकी हक़यावरी^३
दिखा आज जग में तेरी दावरी^४

मेरे मन कू सन्तोष सँ पूर कर
यू शर्मिन्दगी मुजते तू दूर कर

कि नादान बाली बदी उलजमाल
तेरा जीव है हौर तेरा मुल्को माल

उन अपसँ जो होना कती होएँगी
वहीं पीउ होना कती^५ होएँगी

जहों थे खड़या आज यू काम यू
तू कह, ता तुजे होय आराम क्यू

लगा इश्क उस जान का फिर उसे
मुसल्लम दीवाना करे छुर^६ उसे

अगे सर पे जीव तोड़ ले आपना
वो कवला^७ सीना फोड़ ले आपना

दुनियाँ बीच यू बोल रह जायेगा
खलक कूच का कूच कह जायेगा

१ धोखा २ तू याँ नेट कर.....नेट का—यहाँ दोस्त का काम कर, क्यों कि दोस्ती को प्रकट करने का समय है ३ सच्ची मदद ४ बादशाहत ५ कहती ६ छल, धोखा देना ७ कोमल ।

कर इस ठार पर सई तू आपको
तुस्त उस बिचारे कूँ माँ बाप हो”

सो शहवाल शह फतह के खर्ग का^१
दिलावर निपट बाग के वर्ग का^२

फतह के दमामे पे लकड़ी कूँ ठोक
चल्या लाट का थाट सगात लोक^३

गुसाला हो शमशीर कूँ हात ले
सब दल कूँ सब अपने संगत ले

सिलह^४ हौर संजोत सँ सरबसर
परयाँ हौर देवाँ कूँ मुस्तैद कर

एकाएक जांग पे ते^५ ज्यूँ हिल्या
ज्यूँ असमान बादल के दल सँ चल्या

मवादा नवी कर ज़मीं भार सँ
हवा पर रह्या अपने भार सँ

जो देखे दिल उस शाह के कोट के
सो बिचके^६ मलक^७ अर्श के गोट के

देखत सिलह संजोत का लकलकट
गया सूर केरा सिना फाट-फाट

एकाएक नज़र ज्यूँ पड़ा यूँ हुजूम
हुए घावरे खलबला सब नुजूम

उठ्या गुल जहाँ का तहाँ बेक़यास
गई यूँ खबर शाह कुलजूम के पास

१ विजयिनी तलवार रखनेवाला वादशाह २ बाव के समान बहदुर ३ चल्या.....लोक —
अपने साथ बहुत से लोगो को ले कर बड़े रोब-दाब से चला ४ हथियार ५ जगह पर से
६ डर गए ७ फ़रिश्ते ।

कि “शहबाल बिन शाह रुख बादशाह
दिलावर जहाँगीर अंजुम सिपाह^१

तेरी सब विलायत^२ कूँ पामाल कर
वो आता है तेरे उपर जाल कर”

सुन्या शाह कुलजुम जो इस बात कूँ
दिया भेज हाजिब^३ कूँ इस धात सू

कि “आना तुम्हारा हुआ क्या सब
मेरे मन कूँ लगता है बहुती च अजब

किसी कूँ न था आज लग यूँ मजाल
जो मुज मुल्क उपराल कर आये चाल

खुलासा जो कुच है सो कह खोल कर
शिताबी सेती भेज देव बोल कर

कि खूबी नही कुच तुम्हें आये सो
शवा शर्व यूँ अलगार^४ कर धाये सो”

खबर इस वज़ा की ले हाजिब शिताब
जो हाजिब अथा लेवने कूँ जवाब

सो शहबाल शह खुसरवे बेनज़ीर
दिया जवाब हाजिब कूँ यूँ कर गंभीर

कि “तुम जो गुलितों परम से जिसे
पकड़ ल्याये है भेज देवो उसे

जो वो आदमी है मेरे प्यार का
नही कोई दुनिया में उस सार का

मुगैबत सू देवेग तो जाऊँगा
वगर नई तो तुपनों पे चल आऊँगा

१ जिसकी फौज की संख्या सितारों के समान अगणित हो २ शहर ३ दूत ४ रातों रात

५ अचानक हमला कर ।

वई एक धरते दरियाये कुलजुम कूँ जाल^१
करूँगा तुमन सब के तई पायमाल

दिये बाज उसे याँ ते हलसूँ न मैं
कि गाड़याँ हूँ रन थाँव^२ टलसूँ न मैं”

वो हाजिब जव इस धात पाया जवाब
कह्या आपने शह कूँ यूँ जा शिताब

“रख्या है जिस तूँ निपट बन्द सूँ
उसी आदमी ज्ञात के दन्द सूँ

अदिक गर्म हो तुजपे आया अहे
उसे भेज देव कर कवाया अहे

अगर नई तो मँगता है लड़ने तुसूँ
सरब दल सूँ अपने भगड़ने तुसूँ

बहुत लश्कर आया है उसके दुवाल
एकाएक उस थोँ ते जाना मुहाल”

सुन इस बात कूँ शाह कुलजुम वहीँ
ना ल्या ताब फिर होके बरहम^३ वही

कह्या “जाके इतबार^४ यूँ बोल उसे
कि आया है तूँ दूँद लेता जिसे

सलामत सूँ वो नई है इस ठार पर
कि लई दिन हुए उस जीव मार कर

तूँ अपने सरब दल सूँ जा याँ ते भाग
नही तो तुजे मैं करूँगा हलाक

न हो उसके पै छोड़ दे यूँ खियाल
ज्यूँ आया है त्यूँ जा तूँ यातें सँभाल

१ जला कर २ रख स्तम्भ; युद्ध के मैदान में गाड़े जानेवाले स्तम्भ ३ गुरसे में आना।

४ इस बार ।

न कर तेज़ अपस इस शिताबी सती
न हो तुंद जा एक रिकाबी^१ सती

छुराला न हो छोड़ दे शान्द तूँ
अदावत न ले मुज ते बौद तूँ

नको खोल फ़ितने के मूँदे किवाड़^२
नको तूँ सितम मुँजकूँ भार^३ काड़

कि हूँ आफ़ते रोज़गार आज मै
जो निकलूँ सरब दल में भार आज मै

तो एक धीर ते वई खराबी करूँ
दन्दे के उपर फ़तह्यावी करूँ^४

गुसे सात इस धात कद भंज वई
हुआ मुस्तईद बेग लड़ने के तई

१ घोड़े पर चढ़ एकवारगी वापस जाना २ लड़ाई भगड़े के बन्द दरवाजे खोलना, लड़ाई शुरू करना ३ बाहर ।

सैफुल-मुल्क का कैद से छूटना

कहन हार यूँ किसिये हरब^१ ग्वोल
कहे उस वज़ा सू ज़बॉ चर्व ग्वोल

कि शहनाल तिन शाह रुख वेनज़ीर
जो हाज़िव ते कड़ेवे मुन्या बोल फीर

निपट ज़हर सू तलख कर धात कूँ
लिया पेच ज्यू अजदहा ज्ञात कूँ^२

हुवा तुन्द हौर तेज़ अदिक आग ते
गुसाला होकर अज़दहा बाग ते

उचाया शतत का अलम^३ इस वज़ा
जो हैरा हुआ खल्क आया कर कज़ा

उचा दल पे दल खुश हुपा रास्ता
किया हर तरफ ते सक^४ आरास्ता

हुए जमा जगी हजारों तमाम
कवीदस्त^५ ख़्वा^६ शेरों तमाम

एक-एक जान एक कोट ले बुज़ ज्यू
लिए हात में फितने के गुर्ज ज्यू

किये रुख दन्दे पर जो हर ठार ते
ज़मीं त्रैस गई थी इसी भार ते

राज़व नाक हो ज्यू अगे दल हुए
कलेजे पहाड़ों के फट जल हुए

तुराथी नफ़ीरथों सू ज्यू बुरगामों^७
हुआ घावरा जो के पड़ आसमों

१ लड़ाई २ निपट ज़हर... .. जात कूँ—दूत की बाते उसे ज़हर की तरह कड़वी लगी
और वह अजगर सोंप की तरह बल खाने लगा ३ भण्ड ४ कतार ५ ताकतवर ६ एक
खास तरह का बाजा जिसकी आवाज़ बड़ी तेज़ होती है ।

सिलह पोश पौलाद के कोट ज्यूँ^१
 बड़ा शोर सन्दूर की लोट ज्यूँ
 उताले हो आफत भरे अज्म^२ सँ
 खड़े आके मैदान में रज्म^३ सँ
 भया बाव ज्यूँ कहर का शोर सात
 शतत की अग्नि सुलग उठी ज़ोर सात
 उठ्या गुल जहाँ का तहाँ मार-मार
 क्रयामत ज़मीं पर हुई आशकार
 झलक देक बीजल्यो सी तलवार के
 उड़े फ़ाख्ते सख्त संसार के^४
 जो दो राज दो धरते ब्रह्म हुए
 गगन सातो हैबत ते दरहम हुए
 गुसे का जो बारा उठ्या ज़ोर सो
 पड़्या उसके लश्कर पे जा कह सो
 सख्या उसके लश्कर कूँ जाँ-तों बखेर
 लग्या तोड़ने तोल सो घेर घेर
 जो दौड़ उसके सफ़ पर दिलेरों पड़े
 तो वकरथा उपर जाके शेरों पड़े
 सटे खास हौर आम कूँ काट-काट
 जो किस कूँ न समझा अथा बाट-घाट
 दिलेरों जो शहबाल के पाये बल
 सो फ़ौज़ों कूँ एक धरते उसके खुंदल

१ सिलह..... पौलाद के कोट ज्यूँ—हथियार बन्द सिपाही फ़ौलाद के किलों के समान
 दिखलाई पड़ते थे २ इरादा ३ लड़ाई ४ उड़े.....संसार के—दुनियाँ के बोझ उड़ गए ।

सटे धड़पोते^१ यूँ मुड़याँ काट-काट
न थी वाट जाने किसे वाँते न्हाट^२

जो दरिया लहू हो उबलने लग्या
गगन उसपे किस्ती हो चलने लग्या

सराँ तैरते लहू के सन्दूर ते
जो दिसते अथे बुड़-बुड़े दूर ते

धड़ों सब निपट मौज के लोट मार
थे डुबते निकलते निहंगों^३ के सार

बलायाँ के बानों कूँ ज्यूँ आग लाई
जमीँ हौर ज़माने कूँ वैताग^४ लाई

ग़ज़ब पर ग़ज़ब का जो बारा हुआ
सो ऐसा बड़ा कुच धुलारा हुआ

दुनियाँ ग़ैब हुई उस धुलारे मनें
ग़वाता गया दीस अधारे मनें

लिया गर्द जा ढोप असमान कूँ
धुवाँ साँप हो निगल्या भान कूँ

सो दरियाये कुलुजुम कूँ हैबत छुटी
जमीँ के तले गाय अड़ड़ा उठी

बड़ा रंग पड़या सख्त रगड़ा हुआ
कहें नई सो नादिर यूँ भगड़ा हुआ

हो देवाँ के हाताँ के बरहम तमाम
गया औँट दरियाय कुलुजुम तमाम

फ़तह पाय शहबाल के लोग सब
किये चूर शमशीर सँ ठोंक सब

चढ़े पीठ^१ हैर जा खदेड़े वहीं
 सो हल्का^२ हो चौंघीर बेड़े^३ वही

जो कुदरत के बल सो अधिक फ़तह पाये
 पकड़^४ शाहे कुलजुम कूँ दरहाल ल्याये

नज़र उमपे शहवाल की ज्यूँ पड़ी
 सो अरवाह^३ उस राज की ज्यूँ उड़ी

बुलाकर नज़िक उस उठ्या बोल यो
 कि “ऐ बेकटर नाजवाँ मर्द क्यों

तू उस जान कूँ मार जाये किया
 सो देक-देक जीव उसका क्यों कर लिया

कि अवतार था जग मे वो नेक नाम
 वफ़ादार अया आदमियाँ मे तमाम

तुजे छोड़ हरगिज़ न देमूँ अताल
 करूँगा मिला धूल मे पायमाल

कि सँपड़्या है^४ तू आज मुज हात मे
 तू सच बोल भूटा न हो बात मे

उमे क्या किया मार कर कौ सठ्या
 एकाएक गुसा उसपे तुज क्यों छुठ्या

रंजान्याँ अज़ायाँ देक इस घात सो
 दिखाया तू किस घात के घात सो

जो मुंजकूँ याद आता अहे
 तो सीना मेरा फ़ाट जाता अहे

गले पड़ लम्या यूँ मुसल्लम दुम्बाल
 सो वो राज है त्यूँ कहा खोल हाल

१ चारों ओर से घेरा डालना २ पकड़ लिए ३ रूह का बहुवचन, प्राण ४ हाथ में पड़ा है ।

कि “वो जान तेरा जो मीता अहे
मुवा नई कि अजन् वो जीता अहे

इसी के बदल में मँगाया अथा
जो भाई को मेरे वो मार्या अथा

गुसा था सो बन्द^१ मैं; रख्या मैं न मार
सलामत रू है वो जतन एक टार

जो तुजते रज़ा टुक अगर पाऊँ मैं
तो ल्या उसकें दरहाल दिग्वलाऊँ मैं

वले तुज शह कूँ खा^२ रू न था
एक आदम के तई मुज दुखाना न था

मेरे सब परी हौर देवाँ कूँ मार
किया नेस्त-नाबूद वई एक बार

हठीला^३ हो मेरे उपर हट पकड़
किया शहर हौर मुल्क मेरा उजड़^४”

जो यू बात खातिर मे आया उसे
गले उज्र-खाही सो लाया उसे

कहा रू “कज़ा आ घिर्या नागहों^५
नही मारने दम सकत किस यहा

उबल कर गया दो तरफ़ ते उबाल
न कर फ़िक्र दिल तू हरगिज़ अताल

बुला भेज उस मेरे मन-मीत कूँ
मुहब्बत सों कर ताज़ा फिर रीत कूँ

जो तू हौर हमें सर ते फिर शाद होयें
अज़ीज़ी में भायो केरे नाद होयें

एकाएक खुले बख्त के जूँ किवाड़
सो ल्याए उसे बन्द मियाने ते काड़

देख्या जूँ वो दीदार शहनाल का
खिल्या सरते वई फूल जूँ डाल का

पड़या आयके शाह के चरन पर
कह्या यूँ कि ऐ खुसरवे बहरोबर^१

बड़े बख्त मेरे देख्या आज तुज
फुगी^२ बाजूआँ लग खुशी आज मुज

गया सब मेरा गम तेरे धीर थे
कि जीव दे बचाय मुजे सीर थे

जो एखलास^३ मेरा दीस्या तुज कूँ खास
किया खुश मुजे बन्द में ते खलास^४

हुआ जौक़ इसी बात ते उस ज़ियाद
सो पाया उसे फ़रज़न्द के नाद^५

उचा लेके छाती कूँ लाया वहीं
कि अवतार कुच है कि पाया वहीं

फ़ज़ीलत में अज़मा के देखन लग्या
जो कुच पूछिया सो वो बोलन लग्या

हर एक बात पर उसकी हैरों हुआ
खिला सिर ते तज़ा गुलिस्तों हुआ

किते लक खुश्याँ दिल मने आन कर
कितेक दीस उस शह कूँ बहु मान कर

दे उसका मुल्क उस रवाना किया
अपें आपना मुल्क जाना किया

१ समुद्र और पृथ्वी २ फूलना, खुशी से फूलना, अत्यधिक प्रसन्न होना ३ (फारसी)
मुद्ब्यत ४ लड़के की तरह ।

उठ्या फतह के ज्यै दमामे कैं ठोंक
हुए शह तिरलोक ग्याने के लोक

फलक रक्ष^१ हो रान तल आइया
जमाना ले गाशा^२ अंगे धाइया^३

चल्या आपने शहर में नेट सां
ले सैफुल मुलूक लाल कैं पेट मां

चलन्द अरश^४ लग यू अवाजा हुआ
जमीं आसम^५ सिंग ते ताजा हुआ

खलक सब गुलिस्तों एरम का तमाम
हो खुशहाल पाया अनन्द खाम वो आम

बरीउल जमाल आपने मन मनें
खिली ज्यै कली फूल की बन मनें

उतम शहर बान् गुनी हक गुज़ार
रुमा-रुम^६ पाई खुशी वेशुमार

कती लक बजा जौक के हाल रू
दुआ आपने फरज़न्द शहवाल कैं

कही रू कि “ऐ शाहे आफ़ कगीर^७
फ़िदा हर घड़ी तुजपे मेरा सरीर

जो कंवली सहेली बरीउल जमाल
है पुतली तेरे नैन की जग उजाल”

किते धात सैं बेगिहायत सराई
सो वई खास्तगारी की बातों चलाई

१ (फारसी) घोडा २ कालीन ३ फलक.....अंगे धाइया—आसमान घोड़ा बन कर उसकी गन के नीचे आ गया और जमाना उसके सामने कालीन बिछाने लगा। यह विश्वास है कि मनुष्य का भाग्य आसमान की गर्दिश के अनुसार बनता है। भाग्य शहवाल के अधिकार में था और जमाना उसके साथ था—यह तात्पर्य है ४ रोबो-रोबो ५ आलमगीर।

कही “ऐ तजल्ली मेरे नैन के
कि आराम मुज जीव मॉ वैन के

जो बेटी है तेरी बर्दाउल जमाल
मो सैफुल मुलूक सै मिला तू अताल

वो सैफुल-मुलूक जान गैशन ज़मीर
ममद ज्ञान का आशिके बेनज़ीर

वो एकस कूँ एक दोनो आशिक्र हैं पाक
सो बातिन^१ में हैं इश्क सो चाक-चाक

उनो दोनो एक होवना साज है
दुनियाँ दीन^२ में यू बड़ा काज है”

सो शहवाल मॉ ते सुन्या यू जो बात
कुबुल्या वहीं लाक खुशियो सँगात

बदीउलजमाल से शादी

मदद फ़ैज यूँ आसमानी हुआ
ज़मीं हौर ज़माना नूरानी हुआ

सआदत के ताज़ी मिले^१ एक ठार
सो परगट ज़ौक केरा बहार

खुशी के ग्विले फूल फाँटे तमाम
किये शुक्र जीबों हो काँटे तमाम

मलक^२ फ़ाल देख^३ अर्श पर गुल उचाये
फ़रह पा वही मेज़बानी गिनाये

ख़बर यूँ तुरुत जग में जाने लग्या
ज़मीं का निकल गंज आने लग्या

ख़बर पाये दरिया के मोती तमाम
रतन खान म्याने के ज्योती तमाम

तरी हौर खुशकी ते पड़ भार सब
सो शहवाल के आये दरबार सब

हर एक चर्ख तल सर्फ़ होने लगे
तजल्यो में घल-घल पिरोने^४ लगे

नगर सब गुलिस्तों एरम का तमाम
हुआ साफ़ यूँ जाम ज़म का तमाम

परे हौर पर्यो जग के सारे मिले
भराये मज़ालिस विले दर विले^५

पर्यो चुलबुल्यो कास मा साज़ सो
लग्यो नाचने मिल के यूँ नाज़ सो

१ भाग्य के घोड़े मिले, अच्छा समय आया २ फ़रिशे ३ आगे की अच्छी हालत देखना

४ प्रत्येक मकान में ।

पंखे पंख जड़त के सदर जगमगाट
लग्या होवने चौकदन तमतमाट

पर्याँ बेवदल थ्याँ सो धार्याँ तमाम
जवाहिर के काम^१ भार्याँ तमाम

दहन^२ तंग तर मांग बारीकतर
शबेकद्र^३ ते बाल तारीक तर^४

हुई मस्त मजलिस खुश आवाज़ सो
द्वानी कियो पातंग नाज़^५ सो

डुमुकन्याँ मिल्याँ डोमिन्याँ लोलियाँ
शकर शहद शीरी ते मिट बोलियाँ

एकस एक ते एक तरुन्याँ अहे
सो करतार क्या मोर हिरन्याँ अहे

सो पुरपेच जुल्फाँ कूँ देक गाल पर
कुंडल घाल बैठा भुजंग भाल पर^६

पड़े बाल काले सो जाँ-ताँ तले
सो ज्यू नाग लिड़ते हैं पावों त ।

न जानू कहाँ कोड़ मंतर मिक्याँ
पदम पावों नाकस के जतर मिक्याँ^७

लग्याँ नाचने तई जो सदरे सदर^८
तिरकने^९ लग्याँ खुश जिधर का उधर

१ ढेर २ (फारसी) मुँह ३ रमजान की सत्ताईसवीं रात, जो बहुत ही अथेरी होती है
४ दहन तंग.....बार्गक तर—रमजान की सत्ताईसवीं रात जितनी काली होती है, उससे
भी अधिक, उन परियों के बाल काले थे । उनके मुँह छोटे आर मांग बहुत बारीक थी
५ बहुत ही अधिक नज़ाकत ६ सो पुरपेच.....माल पर—उनके गालों पर जुल्फ ऐसे
लटके हुए थे, जैसे खजाने पर साँप कुण्डल मार कर बैठा हो ७ पदम पाँव...
सिक्यो—उनके कमल के समान सुन्दर पैर, दूसरों को बेसुध करनेवाले जंतर के समान है
८ जगह जगह ९ धिरकना ।

जो गत ले उठे मंडले फिर तमाम
सटे होश जागे पोते घर तमाम

मंदिल^१ काड़ मंदिल बजाने लगे
कित्यो गिर पड़े क्यो सो गाने लगे

जन्तर काड़ सोजाँ उचाये हल्लू
साँ मजलिस कूँ मस्ती में ल्याये हल्लू

जो खोलन लगे नगमें हर ठार ते
हल्यो सुन चतुर पुतल्यो ठार ते

कित्यो जो अर्थ तान पर तान क्यो
रहेँ डाल पंगव सूर असमान क्यो^२

सजावार शाही कूँ यूँ साजवार
हुनरमन्द जो सारे हौर गजदार

देक उस वज्म खुश सुहावा वो नूर
लगे भेजने मरहवा चोद सूर

जो मजलिस कूँ खाना खिलाने पे आये
सफ़र खुश कंदोर्यो^३ सो ल्या ल्या चिछाये

कंदोर्यो शहाने सो लग जिन्स क्यो
रंगा रंग शीरिन्यो^४ हर एक जिन्स क्यो

रखे शीरिन्यो लाय कर ठार-ठार
गगन ऊँचे रासो^५ व कई उस शुमार

जो फूल नीर सूँ हात सबके धुलाये
कंदोरे खिलाने ले जा बसलाये

१ मंजोर; बाजा विशेष, दूसरा मंदिल, मन्द गति, इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है २ सो रहेँ डाल.....क्यो—उनके पंगव सूरज की तरह चमकीले थे ३ दस्तार खान ४ मिठाइयाँ ५ राशि, ढेर ।

रंगारंग लक जिन्स क्यौं न्यामतौं
जो हर एक न्यामत में कई लज्जतौं

सो असमान बादल कूँ संगत ले
चन्द्र सूर के जाम दो हात ले

कमर बँद खुश हो अपें आवदार
नज़र सारी मजलिस पर रख ठार ठार

जल अमृत ल्या-ल्या पिलाने लग्या
पिला प्यास भर-भर चलाने लग्या^१

खलायक^२ विले दर विले खास वो आम
कंदोरी ते फ़ारिग हुए खुश तमाम

जड़त के तबक़ हर एक असमान थे
भर उस म्यान तगटे पथ्यो पान थे

अंबर हौर खुशबू कदम फूल माल
फिराने लगे जान साहब जमाल

जहाँ लग अथ्यो जग में फुन बाड़ियो
उहाँ लम जो गंभीर पनवाड़ियो^३

सो यूँ खर्च तल शह के आये वहाँ
जो एक पान हौर फूल उबरया नहीं

मुनौवर^४ किये अंजुमन कूँ तमाम
'ज़वरजद'^५ के शीशे ज़मरूद के जाम

मदन मस्त साक्की छुबीली जवौं
अटिक छुन्द भरी खुश रंगीली जवौं

१ सो असमान... .. लग्या—असमान पानी पिलानेवाले के रूप में सुरज और चंद्रमा के दो प्याले हाथ में ले कर, अमृत का पानी सबको पिलाने लगा २ लोग ३ पान पैदा होने की जगह ४ रीशान किये ५ जमरूद एक बेश क़ीमती पत्थर ।

मदन मद पियाले भरा साज सां
ग्वड़े आके मजलिस मने नाज सा

फिराने लग दौर पर दौर खुश
किये सारी मजलिस केए तौर खुश

अजब वो रगी मद असर दार था
मता बास न उसके ससार था

नुकूल^१ नाज का ल्या चकाने लगे
सो एक घर ते सबरु रिझाने लगे

फियाले जवाहिर के फिरने लगे
मती होके जानाँ सो गिरने लगे

सो पडते थे जाँ मद के बुन्द टूट कर
जमी नाचती थी वहाँ ऊठ कर

हुए थे मती कोई न थे हुशियार
जो कोई पीवे वो क्यों रह हुशियार

किये बल्श मारयाँ कू एक धीर ते
हुए शाद सब इस जहाँगीर ते

इलाही जो माशूक आशिक उपर
करम कर मिलाता है एक तिल भितर

१ शराब के साथ खाई जानेवाली चीज़ें ।

जलवा^१

तजल्ली सों जलवे की ज्यां रात आई
सो वई गैत्र ते पैज^२ लक धात पाई

जो शक्कर कू भी न था फैज इता
सरा ना सकू मै सगऊँ जिता

मुग दौं जो धरते थे जग दिल मने
सो पाए उसी रात एक तिल मने

नज़र हुई इनायत की सुबहान ते
उतरने लगी रहमत असमान ते

निछल रूप क्याँ चुलबुल्यौं शह पर्यौं
उतम ज्ञात उतम ज्ञान क्याँ गुन भर्यौं

बड़ीउलजमाल अचपली^३ नार कूँ
डुबायौं ज़रीने में भलकार सू

जो जलवा दिलाने होयौं मुस्तइद
महल जलवे कारन कियौं मुस्तइद

जवाहिर के मँडवे सो छाय़ा तमाम
मुरस्मा^४ के परदे वँदायौं तमाम

हर एक महल सूफ़्यौं मने रग-रंग
जड़त के रखे ल्याके छपर पलंग

मिल्यौं खुश हो मायौं वो बाय़ा तमाम
शौ^५ आरुस्^६ के पास आय़ा तमाम

दुनियाँ उस घड़ी जाँ हुए सीर ते
खुले बख्त गोत्याँ^७ के एक धीर ते

१ शादी के समय का एक विशेष रस्म, जिसमें दूल्हा और दूल्हन एक दूसरे को देखते हैं २ फ़ायदा हासिल करना ३ चुलबुली ४ हीरे जवाहिगत जड़ा हुआ ५ (फ़ारसी) दूल्हा ६ (उरूस, अरबी) दूल्हन ७ (गोत, का बहुवचन) संबंधी और परिवार के लोग ।

उतम डोमन्याँ मिल पलाने लग्यो^१
 सोहेले शहाने सां गाने लग्यो

नवल जान सैफुल-मुलूक ब्रह्मवर
 उमस सात आ बैठिया तख्त पर

बनी हौर बने^२ लोक पलाने लगे
 शौ-आरूस के तई सराने लगे

सआदत के साअत हुवैदा हुआ^३
 सो काज़ी मसीहा हो पैदा हुआ^३

लिया शौ केरा हात अपन हात में
 खुशी सां पड़िया अकद^४ इस सात में

हुआ सर किया ज्यू खुश आईन सँ
 मलायक किये खत्म आमीन सँ

मिले शह के चौंधीर सब गोतियाँ
 लगे वारने शौ उपर मोतियाँ

चले जल्वे के महल में शौ को ले
 किवाड़ा सो इकबाल केरे खुले

खड़ी मुश्तरी^५ नाज़ का साज कर
 सुरज जगमगाता सो असमान पर

मुशाता^६ हो ज़ाहरा^७ उतर आई बेग
 चमक नूर का ल्याके भूमकाई बेग

निल्लल नूर का ल्याके परदा बंदाये
 शौ-आरूस दोनो को ल्या बैसलाये

१ गाने लगी २ दूल्हा और दूल्हन ३ सआदत.....पैदा हुआ—निकाह पढ़ने वाला काज़ी अच्छे समय पर मानो मसीहा के रूप में आया, जिसने सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल को खिन्दगी दी। मसीहा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वे मुर्दों को जिलाया करते थे।
 ४ (अरबी) निकाह पढ़ना ५ एक तारा विशेष ६ दुल्हन को सर्वारने वाली औरत ७ एक तारा विशेष, जो बड़ा चमकीला होता है।

जो परदे में ते हात हिलने लगे
सो लक धात फूलों उल्ललने लगे

मगर गैब ते जुगने दो नूर के
मिल उड़ते अये खोल पंग्व सू के

दे जलवा मुशाता जो निर्याल^१ हुई
सो भोगी नवल शह की-वो चाल हुई

नबी पर हज़ारों दुरूद^२ भेज बई^३
चल्या ले के आरूस कूँ मेज बई

देख्या नूर का उस निछल नूर ते
जियादा अथ नूर के पूर ते

जो जलवे ते फारिसा हुई खल्क सब
चला शौ ले आरूस कूँ मेज तब

देख्या मुख ज्यूँ शौ ने आरूस का
खिल्या सिर ते ज्यूँ फूल फ़िरदौस^४ का

चड़ी खूब महबूब देक हात में
रिझाने लग्या बात कर बात में

सट्या हात ज्यूँ उसपे तन्नाज़ मुँ
लगी शर्म कर लाजने नाज़ सू

सो छाती कूँ छाती लगा हाल सात
हुआ लटपट उस नूर की डाल सात

रख्यो मे निपट छन्द सो लाइया
जो बन हुवये नूर दो पाइया

१ अलग होना २ एक अरबी का वाक्य विशेष, जिसमें पैगम्बर हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने की दुआ की गई है ३ नबी पर... भेज बई—हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने के लिए हजारों बार 'दुरूद' पढ़ कर ४ जन्नत ।

भूटापट लगी होवने दूई में
हुवे सीस ते पग तलक गूई में

इधर मद पिलाकर किया मस्त उसे
हुई मस्त देक बई किया दस्त उसे

जकाजोक मोती पड़्या देक धात
विन्द्या खुश उसी वक्त अलमाश सात

निछल गूव याकूत के वेशुमार
यू उस ढाल मोती ते निकल्या बहार

जो अलमाश था सो रब्बा लाल हो
लग्या ढलने वो लाल तब ढाल हो

कि ज़ाहिर हुआ लाल की बेल थू
मिल्या सब सहेल्या हुआ खुश जू

ज़ियादा खुशी हुई थू माई कू
अठिक भी खुशी हुई उस भाई कू

फिर आकर गिनाये खुशी, सीर ते
किये खिल्लअतों सब कू एक धीर ते

हुए खल्क ताज़े सो ज्यू नौबहार
कि फूल दौर पातों कू आया है बार

कि ना हौग परी शहर के सब बुलाय
हर एक जिन्स के न्यामतों सब खिलाय

कि शौ ने खुशी मिर ते ताज़ी किया
कि उस बाग से फिर के बाज़ी किया

लग्या बास नाज़क जो उस फूल का
खिल्या रंग उस गूव मकबूल का

हलू भी उतरने लगी नाज़ में
 सों छन्द-बन्द करने लगी न्याज़ में

रिझाने लगी शौ कूँ खुश नैन खोल
 फुलाने लगी यों मिठे बोल बोल

कभी शौ को कर मस्त हमशान हो
 कभी गोद में लेट अनजान हो

कभी लग सीने शह नवल जान के
 अधर सों अपड़ दे बीड्यो पान के

कभी शह गले हात कठमाल भाय
 कभी शौक सँ गुठगुल्यो कर हँसाय

कभी भोग-संग्राम खुश हाल होय
 सो कुरबो कधी शह के उपराल होय

दोनों में कुबल इश्क बाज़ी लगी
 वो बाज़ी मिठी हक के ताज़ी लगी

हुआ जग में मशहूर हर ठावें यू
 बसे लग दुन्यो में रह्या नावें यू

शगुफ़ता हो शहवाल शह नेक नाम
 उमस पा खुलाया खज़ाने तमाम

भवायों धगों जग के मुद् जाय तूँ
 लग्या बाँटने माल मन भायें तूँ

किसे नौरतन होर किसे मोतियाँ
 किसे हतकड़क होर पदक जोतियाँ

किसी कू जड़त के उतम कण्ठ माल
 किसी कूँ जड़त की पटी जग उजाल

किसे ज्ञात तेज़ी, किसे मस्त हस्त
 किसे खूब तोहफ़े, किसे खूब बस्त

किया दान बेमिस्ल एक धीर ते
किया खिलअत्ता सक्कू यू सीर ते

कि मेहमान सक्कू किया सरफ़राज़
किया खुश किते लक वज़ाँ सो नवाज़^१

रज़ा ले जो मेहमान दारों चले
दुआ शह कूँ कर हज़ारों चले

इता कूच शह ते सकल दान पाय
जो घर हैर इमारत सां नेकी उचाय

डुब्री थी सोने में ज़र्मी जॉ-नहॉ
कि ऐसा सखी बे-वदल है कहॉ

सिंगार उस फुकी वज़म कूँ देनहार
देवे ज़िनत इस धात रूँ ठार-ठार

जो गंभीर शहबाल दाना नरीक^२
कितेक दिन शौ ग्रारूस कूँ रख नज़ीक

मँग्या भेजने उसके मॉ-बाप पास
दिया खूब बस्तों,^३ जो थे अपने पास

चन्द्र सूर से दुरजकॉ^४ कई हज़ार
जवाहिर भरे सन्दूका बेशुमार

कितेक जिन्स के खूब बॉदी गुलाम
कितेक पातुरा जिल्द^५ नादिर तमाम

मुकल्लल जड़त की अमारी गंभीर
कराया तुरुत मुस्तइद बेनज़ीर

दुआ पर दुआ कर गले लाय कर
शौ ग्रारूस कूँ उसमें बसलाय कर

१ देना २ लाजवा ३ वस्तु, चीजें ४ जवाहिर ५ बहुत कोमल शरीर रखने वाले ।

तज्जमुल^१ सती खुसरवी रीत के^२
चड़ा पीट उपराल इफरीद के

बड़े गुलगुले सँ खाना किया
अजब काम जग में यू दाना किया

नज़र में दिव्या सारे आलम कूँ यू
मुलेमान^३ शौ; आरुस विलक्रीस ज्यू

जो अपड़े सरादील के राज पाम
महाराज गंभीर सरताज पाम

सो आ सामने खुसरवी दाव सँ
मिल्या ज्यू कि अफ़नाव महताव सँ

बड़ी शान सं लाइया शहर मे
हुआ आशकारा^४ यू चौधीर मे

मिला शाहज़ादी सँ आ भाई वो
देखत भाई कूँ खुश गले लाई वो

हरम में कबीले कूँ शह के तमाम
सो कह भेजिया वन्दगी हौर सलाम

नेके यार साअद वफ़ादार सं
मिल्या खुश सिने लाइया प्यार सं

खुश एक घर ते सारथी कूँ शादी हुई
वो शादी बड़ी कैकुवादी^५ हुई

कितेक दिन वहाँ मादगी दूर कर
सिना जौक लई समद सो पूर कर

समज खूब साअद दुश्मियारे के धात
चलाया हलू खास्तगारी की बात

१ (अरबी) शान, शौकत २ बादशाही ढंग के ३ इस्लाम के पैगम्बर, उनकी धर्म पत्नी का नाम विलक्रीस था ४ प्रकट होना ५ बरकत देनेवाली ६ शादी की बात चलाया ७

सो वो जगपती राजा राजी हुआ
जो कुच दगदगा था सो माझी हुआ^१

समज फाल ज्यू गैर के काम सँ
पड़्या खूब साअर के आ नाम सँ

किया खुश हो शह मेज़बानी शुरू
बधावा बड़ा खुसखानी शुरू

जो धम-धम दमामे बजाने लगे
गामों सब निकल भार जाने लगे

नफीर्यों की आवाज सुन ठार-ठार
निकल दौलतों शैब ते आये भार

सदर पर सदर^२ शाह के वस्त्र ते
उतर आये असमान के तख्त ते

जो जोहरा भी हौर मुश्तरी^३ गान हार
किये गर्म मजलिस कूँ आ ठार-ठार

जो जो लग गलावन्त थें वॉ भरे
तमाम आपने तायफों^४ सें खड़े

उचाने लगे इस बजा तमतमाट
जो तिरलोक का वॉ भरया आके हाट

भनकने लगी जाफरानी सुरा^५
खरा जाफगों हौर सन्दूर आ

मलक खुश चन्द्र के वो गुलदान ते
लगे मेलने फूल असमान ते^६

जो फिरदौस का बाब अत्तार था
महलों में शह के गमनहार था

१ सभी शक दूर हो गए २ बड़े-बड़े ३ संगीत की देवियों ४ जानेवालों का गिरोह ५ शराब
६ मलक.....असमान ते—फरिश्ते चाँद के गुलदस्ते से फूल बरसाने लगे ।

भरथा बास खुशबूई का ठार-ठार
सरांदील सारा हुआ नौबहार

सो खुश हो जमाना जो साअद हुआ
सराफ़राज़ उस शहते साअद हुआ

घड़ी देक खुशी का समाया वहीं
कज़ा^१ दौड़ काज़ी हो आया वहीं

सआदत की साअत में खुशहाल हूँ
पड़या फूल का अगद^२ उस डाल से

मिले जूँ वो शाहज़ादी हौर यू जवान
हुआ शाद सैफल मुलूक का प्रान

निहायत कूँ अपड़े देक उनका जवाँ
कितेक दिन दोनों भाई कूँ राज वाँ

समेट माल धन वाँ ते ले बेहिसाब
चले मिस्र के मुल्क कूँ फिर शिताब

जो आसिम नवल शह दुःखी भूक-भूक
हुआ था जो काड़ी नमन सूक-सूक

एकाएक खुशी हौर आनन्द का
मुन्याँ जूँ खबर अपने फ़रज़न्द का

फुग्या हौर आया रगे रग प्रान
बुदा तोंग था सो हुवा फिर जवान

वहीं ग़म के हुजरे ते निकल्या बहार
ले अरकाने दौलत^३ कूँ सब एक बार

गया सामने हौर मिल्या पूत कूँ
गले ला किया पूत कूँ गुल तिसू

१ हुकूम २ (अरबी) निकाह ३ राज्य के बड़े-बड़े आफ़िसर ।

खुश्याँ सों बुला शहर में लाइया
दे बहमान ईमान कर पाइया

दिया आपनी बादशाही उसे
सलामाँ किये सब सिपाही उसे

लग्या करने सैफुल-मुलूक राज खुश
हुए अरश कुर्सी वा मेराज खुश

खुदा उसके मन की दिया ज्यूँ मुराद
देवे हर तलबगार का वों मुराद

कहाँ आसमाँ हैर कहाँ धरतरी
कहाँ आदमी हैर कहाँ शहपरी

कहाँ लाल सैफुल-मुलूक जग उजाल
कहाँ मोहिनी धन बदीउलजमाल

कहाँ जान साअद किते बेनज़ीर
कहाँ वो उतम शाहज़ादी गभीर

खुदा यूँ मिलाने जो आता अहे
सो इस धात सो ला मिलाता आहे

लिख इस धात सो दास्तों बेनज़ीर
रिसाला लताफ़त भरथा दिलपज़ीर^१

जो लिखने न सक दो रसन^२ का कलम
सो मादों हो पड़ता अथा दम बंदम

निभाँ दिल के अख्यों सों देखे मने
तो हर एक बैत इस सफ़ीने मने

जगाजोत महबूब है क़वदार
मेरे फ़िक्र परदे थें निकली बहार

१ दो रसना, जिह्वा रखनेवाला, कलम ।

देवे यूँ जो जलवा उससी^१ मनें
जो सिद तारे अवर के जोती मनें

मलायक सो बालाथे चर्वे^२बरीं
कहैं इस सफ़ाने कूँ देक आकरीं

रतन पारके बेबदल मुश्तरी^३
मेरे जौहराँ का हुआ मुश्तरी

कि मेरे चतुर शह नवल लाल थें
बलन्द उसके गम्भीर इकबाल थें

न कई ऐसे जौहर हैं भलकार के
न किस खान में होयें संसार के

कि निकले हैं नादिर हो जौहर मेरे
जिता मोल उसका सराऊ, सरे

दिखे यूँ जवाहिर जगाजोत ज्यूँ
सितारे फुगी हो रहे बहुत ऊँ

हर एकम कूँ है कुर्व^४ धन माल का
मुजे कुर्व इस जौहराँ लाल का

कि चोरा ते उस माल कूँ है दगा
वले इस जवाहिर कूँ नई दगादगा

कि हाली^५ वो खचें तो खाली होवे
वले यूँ कधी कूँ न खाली होवे

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहराँ पोते दिल साफ़ कर

देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेवान पाऊँ

कि यू शाह मेरा खरीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबयै गुलज़ार होय

कि ग़मगीं हूँ मैं सख्त संसार ते
धरूँ दसदसो लाक इस आज़ार ते

परेशानगी में जम्हैया ख़्याल मैं
ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मैं

जो भोगी नवल शह सेती फ़रह पाऊँ
सो इस थे रतन खास ढूँढ़-ढूँढ़ ल्याऊँ

अगरचे हूँ शह के बन्द्याँ मैं हक़ीर
वले शेर के फ़न में हूँ बेनज़ीर

कि मुँह खोल यू मैं कहूँ क्या अपें
गवाही देवें शेर अपें ना लुपें

बहरहाल यू नज़्म इलहाम सूँ
किया मैं नवल शाह के नाम सूँ

बरस एक हज़ार पंज तीस में
किया खत्म यू नज़्म दिन तीस में

जो आरिफ़ हुजूरा नज़ाकत शिनास
सफ़ा उस थे हासिल करें बेक़यास

पढ़ाँ कैं तो सब आवे यू काम कूँ
देवे ज़ौक़ अदिक खास हौर आम कूँ

लिखन हारा यू लाब पर लाब पाय
सदा सुखरूई केरा आव पाय

मुबारक अछो शाह कू यू मुदाम
बदक्के मुहम्मद अलेहिस्सलाम

मुबारक घड़ी में किया मैं तमाम
मुहब्बत नबी पर हज़ारों सलाम

शब्द-सूची

अ

अकृताव=एक विशेष प्रकार के सन्त
अकलीन=देश
अकारिब=करीब के लोग, दोस्त-मित्र
अकद में लाना=शादी करना
अगुशतरी=अँगूठी
अगोटी=अँगूठी
अछु=रहो
अजल=शुरू से
अजायब लगाना=अजीब लगाना, आश्चर्य
होना

अजाबों=तकलीफ़
अजुम सिपाह=जिसके सिपाहियों की सख्या
तारों के समान अगणित हो
अरजुमन्द=लायक
अज्म=अभिलषित
अट लेना=छीन लेना
अड़ड़ा के दौड़ना=ज़ोरों के साथ दौड़ना
अत=अति, बहुत
अद्ल=इन्साफ़
अन्द गन्द=नामो निशान
अपसता=अपने से
अपड़ना=(मराठी) मिलना
अबायक=इस्लाम के पहले खलीफ़ा
अम्र करना=हुक्म देना
अम्मा=(फ़ारसी) लेकिन
अब्द=सृष्टि का अन्तिम दिन, क़यामत
का दिन
अभरन=आभरण, आभूषण
अभालों=अभाल का बहुवचन, बादल
अरश=आठवाँ आसमान, खुदा का स्थान
अरवाह=रूह का बहुवचन, प्राण

अलम=भंडा

अलशार=अचानक हमला करना
अलमाश=एक विशेष प्रकार का बेश-
क़ीमती पत्थर
अलैकी देना=सलाम का जवाब देना
अवदशा=अपदशा, बुरी दशा
अवकल=अजीब
असहाब=साहब का बहुवचन
अहवल=(अरबी) जिस से एक ही चीज़
दो नज़र आती हो

आ

आक्रिबत=नतीजा, परिणाम
आज़ार अँपड़ाना=मुसीबत में डालना
आतिश=आग
आतेबरो=आते समय
आफ़रीं=दुनिया को पैदा करनेवाला
आरिफ़=समझदार
आशकार होना=प्रकट होना
आस=आशा
आस्ता=ठिकाना
आगे=आगे, सामने
आँभू=आँसू

इ

इतबार=इसबार
इफ़रीत=जिन्न, एक योनि विशेष
इरफ़ान=ज्ञान
इलहान=आवाज़
इशरत=आनन्द
इशारत करना=इशारा करना, बतलाना
इश्तियाक़ी=शौक

उ

उचाना=उठाना

उमस पाना=उत्साहित होना
 उलंगना=लौघना, छलांग मारना
 उस्तवार=मजबूत

ए

एक घर=एक दम
 एकस=एक
 एक रुखन=एक ही तरफ़

ऐ

ऐलाड़=इस तरफ़, नज़दीक

क

कज़ारा=संयोग वश
 कज़ा होना=इत्तफ़ाक़ होना
 कड़ज=अधिक
 कलीम=मूसा पैग़म्बर का दूसरा नाम
 कस्ब=प्राप्त किया हुआ
 कबूदी=नीले रंग का
 कब्क=चकोर
 कदन=तरफ़
 कना=कहना
 कनीज़ा=सेविकाएँ
 कन्दराहट करना=नफ़रत करना
 क़रीमी=मेहरबानी
 क़दीर=समर्थ, खुदा
 क़माश=एक बेश क़ीमती कपड़ा
 क़वीदस्त=ताक़त वर
 कंथा=कथा, आप बीती
 कँदोरे बार करना=दस्तरख़ान तैयार करना
 कँटाल=नफ़रत
 कामरानी=कामयाबी
 काल्वे=नहरें
 किल्क=क़लम
 किसवतौ=लिबास
 कुतुब=एकविशेष प्रकार के सन्त
 कुदूरत=तक़तीफ़

कुबल=दुर्गम
 कुदूरत=शाम और गुस्सा
 कूत=खुराक़
 कूच=कुछ

ख

खण्ड्याँ=खण्डी (मराठी) का बहुवचन,
 कोड़ियाँ

खर्ग=खड्ग, तलवार
 खज़ीने=खज़ाना
 खराबा मने=खराब या निर्जन स्थान में
 खातियान रुई=एक बहुत ही अच्छे
 किस की रुई

खज़िल=(अरबी) शर्मिन्दा
 खोदा=कंधा
 खातिम=अंगूठी
 खाशाक=तिनका
 खारजाँ=अली के विरोधी
 खास्तगार=मँगनी, शादी के लिए
 लड़की मँगना

ग़िरदमन्द=(फ़ारसी) अक़लमन्द
 खिलअत=बादशाह की ओर से इनाम में
 प्राप्त कपड़े

खिलवत=रंग महल
 खिलवत के ठार=एकान्त स्थान
 खीश=अपना
 खुशारव=बादशाह
 खुशमान=अच्छा मान, अच्छी इज़्ज़त
 खुशाहंग=खूब सूरत
 खुसाट=खूसट

ग

गगन=आसमान
 गड़ाँ=गढ़ाँ, क़िले
 गड़वा=टूटीदार लोटा
 गत=गति, दशा

गानी=जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता
न हो, खुदा

गमना=गुज़रना, बीतना, जाना

गवी=शेर की माँद

गव्वास=गोताखोर, कवि का नाम

गाल=गला कर

गायत=गणना, हिसाब

गिरहवान=ऊपर के वस्त्र में सीने पर का
वह हिस्सा, जिसमें बटन लगती
है। 'गिरह' शब्द फ़ारसी के
'ग्रे' शब्द का अपभ्रंश है, जो
संस्कृत के 'ग्रीवा' शब्द से
मिलता है और उसी अर्थ में है

गुल गुला=शान, शौक़त

गुलिस्ताने एरम=जन्नत का बागीचा। यहाँ
किसी विशेष स्थान के
लिए प्रयुक्त हुआ है

गुलरेज़ होना=फूल भड़ना

गुरबत=मुसाफ़िरी

गैब के गंज=छिपे हुए खजाने

गौगा=शोर गुल

गौस=एक विशेष प्रकार के सन्त

च

चमामें=जूते

चहल दिन=चालीस दिन

चंचल दहन=चंचलता को दूर करनेवाली

चौफीर=चौफेर; चारों तरफ़

ज

जका=जगा; जागृत कर

जम=हमेशा

जलालत=बुजुर्गी

जबत तल=ज़ाप्ते के नीचे; क़ानून या
शासन के अन्दर

जफ़ा=मुसीबत

जहाँ जानियाँ=संसार के जीवन का
स्वामी; खुदा

ज़र्द=मार

ज़फ़र=जीत

ज़रीना=सोने का

ज़रबफ़्त=ज़रीदार कपड़ा

ज़मीर=दिल

ज़ंगी-हब्शी

ज़ंगन=ज़ंगी (हब्शी) का स्त्रीलिंग

ज़िरो=दवाक'; यह शब्द फ़ारसी के ज़ेर
करदन' धातु से बना है।

ज़िउडा=जीव; जान

ज़िन्स=बजह; कारण

ज़ियाफ़्त उपर ज़ियाफ़्त करना=अत्यधिक
आतिथ्य करना

ज़िश्तों=(ज़िश्त का बहुवचन) बदसूरत

ज़ुफ़्त होना=मिलना

ज़ुल्मात=वह स्थान; जहाँ हमेशा अँधेरा
रहता है।

ज़ुहल=ग्रह विशेष; शनिश्चर

ज़ोहल=एक मनहूस समझ जानेवाला
सितारा

ज़ोहरा न होना=मजाल न होना

ज़ौलान देना=घोड़े को ँड़ लगाना

झ

भूक भूक कर=परेशान हो होकर

ट

टाक आना=मुक्काविले में ठहरना

ड

डोगरों=क़िला; घाटी

त

तक्कसीर=शल्ती

तक्कवा=ताक़त

तक्की=परहेज़गार

तख्त=तड़कना; फटना
 तगव्यीर होना=बदलना
 तगवगी=बेचैनी
 तगटे=शाल दुशाले
 तजल्ली=नूर; चमक
 तदाते=तदा ते; उस समय से
 तफ़हुस=(अरबी) खोज
 तबर=कुल्हाड़ी
 तरावत=तरावट
 तराट उठना=बज उठना
 तशरीफ़=बादशाह की ओर से इनाम
 के रूप में प्राप्त लिबास
 तलमल होना=घबराना
 तवक्क़ल=(अरबी) भरोसा
 तहय्यात=दुआ के शब्द
 तहसील करना=प्राप्त करना
 तालिवाँ=ढूँढ़नेवाले
 तालेक़वी=बड़ी किस्मत
 तिर्जग=त्रिजग; तीनों लोक
 तुज=तुझ; तुम्हारे
 तुन्द होना=(फ़ारसी) गुस्से में आना
 तुनक तार होना=तार जैसा दुबला
 पतला होना
 तूर=एक विशेष पहाड़; जिस पर खुदा ने
 अपना नूर गिराया; जिसे देख
 'मूसा' बेहोश हो गए

थ

थोबड़ा=जबड़ा

द

दन्दे=द्वन्द रखनेवाले; दुश्मन
 दबीर=मुन्शी; लेखक
 दम पकड़ना=सब्र करना
 दरहम होना=गुस्से में आना, तितर-
 बितर होना

दरेरो सँ=रंज और ग़म से
 दरियाए कुलजुम=लाल समुद्र
 दर्मन=दवा
 दाट=(मराठी) अत्यन्त अधिकता से
 दाना पानी सटना=भूख-प्यास बन्द होना
 दानिशवरी=अक़लमन्दी
 दार=द्वार
 दावरी=बादशाहत
 दिपाना=दीप्त करना; प्रकाशित करना
 दिलगीर=रंजीदा; दुखी
 दिल को जमा रखना=मन को चैन से रखना
 दिल को उताले के हात देना=उतावला
 होना; बेचैन होना
 दिवाल पाया=एक योनि विशेष; जिनके
 हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं
 ये ज़मीन पर सरकते या लुढ़कते
 हुए चलते हैं।

दीस=दिवस; दिन

दुंवाल=पीछे; साथ

दुराही=दुक़ूमत

दुरूनी में=भीतर ही भीतर

दुर्ज=रत्न रखने की डिबिया

देवतियाँ=दीवट

दोतारा=एक दो तारोंवाला बाजा विशेष

दोस्त दाराँ-साथी मित्र

ध

धरतरी=धरित्री; पृथ्वी

धाइया=दौड़ा

धावँ=धाम; घर

धुन्दना=ढूँढ़ना

धुलाराब=वंडर

न

नब्याँ=नबी का बहुवचन

नवल आसिम=मिश्र के बादशाह का नाम

नवल लाल=सुन्दर; यहाँ पर इमाम हुसेन
के लिए प्रयुक्त है

न्हटना=भागना

न्हासना=भागना

नामो=पत्र

निभाना=गौर से देखना

निढाल होना=शक्तिहीन होना

निदा=नाद; शब्द

निहंगो=मगर; पानी का एक जानवर

नीश=नश्वर

नुकुल=शराब पीते समय खाने के लिए
इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ें

जुजुग्यो=ज्योतिषी

नुसरत=खुदा की मेहबानी

नेकोकार=अच्छा काम करनेवाला

नेरवा नावें=अच्छा नाम

नेट=दोस्त

नौ गढ़=इस्लाम के अनुसार आलमान के
६ खण्ड

नौबतों=बारी बारी से

प

पछुन्या=पहचाना

पड़ लका=लका से भी और आगे

पतियाना=भरोसा करना, विश्वास करना

पनज=पैदाइश में

पन्त=पन्थ, रास्ता

पया पै=लगातार

परधान=प्रधान

परा=परी का पुरुषवाची शब्द

पशेमान होना=परेशान होना

प्रागाह=अस्तबल

पाई भा=(मराठी) निकालना

पारचा=पैपड़ा

पिनान=पिन्हाय, पहना कर

पिन्हा=अप्रत्यक्ष

पेच के मारकाँ=मुसीबतों की लड़ाई

पोथे=पर से

फ

फ़गफूर=चीन का बादशाह

फ़जीलत=बुजुर्गी, महत्व

फ़रह बरूश=खुशी देनेवाला

फ़रह के घरों=खुशी के घर, अत्यन्त खुशी
देनेवाले

फ़रंग्यो=तलवार

फ़रगदाज़=सिपाही

फ़रामोश करना=भूल जाना

फ़राख=चौड़े

फ़रियाद रस=बुदा

फ़साहत=शायरी

फ़ाड़=पहाड़

फ़ाल=जन्म पत्री

फ़ामना=ज्ञात करना

फ़ितने के मूँदे किवाड़ खोलता=लड़ाई
भगड़ के बन्द दरवाज़े खोलना,

लड़ाई शुरू करना

फ़िरासत=बुद्धिमान

फ़ुरसत लेना=जाने की आशा लेना

फ़ैज़=कृपा

ब

बख़्तवर=भाग्यवान

बजन्तर=विभिन्न प्रकार के बाजे

बजों=बादअज़ों (फ़ारसी); उसके बाद

बज़िद=कोशिश के साथ

बज्म=सभा

बन्दा नवाज़=दक्षिण के एक बड़े फ़कीर;

जिनकी समाधि गुलबर्गा

में है

बन्दगी का खत देना=गुलामी करना

बरश गाल=वर्षा काल
 बर जमीं=जमीन पर
 बरहम होना=क्रोध में आना
 बलन्द धावें=ऊँचा धाम; ऊँची जगह; मन
 की ऊँची स्थिति

बशर=आदमी
 बस्त=वस्तु; चीज़
 बहरोबर=समुद्र व पृथ्वी
 बहुराना=लौहाना
 बाँ=बाण; तीर
 बाग=बाघ; शेर
 बाग के वर्ग का=बाघ के वर्ग का; शेर
 की तरह बहादुर

बाट सारू होना=रास्ता तय करना
 बादपा=तेज़ घोड़ा
 बाँदर के धात=बन्दरों की तरह
 बदिये=मशक़; चमड़े का थैला; जिससे
 भिस्ती पानी भरते हैं

बारा=हवा
 बाव भया=वायु चली; हवा बही
 बुरगामौं=एक खास तरह का बाजा, जिसकी
 आवाज़ बड़ी तेज़ होती है

बेगीकर=वेग से; शीघ्रता से
 बेबदल=जिसकी बराबरी का कोई न हो
 बैताँ=शेर; कविता

भ

भड़ज=भाड़ में; दुःख की आग में
 जलनेवाला

भरोसा सटना=आशा ख़तम होना
 भंगार=भीषण शब्द
 भंजन=भंजन; टूटना; यहाँ दुःख दूर
 होने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है

भान=बहन
 भार=शक्ति; सेना

भार पड़=बाहर पड़; बाहर निकल
 भाये=रँभाये; गाय की तरह बोलना
 भाँच=कलश
 भोगुनी=बहुगुणी; अधिक गुणवाला
 भोत=बहुत

म

मकबूल=प्राप्ति; बहुत ही प्रसिद्ध
 मक़=मक़; धोखा
 मक्की=मक्का का रहनेवाला
 मक़सुद=उद्देश्य; इवाहिश
 मकबूल=सुन्दर
 मखा=मक्का
 मग़ज़=बादाम के भीतर का बीज
 मज़कूर होना=कहा जाना
 मजलिस भरना=दरबार या सभा में बैठना
 मजाज़ी=भूटा
 मता हो=मस्त हो
 मद्दह=तारीक़
 मंदीर=मन्दिर; महल
 मनें=में
 मनक़ेबत=फ़कीर और महात्माओं की
 तारीक़

मनौवर=रौशन
 म्याने म्यान=बीचो बीच
 मरगोलना=चहचहाना; पक्षियों का बोलना
 मलायक=फ़रिश्ते
 मरातिब=मर्तबा; शान
 मरग़ज़ार=चरागाह
 मलूक=दुःखी
 मवाद=कहीं ऐसा न हो
 मसीहा=ईसा मसीह; इनके सम्बन्ध में
 विश्वास है कि ये मुदों को जीवित
 करते थे
 मामूर=आबाद; भरा हुआ

मावली=बूढ़ी औरत
 माह=चाँद
 माहूरुयाँ=चन्द्रमा के समान सुन्दर स्त्रियाँ
 माहियाँ=माही (फ़ारसी); मछली
 माँदा करना=थका देना
 माँदगी=थकावट
 मिनकार=(फ़ारसी); चोंच
 मुकल्लल ज़रीनाँ=ज़री का काम किया
 हुआ कपड़ा
 मुक़बिलाँ=भक्त
 मुजर्रद=अकेला हो जाना
 मुंडी=सर
 मुरस्सा=हीरे जवाहिरात जुड़े हुए
 मुतरिबाना=मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले
 मुदाम=सर्वदा
 मुद्दुआ=अभिलाषा
 मुनाजात=प्रार्थना
 मुन्तदी=जिसने किसी काम को सीखना
 प्रारंभ किया हो
 मुन्तही=पारंगत; जिसने किसी काम को
 अच्छी तरह सीख लिया हो
 मुरसिल=रसूल; खुदा का सदेश पहुँ-
 चानेवाला
 मुवल्लक=लटका हुआ
 मुरतरी=एक तारा विशेष; जो बहुत ही
 चमकदार
 मुही उद्दीनियाँ=मुहीउद्दीन के अनुगामी
 मेराज=यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब
 खुदा के पास गए और सातों
 आसमान की सैर करके वापिस
 आ गए। मुहम्मद साहब का
 यह पूरा काम 'मेराज' कहलाता है
 मेहतरों=भेड़ें, लोग
 मेह्र=सूर्य; प्रेम

मोअम्मा=समस्या; कठिनाई
 मोअत्रत दिल=सम शीतोष्ण जलवायु
 मौज=लहर
 मौजज्याँ=करामात
 य
 याकूत=लाल रंग का हीरा
 र
 रज़्म=लड़ाई
 रयन=रैन; रात
 रग=उच्चित
 रावे=रव करें; बोले
 रीश=जल्म
 रुखसार=गाल
 रुच साजना=रुचि के साथ सजाना
 रेवाज=इज्जत
 रोशन ज़मीर=दिल की बातों को जाननेवाले
 रौज़न=सुराख
 रौशन सिफ़ात=विशेषताएँ रखनेवाला
 ल
 लसड़ी-रस्सी
 लौह=स्लेट
 व
 वजाहत=ऊपर देखने से
 वॉलग=वहाँ तक
 विते=उतने ही
 विर्द=विरुद, यश
 वैताग भेस=ऐसा वेश या ढङ्ग जो
 मुसीबतों से भरा हुआ है।
 श
 शगुफ़ता किया=खुश किया
 शहाद=एक बादशाह का नाम, जिसने
 दुनियाँ में जन्नत बनाई थी।
 शफ़क़=प्रातः एवं सायंकालीन आकाश
 की लालिमा

शक्रकृत=मेहरबानी
 शहपाल=एक बादशाह का नाम
 शहरेयार=बादशाह
 शादमानी=खुशी
 शादमानी सटना=खुशी समाप्त होना
 शाहिद=गवाह
 शिगाल=(फारसी) भेड़िया
 शिताब=जल्दी
 शिद्दत=मुसीबत
 शुजाअत=बहादुरी

स

सकसार=आदमी का हाथ पैर रखनेवाली
 और कुत्तो का मुँह रखनेवाली
 योनि विशेष

सके=मिश्ती
 सगल=(मराठी) सब
 सड़ी बोई=बदबू
 सट्टे=फैंक दुँ
 सना=तारीफ़
 सफ़ा दरसफ़ा=क़तार की क़तार
 सफ़ादार=साफ़ सुथरा
 समर=नतीजा
 समदूर=समुद्र
 सरगुरू=बड़ा दर्जा रखनेवाले
 सरांदील=सिंहल, लंका
 सरे=मुनासिब, उचित
 सर्वे आज़ाद=(फारसी) आशिक़
 सहरगाह=सुबह का समय
 संगतन=सखी
 संपड़ना=(मराठी) प्राप्त होना
 सात=साअस (अरबी) समय
 सारफ़ी=सरीखी, समान
 साह्य ज़माल=बहुत ही खूब सूरत
 सिद्ध सात=सच्चे दिल से

सिर ते साफ़ी देना=नए सिर से साफ़
 करना

सिलहदार=सन्तरी, पहरेदार
 सिरते=नए सिर से
 सुगड़=सुन्दर
 सुते=सोये
 सुबुल्लो=एक विशेष प्रकार की घास, जो
 घुंघुराले बालों के समान
 होती है।

सुरय्या=एक तारे का नाम
 सुलक्खन=सुलक्षण, अच्छे लक्षणोंवाली
 सुलेमान=इस्लाम के एक पैग़म्बर,
 जिनका तख़्त बड़ा मशहूर
 है। कहा जाता है कि हज़रत
 सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन
 और परी उसे ले जाते थे
 क्योंकि वे उनकी रियाया थे।

सुर=चमक; खुशी
 सूरये यासीन=क़ुरान का एक अध्याय
 सूरत=वाक्य
 सूसना=सहना; बर्दाश्त करना
 सेह=जादू
 सो रात करना=लालच में आना
 सौरात=ख़्वाहिश

ह

हक़ यावरी=सच्ची मदद
 हत्ती=हाथी
 हठीला=हठीला
 हम्द=ईश्वर की स्तुति
 हमायल नमन=हार के जैसा
 हर तरीक़=हर तरह
 हयात=जीवन
 हल्का होना=चारों तरफ़ से घेरा डालना
 हशम=शान शौक़त वाले

हाजिब=दूत

हात पाँव कलाना=हाथ पाँव चलाना;

कोशिश करना

हाथ दौड़ाना=हाथ चलाना

हाँड़ी पकाना=खयाली पुलाव पकाना;

अत्यधिक कल्पनाएँ करना

हिजाबत=संदेश

हुचकरना=हेच करना: नीचा दिखाना

हुवेदा=प्रकट होना

हेजदा हज़ार=अठारह हज़ार

हैबक्र ज़दा होना=बहुत अधिक डरना

होड़ी=नाव

हौलनाक तफ़रका=दुःखदायी अलगाव

